आरोपनामा

–: लेखक :–

वर्धमानतपोनिधि सघहितचिन्तक स्व. गच्छाधिपति पूज्यपाद
आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वरजी महाराज के
शिष्यरत्न साधुसेवातत्पर, स्वाध्यायप्रेमी
स्व. पूज्यपाद मुनिराज श्री देवसुन्दरविजयजी महाराज के
शिष्यरत्न पूज्यपाद आचार्य भगवत
श्रीमद् विजय रत्नसुंदरसूरीश्वरजी महाराज

६

प्रकाशक
रत्नत्रयी ट्रस्ट
कल्पेश वि. शाह
१४, इलोरापार्क सोसायटी, नारणपुरा चार रस्ता के पास,
देरासर के सामने, नारणपुरा, अहमदाबाद – ३८० ०१३
फोन : २७६८०७४६, २७५४०२९७
E-mail : rttamd@eth net
(दोपहर : १२ से ७)

प्राप्तिस्थान

१ रत्नत्रयी ट्रस्ट
प्रवीणकुमार दोशी
२५८, गाधी गली, स्वदेशी मार्केट,
कालवादेवी रोड़, मुबई – ४०० ००२
फोन २२०६०८२६ (दोपहर १२ से ७)

२ भरत–हरेश
C/o लेवेन लॅबोरेटरीज् प्रा लि
एल–४, फेज–३, एम् आय डी सी
अकोला – ४४४ १०४ (महाराष्ट्र)
फोन ओ (०७२४) २२५८३२८,
निवास २४३ १९७०,
मोबाईल ९८२३० ४१५९५

३ श्री किशोरभाई विकम
अलकार लेडिज डिपार्टमेन्ट
६१५, लक्ष्मी रोड, पुणे – ४११ ०३०
फोन ओ २४४५५५१९, घर २४४५३२८४

४ श्री प्रवीण जैन
'यतना', ५५न/१०५ अश्विन सेक्टर,
हरगगा होटल के पीछे,न्यू सिडको
सिम्बोसिस स्कूल के पास, नासिक
फोन ओ २४१४७००, घर २४११७००

५ सोमनाथ राठी
C/o अनमोल सेल्स कोर्पोरेशन,
अभ्यकर टावर्स, एम जी रोड, नासिक
फोन (०२५३) २३३९४४४, २३१६६४१

6 Rajesh Kothari
C/o Nidhi Sales,
Shop No 80,Ground Floor,
Golani Market, Jalgaon - 425 001
Cell 94222-82267
Ph (0257)2237567

७. महावीर घोपरा
श्री निवास ज्वेलर्स, आग्रा रोड,
एस टी डेपो के सामने,
पीपलगाँव (बसवत) – ४२२ २०९
फोन (०२५५०) २५१२५१, २५३१५१

८ श्रीमान घदुभाई शाह
C/o विकसित प्रिन्टर्स, इ–१३१९,
ग्राउन्ड फ्लोर,सुरत टेक्षटाइल मार्केट, रीग रोड,
सुरत – ३९५ ००२ (मो) ९८२५९ ६५४०१

९ नरेन्द्रकुमार सुराना
सुराना पेलेस २३, जी डी सी रोड,
दशहरा मैदान, उज्जैन – ४५६ ०१०
फोन २५३००४५/४७,
मोबाईल ९४२५०-९२५३०

10 Jayeshbhai Desai
C/o H M Shah & Co ,
9 - Telgali, Siyagunj,
Indore - 452 007 Ph (O) 2535363,
Cell 094250 -82819

११ श्रीमान नीतिन दुग्गड
C/o जी सी एल शेर ब्रोकर लि
१९६८, शीश महल, किनारी बाजार,
दिल्ही – ११० ००६ फोन २३२७११४५,
२३२६३५२३, २३२५५४५६, २३२५५४५९

12 Jayantilal R Rathod
K K Electricals,
21, Reddy Raman Street,
Chennai - 600 079 (T N)
Ph (R) 25294624 (O) 25385500

13 Ashok Sanghvi
C/o Hira Textiles
Ambica Cloth Market,
1st Floor, 70, D K Lane, Chickpet,
Banglore - 560 053
Ph (O) 22261824

१४ अजयकुमार मूणत
C/o सघवी स्टोर्स, पुराना वस स्टेन्ड,
जिला–देवास (म प्र) ४५५००१
फोन ०७२७२–२२२९९६,
(मो) ९८२७०–१५४२२

मुद्रक :
शार्प ऑफसेट प्रिन्टर्स
३१२, हीरा पन्ना कॉम्प्लेक्स
डॉ याज्ञिक रोड, राजकोट–३६० ००१
फोन २४६८४६१, मोबाईल : ९८२५०–७५०६१
अहमदाबाद फोन २५६३१४४४

प्रथम आवृत्ति प्रति : २०००
द्वितीय आवृत्ति प्रति : ३०००
तृतिय आवृत्ति प्रति : ३०००
दिनांक : १–३–२००६
मूल्य : ४०.००

मेरा इशारा चन्द्र की और है।

स्वयं के पास रुमाल होने पर भी
औरो की आँखो मे से वहते हुए आँसू
न पोछनेवाले का यदि हम
निष्ठुर कहते है, तो
औरो को आँसू बहाने ही न पडे,
ऐसी ताकत स्वय के पास होते हुए भी
जो व्यक्ति इस ताकत को इस्तेमाल ही न करे और
इसी कारण से उन्हे आँसू वहाने पडे, तो
ऐसे व्यक्ति को हम क्या कहेगे ?

अनेक प्रकार की गदगी, अपराघो, छल–प्रपच व साजिशो से घिरी वर्तमान राजनीति को इतनी निचली हद तक पहुँचाने मे परोक्ष रुप से भी सज्जनो की निष्क्रियता का कोई कम हाथ नही।

मै अच्छी तरह से जानता हूँ कि राजनीति की इस गदगी मे हाथ डालना शायद गटर मे इत्र की वूद डालने जैसा वालिशता प्रयास है। फिर भी मुझे चमत्कार में विश्वास है। सज्जनता की प्रचड ताकत पर मुझे श्रद्धा है कौरवो के विराट संख्यावल के सामने यदि अल्पसंख्यक पांडव जीत सकते हो, रावण के दस मस्तक (?) के सामने एक मस्तकवाले रामचन्द्रजी जीत सकते हो, तो दुर्जनता से व्याप्त राजनीति में सज्जनों की सज्जनता जीत ही नही सकती, ऐसा मानना उचित है।

ऐसी ही श्रद्धा, विश्वास व निष्ठा से मैने इस पुस्तक का लेखन किया है हो सकता है कि मेरे ही विधानो मे कही विरोधाभास दिखता हो, हो सकता है कि पुस्तक मे किये गये कुछ सूचन व्यवहारु न भी लगते हो, हो सकता है कि राजनीतिज्ञो की जालिम कुटिलता को मै समझ नही पाया होऊँ, फिर भी मै कहता हूँ कि आग से जलते हुए मकान पर चाहे–जैसे पानी डालो, कोई नुकसान नही, वल्कि लाभ ही है, इसी प्रकार देश के समस्त प्रजाजनो के संस्करण, शील, सदाचार की भव्य इमारत पर आग लगाने वैठे हुए राजनीतियो की इस चालवाजी को निष्फल वनाने के लिये मेरे द्वारा किये गये विधानो से शायद लाभ न हो, फिर भी नुकसान तो नही ही होगा, ऐसा मुझे दृढ विश्वास है।

सक्षेप में, पाठको से मैं इतना ही कहूँगा कि मेरा इशारा चन्द्र की ओर है...इशारा करनेवाले की अंगूली काली है या गोरी ? टेढी है या सीधी ? इसकी चर्चा न करके आप सिर्फ चन्द्र की ओर देखेंगे, तो मैं मानूँगा कि मेरा यह लेखन का प्रयास सार्थक हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक में जिनाज्ञा से विरुद्ध कुछ भी लिख दिया गया हो, तो मन–वचन–काया से क्षमा चाहता हूँ।

–आचार्य विजय रत्नसुंदरसूरि

सद्बुद्धि, समाधि एवं सदाचार की ज्योति जगानेवाला दीपक

क्या आप अपने जीवन की बिगडी हुई बाजी को सुधारना चाहते हैं ? क्या आप अपने निराशा और नीरसता के अंधेरे से व्याप्त जीवन को आशा, आनंद, उत्साह और श्रद्धा के उजाले से भरना चाहते हैं ? तो सुनिये, हमारी बात। सिर्फ चार हजार रुपए भरकर आप चार करोड ही नहीं, अपना जीवन बचा सकते हैं और उसे अनमोल बना सकते हैं। **सरस्वतीलब्धप्रसाद, विपुलसाहित्यसर्जक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा लिखित साहित्य की आज ही आजीवन सदस्यता प्राप्त करके जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान प्राप्त करें।**

एक ऐसा स्वस्थ एवं मस्त साहित्य, जिसने लाखों गिरते हुओं को संभाला है, टूटे दिलों को हिम्मत दी है, सोतों को जगाया है, पापियों को पावन बनाया है, बिखरते हुए परिवारों को जोडा है। सिर्फ एक बार रू. ४०००/- जमा कर, हिन्दी साहित्य के आजीवन सदस्य बन जाईये। प.पू. आचार्यश्री द्वारा लिखित पुस्तकें हमेशा आपके घर पहुंचती रहेंगी।

द. रत्नत्रयी ट्रस्ट

(चेक, ड्राफ्ट अथवा रोकडे निम्नलिखित पते पर भेजियेगा।)

रत्नत्रयी ट्रस्ट
कल्पेश वि. शाह
१४, इलोरापार्क सोसायटी,
नारणपुरा चार रस्ता के पास,
देरासर के सामने, नारणपुरा,
अहमदाबाद - ३८० ०१३
फोन : २७६८०७४६. २७५४०२९७
(दोपहर : १२ से ७)
E-mail rttamd@eth net

रत्नत्रयी ट्रस्ट
प्रवीणकुमार दोशी
२५८, गाधी गली,
स्वदेशी मार्केट,
कालवादेवी रोड,
मुंबई - ४०० ००२
फोन : २२०६०८२६
(दोपहर ·१२ से ७)

हिन्दी–साहित्य के पाठकों के लिए शुभ समाचार

न्याय विशारद, वर्धमानतपोनिधि परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य सरस्वतीलब्धप्रसाद, विपुल साहित्य सर्जक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा लिखित साहित्य से हिन्दीभाषी पाठक भी लाभान्वित हो सके, इस आशय से ट्रस्टने १,०००/– रु. की स्कीम प्रारभ की थी।

सभी सदस्यों को १,०००/– रु. की पुस्तके भिजवाई गयीं। यह स्कीम जारी रखने के लिए पाठकों के अनुरोध से ट्रस्ट ने दुबारा १,०००/– रु. की स्कीम निश्चित की है।

अब आपको यह जानकर खुशी होगी की हिन्दी साहित्यप्रेमियों की मांग को लक्ष्य में रखकर ट्रस्ट ने हिन्दी साहित्य की आजीवन सदस्यता की ४,०००/– रु की स्कीम भी निश्चित की है। अत: जिन सदस्यों ने दुबारा १,०००/– रु. जमा किये हैं, उन्हें आजीवन सदस्यता के लिए अब केवल ३,०००/– का डी.डी. अहमदाबाद या मुंबई के ऑफिस के पते पर भेजना होगा।

दूसरी बार जमा किये गये १,०००/– रु. की रसीद की ज़ेरॉक्स कॉपी ३,०००/– के डी.डी. के साथ भेजना अनिवार्य है।

नोट : जो महानुभाव आजीवन सदस्यता की स्कीम में शामिल नही होना चाहते, उनके लिए १,०००/– रु. की स्कीम जारी रहगी।

द. रत्नत्रयी ट्रस्ट

आज ही मंगवाईये

१. दो कदम विस्मरण से स्मरण की ओर : ३०.००

सूर्य के प्रकाश के माहात्म्य को समझने के लिये आँख खुली होनी जरुरी है, करुणा के अधिकारी बनने के लिये हृदय कृतज्ञता से पूर्ण होना अत्यन्त जरुरी है। परमात्मा के उपकारो को तो हम शायद समझे है, गुरुदेव के उपकारों को हमने शायद स्वीकारा है, परतु मॉ-बाप के उपकारो को हम समझे है या नही, इसमे शंका है। आँख से बहते हुए आँसुओ को पोछने के लिये हाथ मे रुमाल रखने के लिए मजबूर करनेवाली, पश्चात्ताप की पावन गंगा में डुबकी लगाने के लिए हृदय को तैयार करनेवाली यह पुस्तक एक बार हाथ मे लीजिये। आप एकदम हल्के होकर ही रहेगे।

२. प्रेम की मीठी नज़र, मिटे द्वेष का ज़हर : ३०.००

कुत्ता काटने से शरीर मे प्रविष्ट हुए जहर से मुक्त होने के लिये शायद एकाध इजेक्शन ही पर्याप्त है। सर्प के डंसने से शरीर मे फैले जहर से मुक्त होने के लिये शायद गारुडी का एकाध मत्र ही काफी है, परन्तु अनन्त काल से हृदय में मजबूती से जड जमा बैठे जीवों के प्रति द्वेष के जहर से हृदय को मुक्त करने के लिये जबरदस्त जग खेलना होगा अहं, अपेक्षा और आसक्ति की खतरनाक त्रिपुटी के सामने। कैसे खेला जाय यह जंग और कैसे विजय हासिल की जाय, इस जंग में. ऐसे अनेको उपाय दर्शानेवाली पुस्तक है प्रेम की मीठी नज़र, मिटे द्वेष का ज़हर।

३. नया दिन नई दिशा : १२०.००

बरसों तक चलनेवाला ३८४ पन्ने का अत्यत आकर्षक टेबल केलेन्डर।

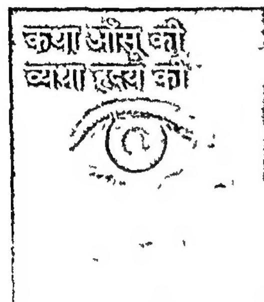
४. पवन ! तू अपनी दिशा बदल ले : ४०.००

दूषित पानी और दूषित अन्न से भी अधिक खतरनाक हैं-दूषित विचार और दूषित विचारो से भी अधिक भयंकर है-ऐसे विचारों को जन्म देनेवाले दूषित दृष्टिकोण। दूषित दृष्टिकोणो का शिकार बन चुके आज के प्रचार माध्यमों के उन दूषित दृष्टिकोणो पर प्रहार करनेवाली तथा सम्यक् दृष्टिकोणों की जबरदस्त हिमायत करनेवाली पुस्तक अर्थात् 'पवन ! तू अपनी दिशा बदल ले।'



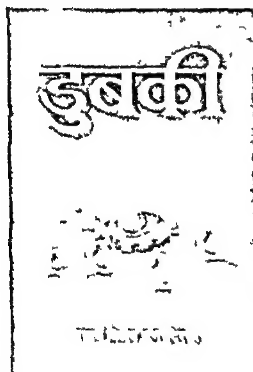
५. याद रहेगा इन्दौर : ७०.००

प्रश्न चावी का नही, परतु वह किस ओर घुमाई जाती है, उसका है। चावी को यदि ताले मे एक ओर घुमाया जाए तो ताला वद हो जाता है और यदि दूसरी ओर घुमाया जाए तो वद पडा ताला खुल जाता है। विचार, वचन और व्यवहार की चावी को सम्यक् दिशा की ओर घुमाकर जिन पुण्यात्माओ ने अपने साधना-समाधि और सद्गति के वद पडे ताले को खोलने के भव्य प्रयास किए है उन पुण्यात्माओ के पराक्रमों की यशोगाथा का वर्णन करनेवाली पुस्तक अर्थात् 'याद रहेगा इन्दौर'



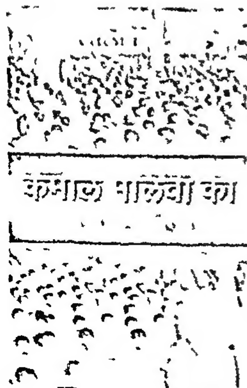
६. कथा आँसू की, व्यथा हृदय की : ५०.००

होठ काँप उठे, पाँव थम जाये, सर चकरा जाये, जीभ गूगी हो जाये, हृदय की धडकने थम जायें, ऐसी अत्यन्त दु खद परिस्थिति मे भी धर्मसत्ता की शरण लेने वाले धर्मवीर कैसी शूरवीरता दिखा सकते है, कर्मसत्ता को कैसी जाँवाजी से चुनौती दे सकते है, यह जानने के लिए यह पुस्तक आप हाथ मे लीजिए। हाँ, जव आप यह पुस्तक हाथ मे ले, तव आँसू पोछने के लिए एक रुमाल भी हाथ मे रखना मत भूलिए।



७. डुबकी : ३०.००

कचरे को प्राप्त करने के लिए सागर मे डुवकी लगाने की कोई आवश्यकता नही पडती। जवकि, डुबकी लगाये विना सागर के तल मे छिपे मोती दिखाई तक नही देते तो उन्हे प्राप्त करने का तो सवाल ही कहाँ पैदा होता है ? जीवन मे और जगत् मे घटित होने वाले भाँति-भाँति के प्रसगो की गहराई मे गए विना उन प्रसगो मे छिपी महानता, अधमता, तुच्छता या गंभीरता को हम समझ तक नही पाते तो उस दिशा मे प्रवृत्त-निवृत्त होने के लिए प्रयत्नशील बनने का सवाल ही कहाँ पैदा होता है ? कैसे पहुँचा जा सकता है उन प्रसगो की गहराइयो तक, इसकी युक्तियो का अनोखा चित्रण प्रस्तुत करने वाली पुस्तक अर्थात् "डुवकी"



८. कमाल मालवा का : ४०.००

सतो का वर्षो का विचरण आत्मभूमि को कैसा कोमल वना देता है यह मेरे विचरणकाल के दौरान मैने अपनी आँखो से देखा-जाना-महसूस किया और उन सभी प्रसगो को इस पुस्तक मे संकलित किया, शब्दस्थ किया है । ये प्रसग रतलाम-इन्दौर-आगर-जावरा-उज्जैन-देवास-मुद्लाय-नामली-याढकुमेद आदि अलग-अलग क्षेत्रों में घटित हुए है।

ગુજરાતી સાહિત્ય

લખી રાખો આરસની તકતી પર - કિંમત : ૩૦.૦૦

ઝેર જ્યારે નીતરી જાય છે - કિંમત : ૩૦ ૦૦

પ્રભુ વીર કહે છે - કિંમત : ૧૫૦.૦૦ (પોસ્ટેજ અલગ)

યાદ રહેશે ઈન્દૌર - કિંમત . ૭૦ ૦૦

દીવાલ જ્યારે તૂટી જાય છે - કિંમત ' ૩૦ ૦૦

તિજોરી - કિંમત : ૩૦ ૦૦

ડૂબકી - કિંમત . ૩૦.૦૦

અંગ્રેજી સાહિત્ય

PATHWAY TO PARADISE - Rs. 40 00

A NEW DAY A NEW HOPE - Rs 120.00

CAUTION' DANGER AHEAD - Rs 40 00

FIGHT TO FINISH - Rs 40.00

સિંધી સાહિત્ય

जिन जे लाइ मुआसीं से कांधी बि न बणिया - किंमत ' ३०.००

('લખી રાખો આરસની તકતી પર' નો સિંધી ભાવાનુવાદ)

टक्राउ न पर्चाउ - किंमत ३० ००

('સહેજ થોભી જજો' નો સિંધી ભાવાનુવાદ)

તમિલ સાહિત્ય

இதயத்தை செதுக்கிவிடு

அன்பை அள்ளித்தந்துவிடு - Rs. 30.00

('લખી રાખો આરસની તકતી પર' નો તમિલ ભાવાનુવાદ)

મરાઠી સાહિત્ય

मनाच्या आरश्यावर कोरून ठेवा – किंमत : ३०.००

विष जेव्हा उतरते तेव्हा – किंमत : ३०.००

सावधान ! हा मार्ग घातक आहे – किमत : ३०.००

शुभ समाचार – किंमत : ४०.००

आरोपनामा – किंमत : ३०.००

विश्रांतीस्थान – किंमत : ३०.००

काटयांची झुंज – किंमत : ३०.००

ઊર્દૂ સાહિત્ય

نقش کو لیجئے
آئینۂ دل پر - Rs 30 00

('લખી રાખો આરસની તકતી પર' નો ઊર્દૂ ભાવાનુવાદ)

اجتماعی
خودکشی - Rs 30 00

('સામૂહિક આપઘાત' નો ઊર્દૂ ભાવાનુવાદ)

કન્નડ સાહિત્ય

ಮರವೆಯಿಂದ ಅರಿವಿನೆಡೆಗೆ
ಎರಡು ಹೆಜ್ಜೆ - Rs 40 00

('લખી રાખો આરસની તકતી પર' નો કન્નડ ભાવાનુવાદ)

प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की सूचि

- ❖ पानुं फरे दीलडुं ठरे
- आरोपनामा
- ❖ लक्ष्मण रेखा
- ❖ मैं मजे में हूँ
- ❖ कहीं धूप कही छॉव
- ❖ भगवान महावीर कहते हैं
- मुस्कान भरी मृत्यु
- ❖ कुर्यात् सदा मंगलम्
- ❖ सावधान ! यह मार्ग घातक है
- ❖ संभलके
- ❖ ऑख है, पंख है, उडने में क्या देर है ?
- ❖ नया दिन नई दिशा
- ❖ सामुहिक आत्महत्या
- ❖ वीर मधुर तेरी वाणी
- ❖ शुभ समाचार
- ❖ इनकार में दु:ख, स्वीकार में सुख
- ❖ कहीं रुको कभी रुको
- ❖ यह मुंबई है
- दो कदम विस्मरण से स्मरण की ओर
- प्रेम की मीठी नजर, मिटे द्वेष का जहर
- ❖ मृग तृष्णा
- मेरा जीवन सुगंधित बने
- टकराव नहीं समझौता
- ❖ मजिल दूर नही
- ❖ विश्रामस्थल
- ❖ मंदी में भी मस्ती
- ❖ कमाल
- ❖ तुम ही हो मेरे प्रीतम
- मुझे भी कुछ कहना है
- ❖ काँटे की टक्कर
- ❖ प्रेममयी पत्रमाला
- ❖ समझ की सृष्टि विवेक की पुष्टि
- ❖ दीवार जब टूट जाती है
- ❖ हीरा–मोती
- याद रहेगा इन्दौर
- ❖ सात लडियो का हार
- कथा आँसू की, व्यथा ह्दय की
- पवन ! तू अपनी दिशा वदल ले
- निमत्रण की सफलता नियंत्रण मे
- ❖ बचकर रहना
- तिजोरी
- डुबकी
- कमाल मालवा का
- ❖ ये पुस्तकें अप्राप्य हैं।

जिन दो पुस्तकों ने सैकडों–हजारों व शायद लाखों परिवारों में
प्रेम–प्रसन्नता–पवित्रता के वातावरण का सर्जन किया है,
उन दोनों पुस्तकों की विकासयात्रा का ब्यौरा

ભાષા	નામ	આવૃત્તિ	નકલ
ગુજરાતી	લખી રાખો આરસની તકતી પર	૨૮	૧,૭૨,૦૦૦
હિન્દી	दो कदम विस्मरण से स्मरण की ओर	૧૬	૬૩,૦૦૦
મરાઠી	मनाच्या आरश्यावर कोरून ठेवा	૫	૧૩,૫૦૦
અંગ્રેજી	Carve It On Your Heart	૪	૮,૫૦૦
ઉર્દૂ	نقش کر لیجئے آئینۂ دل پر	૩	૭,૦૦૦
સિંધી	जिन जे लाइ मुआसी से कांधी बि न बणिया	૨	૫,૦૦૦
તમિલ	இதயத்தை செதுக்கிவிடு அன்பை அள்ளித்தந்துவிடு	૧	૨,૦૦૦
કન્નડ	ಮರವೆಯಿಂದ ಅರಿವಿನೆಡೆಗೆ ಎರಡು ಹೆಜ್ಜೆ	૧	૩,૦૦૦
બંગાળી	এটা তোমার হৃদয়ে খোদাই করে রাখো	૧	૩,૦૦૦
		કુલ નકલ	૨,૭૭,૦૦૦
ગુજરાતી	ઝેર જ્યારે નીતરી જાય છે	૧૬	૧,૧૦,૦૦૦
હિન્દી	प्रेम की मीठी नजर मिटे द्वेष का जहर	૧૩	૪૪,૫૦૦
મરાઠી	विष जेव्हा उतरते तेव्हा	૩	૬,૦૦૦
અંગ્રેજી	Sweeten Your Heart	૧	૩,૦૦૦
		કુલ નકલ	૧,૬૩,૫૦૦

ये दोनों पुस्तकें आज ही खरीद लीजिए। यदि नहीं पढी हों,
तो पढ लीजिए – आप अद्भुत प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

द.

रत्नत्रयी ट्रस्ट का अद्भूत प्रकाशन

''मैं क्या हूँ ?''

''मैं कहाँ हूँ ?''

यह दो प्रश्नो का सही

उत्तर देनेवाला एक

मस्त प्रकाशन

यानि

'एक्स-रे'

लेखक : प.पू.आ.भ.

श्रीमद् विजय रत्नसुंदरसूरीश्वरजी महाराज

विमोचन : ता. ५/३/२००६, रविवार

१

महाराज साहेब,

पिछले दो साल से जिस स्कूल मे मै ट्रस्टी था,
कल ही, मैने उस पद से इस्तीफा दे दिया है ।
इस्तीफा देने के पीछे वैसे कोई खास कारण तो नही था ।
घरमे किसी का विरोध नही था .
धधे मे कोई प्रतिकूलता नही थी
स्वास्थ्य भी एकदम ठीक था,
लेकिन आप मेरा स्वभाव तो जानते ही है । मै गलत काम करता नही और गलत काम कही हो रहा हो, तो चलने नही देता ।
बस, मेरे इस स्वभाव ने ही मुझे तकलीफ मे डाल दिया ।
'बरसो से इस सस्था मे गडबड-घोटाले चलते थे ।
डोनेशन का दूषण तो सब सीमाये लाघ चुका था ।
भरपूर वेतन लेकर भी शिक्षक पढाते नही थे ।
विद्यार्थियो मे स्वेच्छाचार अत्यन्त बढ गया था ।'
पिछले दो सालो से इन दूषणो को
फैलने से रोकने मे मुझे अच्छी सफलता मिली थी ..
इस परिणाम से बहुजनवर्ग राजी था ।
परन्तु मेरे साथ कार्य करनेवाले ट्रस्टियो मे से एक ट्रस्टी महाशय जरा टेढे थे । इन सम्यक् बदलावो
से उनकी आमदनी पर जोरदार असर पडा था । रिश्वत मिलनी बन्द हो गयी थी ।
पहचानवालो को स्कूल मे प्रवेश दिलापाना
भी अब उनके लिये मुश्किल हो गया था । हार-थककर आखिर पूरा गुस्सा मुझ पर उतारने लगे । आये दिन मीटिगो मे मेरे साथ उलझने लगे । मेरे विरुद्ध एकदम तथ्यहीन बाते फैलाने लगे । मेरे चरित्र पर भी कीचड उछालने लगे, इस बेशर्मी की हद तक वे पहुँच गये । इस गंदी राजनीति से मै परेशान हो गया । एक तो नि स्वार्थ भाव से सेवा करनी, दूषण हटाने के लिये कईयो के साथ दुश्मनी मोल लेनी, अपने व्यवसाय मे से समय निकालकर यह प्रवृत्ति करनी और परिणाम-स्वरूप आखिर अपयश ही मिलता हो,'
'तो इससे बेहतर है कि यह स्थान ही छोड दूँ ।'

बस, पल-भर का भी विलब किये बिना
मैने राज़ीनामा लिखकर दे दिया और अभी-अभी स्कूल से फोन भी आ गया है कि
'आपका राजीनामा स्वीकार लिया गया है ।'
'मुझे तो एसा लगता है कि अब
ऐसे किसी भी क्षेत्र मे सज्जन मनुष्य का कोई काम नही ।'
गुडो की गली मे घुसे धनवान की जो बुरी हालत होती है,
वैसी ही बुरी हालत दुर्जनो के टोले के
बीच गये हुए सज्जन की होती है । मै आपसे यही पूछना चाहता हूँ कि इस पद से
इस्तीफ़ा देने का मेरा फैसला आपको कैसा लगा ?

चिन्तन,

गुंड़ों की गली में धनवान को नही जाना चाहिये, यह बात जितनी सही है, उतनी ही सही यह बात भी है कि गुंड़ो की गली मे साहसी पुलिस को स्वयं ही पहुँच जाना चाहिये ।

मै तुझे पहचानता हूँ । तेरा पुण्य विशिष्ट कोटि का है ।
तुझमे सज्जनता ठूस-ठूसकर भरी हुई है । सुन्दर रूप व युवावस्था होने के वावजूद तेरे जीवन की चादर निष्कलक है ।
तेरा बातचीत का तरीका भी आकर्षक है ।
एक नेता मे जो गुण होने चाहिये, वे तमाम गुण तुझमे मौजुद है । इसलिये ट्रस्टी पद से इस्तीफा देने का तेरा फैसला मुझे बिल्कुल अच्छा नही लगा । तेरे पास रही सपत्ति की कोई कडक आलोचना करता है, तो तू सपत्ति नही छोड देता .
तेरे पहने हुए वस्त्रो पर कोई टीका-टिप्पणी करता है,
तो तू वस्त्र नही निकाल फेकता ।'
तेरे घर मे रहे हुए फर्नीचर को कोई ईर्ष्यालु गाली देता है, तो तू फर्नीचर वाहर नही फेक देता . तो फिर यही अभिगम यहाँ भी अपनाने मे तुझे क्या हर्ज है ?
क्या कहूँ ?
इस दुनिया के अच्छे लोग आज भी एक भयकर गलती कर रहे है ।
सघर्षो-दॉवपेचो से परेशान होकर वे महत्त्वपूर्ण स्थान
छोड रहे है और दुर्जनो को उन स्थानो
पर बैठने की अनुकूलता दे रहे है ।
मेरी बात पर विचार करना ।

महाराज साहेब, **२**

आपके पत्रने तो कल रात
मेरी नीद हराम कर डाली ।
एकदम स्वस्थ चित्त से विचार किया, तव महसूस हुआ कि इस्तीफा देने मे मैने जल्दबाजी तो की ही है, साथ-ही-साथ गलती भी की है । लेकिन अव तो और किया भी क्या जा सकता है ?
सिर्फ चौबीस घटो के अल्प समय मे
तो ट्रस्टीमडल ने मेरा इस्तीफा मजूर कर लिया है ।
परन्तु मै आपको एक बात पूछना चाहता हूॅ कि "सज्जनो के साथ समाज का बहुजनवर्ग क्यो नही जुडता ?
सज्जनो को अकेला क्यो कर दिया जाता है ?
हमेशा सज्जनो की अपेक्षा दुर्जन बहुमत मे ही क्यो दिखते है ?

चिन्तन,

'सज्जनो की अपेक्षा दुर्जन हमेशा बहुमत मे ही क्यो दिखते है ' तेरी लिखी इस वात मे तथ्य नही ।
हकीकत तो यह है कि **जिसे सज्जन कहा जा सके, ऐसा वर्ग इस दुनिया मे १% जितना ही है और जिसे दुर्जन कहा जा सके,**
ऐसा वर्ग भी इस दुनिया मे १% जितना ही है ।
बाकी का जो ९८% वर्ग है, वह 'न्यूट्रल' है,
अर्थात् निष्क्रिय है, तटस्थ है, मध्यस्थ है ।
तो फिर 'दुर्जन बहुमत मे हो, ऐसा क्यो दिखता है ..?'
तेरे इस सवाल का जवाब यह है कि 'पहली वात तो. सज्जन सगठित नही
किसी भी कारण से उनके बीच परस्पर संवादिता नहीं है ।
किसीको सामने वाले सज्जन की नीति पसन्द नही,
तो किसीको उसकी कार्यप्रणाली पसन्द नही..
किसीको सामनेवाले सज्जन की वैचारिक उदारता नही जमती,' तो किसीको उसकी मनोवृत्ति सकुचित लगने से उसके साथ नही जमता ।
सक्षेप मे,' किसी-न-किसी कारण से सज्जनो के वीच एकरागिता नही है । हालॉकि, है तो हर-एक सज्जन, लेकिन विखरी हुई हालत मे !'

'गुलाव है, चमेली है, मोगरा है, जासुद है.
परन्तु सव पुष्प अलग-अलग कोनो मे पडे है। एक धागे मे पिरोये जाकर हार वनने की उनकी तैयारी नही।'

'सज्जनो की पहली कमज़ोरी यह है,
तो दूसरी कमजोरी यह है कि सज्जन सक्रिय नही।'

शायद किसी विशिष्ट पुण्यवान को सज्जनो को संगठित करने मे कभी सफलता मिल भी जाय, फिर भी संगठित बने हुए ये सज्जन सक्रिय नही वनते, वनना नही चाहते।

'सव अपनी-अपनी सज्जनता मे मस्त है। मेरे पास सुगंध है, तो गदगी के ढेर पर आक्रमण करने की मुझे क्या जरूरत ? सबके मनमे ऐसा ही कुछ है। और इसी कारण से सव निष्क्रिय बन बैठे है।

तो दूसरी ओर दुर्जनो की वात तो कुछ और ही है। वे सव सगठित है व्यभिचारी और जूआरी एक मच पर वैठ सकते है। खूनी व शरावी एक दूसरे को गले लगा सकते है, टेक्सचोर व कामचोर सरेआम एक-दूसरे के गले मे हार पहना सकते है।

जेवकतरा व लफगा, होटलमे एक
टेवल पर बैठकर मजे से नाश्ता कर सकते है।

एक तरफ दुर्जनो के पक्ष मे सगठन है,
तो दूसरी तरफ उनके पक्षमे सक्रियता भी इतनी ही है।

'खूनी के बचाव के लिये नशाखोर आता है,
तो जेबकतरे के बचाव मे शराबी आता है।
व्यभिचारी, टेक्सचोर पर सकट आने पर उसे सहारा देता है,
तो शराबी को आँच न आये, इसका ध्यान जूआरी रखता है।

तेरे सवाल का जवाव यह है।

'दुर्जन १% जितने ही होने पर भी बहुमत मे हो,
ऐसा लगता है। इस सगठन व सक्रियता के ही कारण।'
यह १% वर्ग, निष्क्रिय, तटथ व मध्यस्थ रहे हुए उस
९८% वर्ग को सक्रियता के द्वारा अपने पक्षमे खीच लेता है और वह ९८% वर्ग, इस
१% वर्ग के
आधिपत्य को बिना किसी आनाकानी के स्वीकार लेता है।
अब तो समझ गये न कि दुर्जन बहुमत मे हो, एसा क्यो लगता है?

महाराज साहेब,

३

सगठन का अभाव और सक्रियता का
अभाव-सज्जनो के पक्ष मे रही हुई
इस कमजोरी से न जाने दुनिया को
कितना नुकसान होता होगा !
क्या बताऊँ ?
पत्र मे आपके द्वारा लिखी गयी बात
पढकर दिल स्तब्ध हो गया है ।
परन्तु मै एक बात जानना चाहता हूँ कि
'सगठित होने मे सज्जनो को तकलीफ क्या है ?'

चिन्तन,

'फूल के नन्हे-से पौधे के पास तू सुगध व छाया,
दोनो की अपेक्षा रखे, तो क्या होगा ?'
चीकू के पेड के पास तू चीकू के साथ
बडे लकडे की भी अपेक्षा रखे, तो क्या होगा ?
केले के वृक्ष के पास केले के साथ रस की भी अपेक्षा रखे,
तो क्या होगा? नही, नही ! तुझे समझना ही होगा कि
'पौधे के पास से सिर्फ सुगध पाकर सतोष मानना पडता है'
छॉव की भी अपेक्षा उसके पास से ही नही रखी जा सकती ।
चीकू के वृक्ष के पास से सिर्फ चीकू पाकर ही सतोष मानना पडता है लकडे की भी
अपेक्षा उसके पास से नही रखी जा सकती है । केले के वृक्ष के पास से सिर्फ
केले पाकर ही तुझे खुश होना पडता है
उसके पास से रस की भी अपेक्षा नही रखी जा सकती ।
बस, तेरे द्वारा पूछे गये प्रश्न का एक जवाव यह है कि'प्रत्येक सज्जन, सामनेवाले
सज्जन मे तमाम सद्गुण देखना चाहता है ।
'इसमे उदारता के साथ, सौजन्यता भी होनी ही चाहिये
नम्रता के साथ परोपकाररसिकता भी होनी ही चाहिये.
मैत्रीभाव के साथ भक्तिभाव भी होना ही चाहिये '
इस अपेक्षा को कैसे सतुष्ट किया जाय ?'

'गुलाब है, चमेली है, मोगरा है, जासुद है
परन्तु सव पुष्प अलग-अलग कोनो मे पडे है। एक धागे मे पिरोये जाकर हार बनने की उनकी तैयारी नही।'
'सज्जनो की पहली कमजोरी यह है,
तो दूसरी कमजोरी यह है कि सज्जन सक्रिय नही।'
शायद किसी विशिष्ट पुण्यवान को सज्जनों को संगठित करने मे कभी सफलता मिल भी जाय, फिर भी संगठित वने हुए ये सज्जन सक्रिय नही बनते, बनना नही चाहते।
'सब अपनी-अपनी सज्जनता मे मस्त है। मेरे पास सुगध है, तो गदगी के ढेर पर आक्रमण करने की मुझे क्या जरूरत ? सवके मनमे ऐसा ही कुछ है। और इसी कारण से सव निष्क्रिय बन वैठे है।
तो दूसरी ओर दुर्जनो की बात तो कुछ और ही है। वे सव सगठित है व्यभिचारी और जूआरी एक मच पर वैठ सकते है। खूनी व शरावी एक दूसरे को गले लगा सकते है, टेक्सचोर व कामचोर सरेआम एक-दूसरे के गले मे हार पहना सकते है।
जेवकतरा व लफगा, होटलमे एक
टेबल पर बैठकर मजे से नाश्ता कर सकते है।
एक तरफ दुर्जनो के पक्ष मे सगठन है,
तो दूसरी तरफ उनके पक्षमे सक्रियता भी इतनी ही है।
'खूनी के वचाव के लिये नशाखोर आता है,
तो जेवकतरे के वचाव मे शरावी आता है।
व्यभिचारी, टेक्सचोर पर सकट आने पर उसे सहारा देता है,'
तो शरावी को ऑच न आये, इसका ध्यान जूआरी रखता है।
तेरे सवाल का जवाव यह है।
दुर्जन १% जितने ही होने पर भी बहुमत मे हो,
ऐसा लगता है। इस सगठन व सक्रियता के ही कारण।
यह १% वर्ग, निष्क्रिय, तटस्थ व मध्यस्थ रहे हुए उस
९८% वर्ग को सक्रियता के द्वारा अपने पक्षमे खीच लेता है और वह ९८% वर्ग, उस
१% वर्ग के
आधिपत्य को विना किसी आनाकानी के स्वीकार लेता है।
अव तो समझ गये न कि दुर्जन बहुमत मे हो, ऐसा क्यों लगता है?

महाराज साहेब,

३

सगठन का अभाव और सक्रियता का
अभाव-सज्जनो के पक्ष मे रही हुई
इस कमजोरी से न जाने दुनिया को
कितना नुकसान होता होगा !
क्या बताऊँ ?
पत्र मे आपके द्वारा लिखी गयी वात
पढकर दिल स्तब्ध हो गया है ।
परन्तु मै एक वात जानना चाहता हूँ कि
'सगठित होने मे सज्जनो को तकलीफ क्या है ?'

चिन्तन,

'फूल के नन्हे-से पौधे के पास तू सुगध व छाया,
दोनो की अपेक्षा रखे, तो क्या होगा ?'
चीकू के पेड के पास तू चीकू के साथ
वडे लकडे की भी अपेक्षा रखे, तो क्या होगा ?
केले के वृक्ष के पास केले के साथ रस की भी अपेक्षा रखे,
तो क्या होगा? नही, नही ! तुझे समझना ही होगा कि
'पौधे के पास से सिर्फ सुगध पाकर सतोष मानना पडता है '
छाँव की भी अपेक्षा उसके पास से ही नही रखी जा सकती ।
चीकू के वृक्ष के पास से सिर्फ चीकू पाकर ही सतोष मानना पडता है . लकडे की भी
अपेक्षा उसके पास से नही रखी जा सकती है । केले के वृक्ष के पास से सिर्फ
केले पाकर ही तुझे खुश होना पडता है
उसके पास से रस की भी अपेक्षा नही रखी जा सकती ।
बस, तेरे द्वारा पूछे गये प्रश्न का एक जवाब यह है कि 'प्रत्येक सज्जन, सामनेवाले
सज्जन मे तमाम सद्‌गुण देखना चाहता है ।
'इसमे उदारता के साथ, सौजन्यता भी होनी ही चाहिये.
नम्रता के साथ परोपकाररसिकता भी होनी ही चाहिये
मैत्रीभाव के साथ भक्तिभाव भी होना ही चाहिये '
इस अपेक्षा को कैसे सतुष्ट किया जाय ?'

एक ही जगह पर तमाम सद्गुण तो भगवान में ही देखने मिलते हैं, न संत में दिखाई देते हैं, न सज्जन मे । यदि इस वास्तविकता को हरएक सज्जन दिल से स्वीकार ले, तो एक सज्जन को दूसरे सज्जन के पास जाने मे कोई हर्ज न होगा । फिर तो सगठन हुए बिना नही रहेगा ।

परन्तु, मुश्किल तो यह है कि एक तरफ यह अभिगम,
तो दूसरी तरफ एक अन्य गलत अभिगम के शिकार सज्जन वनते है ।

'मुझमे सब कुछ है,
तो फिर मुझे दूसरे के पास जाने की भला क्या आवश्यकता ?
उसे सलाह लेनी हो, तो आये मेरे पास, समस्या हल करनी हो, तो समाधान पाने आये मेरे पास ।' बस, इस गलत अभिगम के शिकार वने हुए सज्जन एक-दूसरे के पास जाने को तैयार नही होते ।'

संक्षेप मे, "सामनेवाला सज्जन पूर्ण होना चाहिये. ' यह है एक गलत अभिगम और दूसरा गलत अभिगम है - 'मै स्वय पूर्ण ही हूँ ।' इन दो गलत अभिगमो के कारण सज्जन सगठित नही हो सकते ।

दूसरी ओर, हर एक दुर्जन जानता है कि 'मै कैसा हूँ ?' 'मेरी कमजोरी क्या है ?' इस कमजोरी के वचाव के लिये भी वह सामनेवाले दुर्जन के पास जाने को तैयार हो जाता है । सामनेवाला दुर्जन भी स्वय की कमजोरी के रक्षण की चाह मे, अपने पास आये हुए दुर्जन को स्वीकार लेता है । कही पर पढा था कि
'एक सोफा पर दो अमीर नही वैठ सकते, जवकि एक फटी चद्दर पर दस भिखारी मजे से वैठ सकते है !' मै नही जानता कि अमीर व भिखारी के वारे मे वनाये गये इस अभिगम मे सच्चाई कितनी है ? परन्तु,
सज्जनो व दुर्जनो मे तो यह अभिगम फिलहाल एकदम सत्य हो, ऐसा दिख रहा है ।

एक अच्छे कार्य के लिए भी सव सज्जन
एकमत नही होते और हल्की कक्षा के कार्यो
के लिये भी दुर्जनो मे कोई मतभेद नहीं होता ।

इसका अर्थ तू ऐसा मत समझ लेना कि यह धरती रसातल मे जाने वैठी है । नहीं,
धरती पर फूल तो है ही, जो भी तकलीफ है, वह हार वनाने की है
इसमे सफलता कैसे मिले ?
इसका जवाव...
अगले पत्र मे ।

चिन्तन,

४

दुर्जन बहुमति मे न होने पर भी बहुमति मे हो,
ऐसा लगने के मैने तुझे दो महत्त्वपूर्ण कारण -
सज्जनो मे सगठन का अभाव और सक्रियता का अभाव.
बताये, इनके अतिरिक्त एक तीसरा कारण भी है,
वह है आक्रामकता का अभाव ।
सज्जनता का यह स्वभाव गिनो या कमजोरी गिनो,
परन्तु वास्तविकता तो यह है कि
सज्जनता आक्रामक नही बन सकती ।
आप पुष्प के पास आक्रामकता की क्या अपेक्षा रख सकते है ?
वह स्वभाव से ही कोमल है..
शायद किसी की प्रेरणा से वह आक्रामक बन भी जाय
और पत्थर पर टूट भी पडे लेकिन
आखिर मे परिणाम तो उसे ही भुगतना पडता है न ?
बस, सज्जनो के बारे मे भी ऐसा ही होता है ।
सज्जन आक्रामक नही बन सकता और
यदि वनने भी जाय तो स्वय ही चोट खाता है ।
क्या तुझे पता है ? इसीका यह परिणाम आया है कि
दुर्जन युद्ध पैदा करते हैं और सज्जन युद्ध लड़ा करते है...
दुर्योधन ने युद्ध पैदा किया, युधिष्ठिर को युद्ध लड़ना पड़ा...
रावणने युद्ध पैदा किया, राम को युद्ध लड़ना पड़ा...
आक्रामक दुर्जन बनता है, संरक्षक सज्जन को बनना पड़ता है...
दुर्जन तलवार बनता है, ढाल सज्जन को बनना पड़ता है...
शासकपक्ष दुर्जन का होता है,
विपक्ष मे सज्जन को ही रहना पड़ता है ।
इस देश को आजादी मिलने के बाद का -
पिछले ३०/३५ वर्ष का इतिहास तू देख ले ।
मेरी बात को तू स्पष्ट रूप से समझ जायेगा ।
सज्जनो के हिस्से एक ही काम आया है,

दुर्जनो की नीति का विरोध करना ।
शासक पक्षने विपक्ष को एक ही
काम मे व्यस्त रखा है, वह है - विरोध करना ।
शासकपक्ष कत्लखानो की सम्मति देता है, तो विपक्ष विरोध करता है । शासकपक्ष सर्धड बिना की शिक्षा प्रणाली वनाता है,
तो विरोधपक्ष उसका विरोध करने को तैयार ही खडा रहता है ।
सेसर वोर्ड वीभत्स कक्षा के दृश्योवाली फिल्मे पास करता है,
सज्जन उनका विरोध किया करता है ।
विदेशी मुद्रा के लालच मे इस देश के नेता लाखो की
सख्या मे देश के पशुधन की कत्ल करके
उसके मास का निर्यात करते है
और सज्जन उसके विरोध मे मोर्चे निकालते है ।
औद्योगिक क्रान्ति के नाम पर सरकार लाखो कारीगरो को वेकार वनाती है और सज्जन उसके विरुद्ध लेखमालाये लिखते है.
शासक पक्ष सडे हुए अनाज का आयात करता है, तो उसके विरोध मे विपक्ष ससद मे आवाज उठाता है । दुर्जन जगल काटते है,
सज्जन 'वृक्ष लगाओ' के नारे लगाते है ।
शासक पक्ष 'मांसाहार मे प्रोटीन की मात्रा ज्यादा है' जैसी झूठी वातो का प्रचार करता है, तो उसके विरोध मे विपक्ष सुप्रीम कोर्ट मे रीट-पीटीशन पेश करता है ।
दुर्जन गर्भपात को कानूनी घोषित करते है, तो सज्जन उसे गैरकानूनी घोषित करने के लिये सभाओ का आयोजन करते है ।
चिन्तन,
हाथ-पॉव कॉप उठे, ऐसी यह वास्तविकता है ।
सज्जनो के अनाक्रामकता के स्वभाव का,
दुर्जनो ने जो भरपूर गैरफायदा उठाया है,
उसकी यह करुण कथा है ।
आज सज्जनो की छाती पर वख़्तर है,
परन्तु दुर्जनों के हाथ में तो एटमवोव हैं...
क्या सज्जन वच पायेगे ?
क्या वे दुनिया को वचा पायेगे ?

महाराज साहेब,

५

आपके पिछले पत्रने तो मुझे
विचार मे डाल दिया है ।
आज तक तो मै यही समझता था
कि सज्जनो को किसी भी क्षेत्र मे
एक भी पद लेना ही नही चाहिये ।
जहाँ सिर्फ कलुषितता ही भरी हो,
जहाँ छल-कपट व गदी राजनीति का ही साम्राज्य हो,
जहाँ एक-दूसरे को पछाडने की ही कोशिश चलती हो,
वहाँ सज्जनो को पॉव भी क्यो रखने चाहिये ?
परन्तु आप के पत्र से तो ऐसा लगता है
कि प्रत्येक महत्त्वपूर्ण स्थान पर सज्जनो
को कब्जा जमाना ही चाहिये ।
आज तक सज्जनो ने उन पदो पर कब्जा नही जमाया है,
इसीलिये तो यह कटु परिणाम आया है,
जिसका करुण चित्र आपने गत पत्र मे पेश किया है ।
मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस विषय पर आप विशेष प्रकाश डाले ।

चिन्तन,

इस दुनिया के एक बहुत बडे वर्ग की यह मान्यता है
कि कुछ भी बुरा करे, तो ही दूसरो को नुकसान होता है ।
पत्थर मारने पर ही किसीका सर फूटेगा न ?
गाली देने पर ही किसीका अपमान होगा न ?
आग लगाने पर ही किसीका घर जलेगा न ?
कीचड उछालने पर ही किसीके कपडे बिगडेगे न ?
दॉवपेच अपनाने से ही किसीको नुकसान होगा न ?
कहने का तात्पर्य यह है कि,
'यदि हम कुछ बुरा करे, तो ही नुकसान होगा...'
आजका ज्यादातर जनसमुदाय इसी मान्यता मे उलझा हुआ है ।
लेकिन मै तो तुझे यह बताना चाहता हूँ कि कुछ न करने द्वारा भी दूसरो को

नुकसान में डाला जा सकता है। और इसके अपयश का टीका सज्जनो के माथे पर ही लगता है।

ताकातवर व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थानो पर जाने
का प्रयत्न न करने के द्वारा सज्जनो ने सामने चलकर वे सारे स्थान दुर्जनो के हाथ मे सोप दिये है ...

लाखो का हिसाब-किताब जॉचने की भी परवाह न करके सज्जनो ने दुर्जनो को हेराफेरी करने की अनुकूलता प्रदान की है।

बच्चो को दी जानेवाली शिक्षा के प्रति सर्वथा
उदासीनता रखकर सज्जनो ने दुर्जनो को सरासर
झूठी बातो का प्रचार करने की छूट स्वय सामने से दी है।

पेटमे जानेवाले भोजन के द्रव्यो की शुद्धि के विषय मे ऑखे मूदकर सज्जनो ने दुर्जनो को आम जनता के आरोग्य के साथ खिलवाड करने की छूट दे दी है।

हाथ मे भरी हुई बन्दूक होने पर भी, उसके उपयोग के प्रति उदासीनता रखनेवाला
पुलिस अनजान मे भी गुडे को किसीकी
हत्या करने के लिये अनुकूलता ही देता है न ?

बस, ऐसी ही आक्षेपबाजी के शिकार वने है आज के सज्जन।

दुर्जनो की सक्रियता ने दुनिया मे नुकसानो की परंपरा का सर्जन किया है, तो सज्जनो की निष्क्रियता ने नुकसानों की परंपरा का सर्जन करने में परोक्ष रूप से सम्मति देकर दुनिया को नुकसान पहुँचाया है।

चिन्तन,

मै तुझे इतना ही कहूँगा कि तू
तेरी दृष्टि को यहॉ तक पहुँचाता जा।

शक्ति व सामर्थ्य होने पर भी अनिष्ट का प्रतीकार न करने
के द्वारा कही तू अनिष्ट के प्रसार
मे या आचरण मे निमित्त तो नही बना है न ?

क्या बताऊॅ तुझे ?

तू शायद इसी भ्रम मे है कि मैने मेरे जीवन मे कुछ भी बुरा किया ही नहीं। परन्तु मैं तुझे इतना ही पूछना चाहता हूँ कि क्या तू छाती ठोककर कह सकता है कि मैंने सक्रियता बताते हुए, अपनी नजर के सामने कुछ भी खराब होने ही नहीं दिया है ?

जवाब लिखना।

महाराज साहेब,

आप क्या कहना चाहते है,
वह मै समझ गया हूँ ।
सक्रिय बनते हुए दुर्जनो को चुनौती देते रहना
और स्वयं सक्रिय वनते रहना,
ये दो काम सज्जनो को करते रहना है,
यदि आप ऐसा कहना चाहते है,
तो मेरा सवाल यह है कि
यदि हर-एक सज्जन यही अभिगम अपनाने लगे,
तो अधाधूधी तो नही खडी होगी न ?
क्योंकि सभव है कि निर्बल सज्जन पर
वलवान दुर्जन अपनी पकड जमा दे ।
या फिर कही अकेले सज्जन को देख वलवान दुर्जनो का समूह अपनी धाक जमा दे ।
इस सभवित भयस्थान के बारे मे आपके क्या विचार है ?

चिन्तन,

जिसके भी पास पॉव हो, उसको
ओलिम्पिक मे भाग लेना जरूरी नही ।
जिसके भी पास गला हो,
उसे सगीत प्रतियोगिता मे हिस्सा लेना जरूरी नही ।
जिसकी भी हड्डियॉ मजबूत हो,
उसे गुडे का सामना करना ही चाहिये, यह जरूरी नही ।
जिसे भी बोलना आता हो,
उसे वक्तृत्व प्रतियोगिता मे भाग लेना ही चाहिये, यह जरूरी नही ।
ठीक, इसी प्रकार जो भी सज्जन हो, उस हर-एक को महत्त्वपूर्ण व सत्ता के स्थानो पर कब्जा जमाने का प्रयास करना जरूरी नही ।
जिसके पास सज्जनता के अलावा विशिष्ट कोटि का पुण्य है,
जिसका समाज पर प्रभाव है,
जिसकी वाणी मे जबरदस्त आकर्षण है,
जिसके पास जोरदार बुद्धिप्रतिभा है,

৬

महाराज साहेब,

विचार के तौर पर आपकी बात एकदम सही है,
परन्तु भला यह वास्तविकता मे शक्य है ?
ताकत और सज्जन के हाथ मे ?
शायद आप नही जानते कि इस ताकत
तक पहुँचने के लिए भी सज्जन को
कितनी दुर्जनता अपनानी पडती है ?
सही बात तो यह है कि आज सत्ता का निर्णय
सख्या के आधार पर होता है ।
जिसके पास सख्या का जोर ज्यादा, वहीं सत्ता प्राप्त कर सकता है
और जिसके हाथ मे सत्ता हो, वह जो भी बात रखे,
उसे सबको सत्य मानना पडता है । मै आपसे पूछना चाहता हूँ कि
क्या सज्जन के पास मिलेगा यह सख्या का जोर ?
और यदि यही न हो, तो वह सत्ता तक पहुँच ही कैसे पायेगा ? आपको शायद पता ही नही कि

मारामारी मे सर तोड़ने होते है, तो
लोकशाही मे सर गिनने होते हैं ।

ज्यादा से ज्यादा सर तोड सके,
वह मारामारी मे विजेता गिना जाता है,
तो अपने पक्षमे ज्यादा से ज्यादा सर गिना सके,
वह लोकशाही मे विजेता गिना जाता है ।
सत्ता तक पहुँचने की वर्तमानकालीन दुर्व्यवस्था
देखते हुए मै इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि सत्ता तक पहुँचना सज्जन के लिये करीब-करीब अशक्य है
अपवाद के तौर पर, यदि कोई सज्जन सत्ता तक पहुँच भी जाय, फिर भी ज्यादा समय तक या पूरी
मुद्दत तक उस स्थान पर टिके रह पाना तो बहुत ही कठिन है ।
है आपके पास इस समस्या का कोई समाधान ?
है इस तकलीफ का आपके पास कोई जवाब ?

जिसका स्वास्थ्य अच्छा है,
जिसके पास सपत्ति का भी पीठवल है
सक्षेप मे,
जो गुणवान होने के साथ ही साथ विशिष्ट पुण्यवान है,
ऐसे सज्जन के लिए ही यह बात है कि
उसे सत्तावाले स्थानो की अवगणना कभी नही करनी चाहिये।
दूसरी एक बात तुझे बता दूँ ?
भविष्य के गर्भ मे क्या पडा है,
इसकी आगाही तो भविष्य किसके गर्भ मे है,
इसके आधार पर ही की जा सकती है।
पत्थर के भविष्य मे क्या है, यह देखने के
लिए तो पहले यह देखना पडता है कि पत्थर किसके हाथ मे है ?
यदि पत्थर शिल्पी के हाथ मे है,
तो उसका भविष्य सुदर है और
यदि पत्थर बदमाश के हाथ मे है,
तो उसका भविष्य बुरा है।
के भविष्य के साथ भी यही बात लागु पडती है न ?
यदि सपत्ति कुशल व्यापारी के हाथ मे है,
तो उसकी वृद्धि है और यदि शराबी के हाथ मे है, तो उसका ह्रास है।
चिन्तन, आज चारो ओर भविष्य सुधारने की चर्चायें चलती है,
परन्तु व्यक्तियो का समूह जिसके हाथ नीचे तैयार होनेवाला है,
उस व्यक्ति की निष्ठा के बारे मे गभीरता
से विचार करने को शायद कोई तैयार नही।
मेरा तो यही मानना है कि
पत्थर यदि शिल्पी के हाथ मे ही चाहिये,
घोड़ा यदि कुशल जॉकी के हाथ मे ही चाहिये,
धंधा यदि व्यापारी के हाथ में ही चाहिये,
स्टीयरिंग यदि होशियार ड्रायवर के हाथ मे ही चाहिये, तो
सत्ता पुण्यशाली सज्जन के हाथ में ही चाहिये।
इसमे बिलकुल गड़बड नही चलेगी।

चिन्तन,

तेरे सवाल का जवाब देने से पहले पश्चिम के
एक विचारक रसेल का एक वाक्य तेरे
आगे रखना चाहूँगा -
'मूर्खों के आत्मविश्वास नही डगमगाते और
बुद्धिमान शंका मे से ही ऊँचे नही आते ।'
तेरे द्वारा उठायी गयी शकाये पढकर मुझे ऐसा लगता है कि तू भी इस मन स्थिति का शिकार वना लगता है,
नही तो ऐसी कायरता-भरी बाते तूने नही की होती ।
हालॉकि, मै यह नही कहना चाहता कि वर्तमान परिस्थिति का तेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया रूप झूठा है, भ्रामक है,
परन्तु इस परिस्थिति मे अब कोई फेरफार नही किया जा सकता,
ऐसी तेरी शका से मै सहमत नही ।
जाडो की रात चाहे जितनी लबी हो, लेकिन पूरी तो होती ही है न ?
खडाला घाट की लवी-लवी सुरगे भी कही तो पूरी होती ही है न ? तो फिर पुण्यवान सज्जनो की निष्क्रियता के कारण सारे देश मे छायी यह परिस्थिति भी क्यो समाप्त नही हो सकती ? आवश्यक है थोडी-सी समझदारी व थोडी धीरज की !
अब सुन तेरे प्रश्न का जवाव, वर्तमान काल मे जब सख्या को ही सत्ता का मापदड माना गया है, तव दुर्जनो के सामने सज्जनो को भी सगठित होना ही रहा
कॉटो के सामने पुष्पो को,
गदगी के ढेर के सामने उद्यानो को भी
अपनी ताकत दिखानी ही होगी ।
पुण्यशाली सज्जन के लिये यह बात असंभव नही. .
उसकी एक ही आवाज और अनुयायियो के टोले उसके पीछे ।
'हिद छोडो' की आवाज उठानेवाले गाधीजी अकेले ही थे न ?
इदिरा गाधी की सत्ता को चुनौती देनेवाले
जयप्रकाश नारायण भी अकेले ही थे न ?
छोड यह चिन्ता !
सज्जन चाहे अकेला हो, परन्तु यदि वह विशिष्ट पुण्यवान हो,
तो हताश होने की कोई आवश्यकता नही ।

८

महाराज साहेब,

आप तो पक्के आशावादी लगते है ।
जहॉ अच्छे-अच्छे बुद्धिमान भी
हताश हो बैठे है कि,
'ऐसी बिगडी हुई परिस्थिति मे
कुछ भी कर पाना अपने बस की बात नही',
वहॉ आपकी यह आशा कि
'विशिष्ट पुण्यवान ऐसा एक भी सज्जन काफी है ’
सचमुच तारीफ करने लायक है ।
मै भी आप जैसा आशावादी बनूँ, यही मेरी इच्छा है ।
परन्तु एक बात पूछूँ ?
आज करीब-करीव सर्वत्र यही दिखता है कि
आज अच्छे लोग भी मिलते है और वड़े लोग भी मिलते है,
परन्तु अच्छे वड़े लोग तो करीव-करीव कही नही दिखते ।
अर्थात् आज गुणवान मिलते है, पुण्यवान भी मिलते है,
परन्तु पुण्यवान गुणवान तो आज करीव-करीव कही नही मिलते ।
ऐसी स्थिति मे आपकी वात व्यवहार मे लाने योग्य कैसे बन सकेगी ?

चिन्तन,

शायद तेरी वात मै सच मान भी लूँ,
फिर भी तुझे एक बात किये बिना नही रह सकता
कि कोन्फ्युशियस ने एक जगह लिखा है कि
'जो समाज योग्य व्यक्ति को योग्य स्थान पर नही बिठा सकता
और ऊँचे स्थान पर वैठे हुए अयोग्य व्यक्ति को
उस स्थान से नही उठा सकता,
वह समाज कभी स्वस्थ नही रह सकता ।'
तेरी बात सही है कि पुण्यवान
ऐसे गुणवान आज लगभग दिखायी नही देते । तू एक काम कर ।
तू जिस गली मे रहता है, उस गली मे तेरी दृष्टि मे जो व्यक्ति तुझे गुणवान लगता हो,
उस व्यक्ति को कम से कम तेरी गली मे तो आगे लाने का प्रयास कर ।

कोई विशेष आयोजन हो रहा हो,
पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हो,
किसीका सत्कार-समारोह रखा गया हो,
किसी खास समस्या का समाधान खोजा जा रहा हो,
ऐसे हर-एक स्थान मे तू उसे प्रधानता देता जा,
उसका गौरव बढाता जा और उसे आगे स्थान देता जा ।
इसका सबसे बढिया लाभ तो यह होगा कि
सारी गली को उसकी सज्जनता की सुवास महसूस करने को मिलेगी ।
सारी गली उसकी समझदारी को जान जाएगी ।
उनकी गुणवत्ता अनेको के आकर्षण का केन्द्र बनेगी ।
यह बात मै तुझे इसलिये बताना चाहता हूँ कि अच्छे इन्सान को पद पाने की लालसा नही होती और प्राप्त किये हुए पद को ठुकराने की उसकी जबरदस्त हिम्मत होती है ।
यदि उसे आगे आने की लालसा ही नही है,
तो उसे आगे लाने के प्रयास किसीको तो करने होगे न ?
यह काम मै तुझे सोपना चाहता हूँ । क्या तूने ये पक्तियाँ पढी है ?
'श्रेष्ठ लोको करे जे जे, ते ज अन्य जनो करे,
ते जेने मान्यता आपे, ते रीते लोक वर्तता ।'
बस, यह काम तू निष्ठा के साथ शुरू कर ।
इसका तुझे ऐसा परिणाम मिलेगा,
जिसकी तूने कभी कल्पना भी नही की होगी ।
शीशी मे भरे गये इत्र की सुगंध फैलाने के लिये किसीको तो शीशी पर लगे ढक्कन को खोलना ही पड़ता है,
इसी प्रकार किसी कोने में छुपे
हुए सज्जन को मैदान मे लाने के लिये
तेरे जैसे किसीको तो प्रयास करना ही होगा न,
जिससे कि उसकी सज्जनता को आमजनता पहचान सके ।
इसी संदर्भ मे एक खास बात बता दूँ ।
लोक मानस का गुणात्मक प्रतिविब सख्या नही !
चाहे सूर्य एक है, चन्द्र एक है, सज्जन एक है. .
उसकी ताकत भले-भलो को हिलाकर रख देती है ।

महाराज साहेब,

१

क्या बताऊँ मै आपको ?
आठ-दस दिन पहले मिले आपके पत्र
मे आपने जिस बात का निर्देश किया था,
उस पर परसो अमल किया और
उसका अद्भुत परिणाम मिला ।
हुआ यो कि हमारी गली मे जिन
बच्चो को ८०% से ज्यादा अक मिले थे,
उनका पुरस्कार वितरण समारोह परसो था ।
अध्यक्षपद पर किसे रखा जाय, इसका विचार-विमर्श
चल रहा था । इतने मे मैने हमारी गली के
नुक्कड पर रहनेवाले करीव ६० वर्ष की आयु के
एक अपरिचित सज्जन का नाम दिया ।
शुरूआत मे तो सबने थोडी आनाकानी की,
परन्तु मेरे अति आग्रह के आगे सबको झुकना पडा
और उनका नाम तय हुआ ।
हमने उन सज्जन पुरुष के आगे यह बात रखी,
तो उन्होने साफ इन्कार कर दिया ।
'आप कहो, तो मै पुरस्कार वितरण समारोह मे उपस्थित हो जाऊँगा,
बच्चो के पुरस्कार के लिये अच्छी रकम भी दे दूँगा,
परन्तु अध्यक्ष बनने की तो वात मत करो ।'
लेकिन हमारे दृढ निश्चय के आगे उन्हे
झुकना ही पडा और परसो समारोह का आयोजन भी हो गया ।
परन्तु अध्यक्ष स्थान से उन्होने जो कुछ कहा,
उनके वे शब्द अब भी याद आ रहे है ।
यदि हम समाज को प्रभावशाली बनाना चाहते है,
तो इसके लिये पहला विकल्प है -
समाज के आगे प्रभावशाली विचार रखना ।
यदि समाज के पास प्रभावशाली विचार ही नही हो,

तो आचरण के स्तर पर समाज हमेशा प्रभावहीन ही रहेगा। हॉ,
इसमे एक बात का खास ध्यान रखना कि
प्रभावशाली विचार समाज के बीच रखने के बाद
उसके सम्यक् परिणाम के लिये न ज्यादा
अधीर बनना और न ही ज्यादा आशावादी बनना।
हो सकता है कि कुछ विचारो
का परिणाम आने मे देर लगे और
कुछ विचारो का परिणाम बिल्कुल दिखाई ही न दे।
धरती पर बीज डालने पर कुछ बीज व्यर्थ जाते है, तो
कुछ बीज लबे अरसे के बाद फलते है।
बस, इस क्षेत्र मे भी यही अभिगम अपनाना है।
यह अभिगम स्वीकारने से मन कभी हताश नही होता।
सम्यक् परिणाम न आने से सम्यक् प्रवृत्तियॉ
छोड़ देने के गलत विचारो का शिकार मन कभी नही बनता।
यहॉ पर उपस्थित मेधावी विद्यार्थियो से भी
मै यही कहना चाहूँगा कि परीक्षा मे ८०% से
ज्यादा अक पाकर अन्य विद्यार्थियो की अपेक्षा
ज्यादा महत्त्वपूर्ण तो बन गये हो,
परन्तु याद रखना कि **महत्त्वपूर्ण बनना जितना अच्छा है,**
उसकी अपेक्षा अच्छा बनना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।
तुम सिर्फ 'महत्त्वपूर्ण' ही न बने रहकर
'अच्छे' बनने के लिए भी प्रयत्न करते रहना...'
उनका वक्तव्य समाप्त होते ही विद्यार्थियो की तालियो की गडगडाहट सुनकर मेरी
ऑखो मे हर्ष के अश्रू उमड़ पडे।
मुझे पक्का विश्वास हो गया कि
ज्यादातर व्यक्ति तो 'अच्छे' के ही चाहक चाहक है।
जरूरत है सिर्फ उन 'अच्छो' की पहचान सबको कराने की।
सज्जनो को प्रधानता देने की सलाह देकर
सचमुच आपने तो मेरे मन मे ही
सज्जनता की प्रधानता प्रस्थापित कर दी है।

चिन्तन,

तेरा पत्र पढकर अत्यन्त आनन्द हुआ ।
ज्यादा आनद तो मुझे इस बात का
हुआ कि सज्जन को प्रधानता देने के
मेरे सूचन को तुने शीघ्र अमल मे लाया
और तुझे भी इसीकी सुन्दर अनुभूति हुई ।
मेरी अन्तर की यही कामना है कि इस
अभियान को तू अधिक से अधिक व्यापक बनाता जा ।
किसी कोने मे छुपे हुए सज्जनो को
अधिक से अधिक सख्या मे और
अधिक से अधिक क्षेत्रो मे काम मे लगाता जा ।
दुर्जनो की सर्वक्षेत्रीय पकड को तोडने के लिये
इसके जैसा श्रेष्ठ विकल्प और कोई नही ।
तुझे शायद लगता होगा कि
महत्त्वपूर्ण स्थानो पर अच्छे लोगो को ही
नियुक्त करने के लिये महाराज साहेव इतना आग्रह क्यो रखते होगे ? मेरे पास इस
सवाल का स्पष्ट जवाब है कि

समाज के शिक्षण की,
व्यवसाय की,
आरोग्य की,
नैतिकता की जवाबदारी जिस राजसत्ता के हाथ मे है,
उस राजसत्ता की उपेक्षा
अच्छा इन्सान किन्ही संयोगो मे भी नही कर सकता ।

क्या तुझे पता है कि तुझे तेरे बेटे को कॉमर्स, आर्ट्स, सायन्स, जिस किसी क्षेत्र मे भेजना हो, उसकी पसदगी करने के लिये तू स्वतत्र है । परन्तु इस प्रत्येक क्षेत्र मे क्या पढाया जाय, यह तो राजसत्ता ने अपने हाथ मे रखा है. .
तुझे एक छोटा सा उदाहरण दूँ ?
भारत सरकार के हेल्थ बुलेटिन न. २३ मे कहा गया है कि मास, मछली और अडो से भी ज्यादा प्रोटीन मूगफली मे है .

फिर भी स्कूलो मे पढायी जानेवाली पाठयपुस्तको मे इस हकीकत को जान-वूझकर छुपाया गया है ।
सिर्फ वास्तविकता ही छुपायी गयी होती, तो खास हर्ज नही था,
परन्तु विपरीत हकीकत प्रस्तुत की गयी है कि 'मास, मछली,
अंडो मे भरपूर प्रोटीन है'.. इसका अर्थ क्या है ?
यही न कि विद्यार्थियो के मन मे सहज रूप मे ही
मास, मछली, अडो के प्रति आकर्षण पैदा हो
और विद्यार्थी भोजन मे ये चीज़े खानी शुरू करे ।
क्या उसके दूरगामी परिणामो पर तूने कभी विचार किया है ?
मांस की माग वढने से कत्लखानो की सख्या वढती जायेगी,
पशुधन नष्ट होता जायेगा,
मछली की माग बढने से मत्स्योद्योग का विकास होता जायेगा,
किसान भी उसमे लग जायेगे
समुद्रका किनारा व नदियो का किनारा मछलियो से दूषित होता जायेगा, अडो की माग
वढने से पोल्ट्रीफार्म खुलते जायेगे,
हज़ारो की सख्या मे मुर्गी का कत्ल हो जायेगा.
लाखो की सख्या मे अडे बाजार मे आते जायेगे,
माग से भी उत्पादन बढ जाने पर टी.वी. पर उसके जोरदार विज्ञापन आते जायेगे और
इन विज्ञापनो से प्रभावित
प्रजा भोजन मे इन्ही चीजो की माग करती जायेगी .
चिन्तन, इन्हे शेखचिल्ली के विचार मत मान वैठना ।
कुछ अशो मे आज इस परिस्थिति का सर्जन होने भी लग गया है । तू शायद कल्पना
भी न कर सके, उस हद तक इस देश की धरती पर कत्लखानो,
मत्स्योद्योग व पोल्ट्री फॉर्म
का आक्रमण शुरू हो चुका है ।
फिर भी लोग वार-बार बस एक ही वात दुहराते है,
'राजनीति एकदम सड़ गयी है, उसमे
अच्छे इन्सान तो जा ही कैसे सकते है ?' यह तो ऐसी दलील है कि
'सारी गली में आग लगी है,
वहाँ बंबेवाले तो जा ही कैसे सकते हैं ?'

महाराज साहेब,

११

आपने तो कमाल कर दिया ।
आपके पत्र के एक-एक शब्द पर
गभीरता से विचार करने पर मुझे तो स्पष्ट लग रहा है
कि ओहदे से दूर भागने की सज्जनो की
वृत्ति मे जरूर कुछ-न-कुछ परिवर्तन तो आना ही चाहिये ।
चूहे द्वारा तैयार किये गये दर मे घुसकर सर्प,
जिस प्रकार उस दर पर अपना अधिकार जमा देता है
उसी प्रकार खून का पानी
करके सज्जनो द्वारा बनायी गयी सम्यक् व्यवस्था को,
दुर्जन सत्ता पर आकर, तहस-नहस कर डालते है ।
यह तो कैसे चले ?
इसी अनुसधान मे एक बात पूछुँ ?
क्या सज्जन इस नुकसान को समझते ही नही ?
यदि समझते भी है, तो अपने अभिगम को बदलने
के लिये वे तैयार क्यो नही होते होगे ?
चिन्तन,
सामान्य इन्सान की मनोवृत्ति ऐसी होती है
कि उसे स्वतत्रता अच्छी लगती है, परन्तु जवाबदारी नही ।
वह स्वतत्रता के साथ अनुयायी बनने को तैयार होता है,
परन्तु जवावदारी स्वीकारने के साथ नेता बनने को तैयार नही होता ।
तेरे द्वारा पूछे गये प्रश्न का जवाब यही है ।
ओहदे से दूर भागने के नुकसान सज्जनो को पता न हो,
ऐसा मै नही मानता ।
उनके साथ तकलीफ यह है कि वे
जवावदारी स्वीकारने को तैयार नही होते ।
परन्तु पुण्यवान सज्जनो को
अपने-आपको इस कमजोरी से मुक्त करना ही होगा ।
उन्हे यह बात समझनी ही होगी कि एक सत

एक दिन मे शायद ५/१०
इन्सानो का हृदय-परिवर्तन कर सकता है,
परन्तु सत्ता तो,
एक ही रात मे लाखो-करोडो इन्सानो को
जीवन-परिवर्तन करने के लिये मजबूर करती है. .
चिन्तन, याद कर उन कुमारपाल महाराजा को,
अपनी हुकूमत जिन १८ देशो पर चलती थी,
उन १८ देशो मे उन्होने जिस तरह से जीवदया का पालन करवाया, पिछले हजार सालो के इतिहास मे कोई उसकी तुलना मे नही आ सकता।
एक छोटे-से जीव को मारने की बात तो दूर रही, परन्तु 'मार' शब्द भी बोलने पर प्रतिबन्ध था।
यह किसका प्रभाव था ?
प्रचड पुण्यवान सज्जन के राजसत्ता पर आधिपत्य का प्रभाव !
याद कर, उस तानाशाह हिटलर को,
जिसने गेस-चेम्बर मे लाखो यहूदियो को
जिस निर्दयता के साथ खत्म कर दिया,
उसकी क्रूरता की बराबरी मे भी कोई नही आ सकता।
इसके पीछे क्या कारण था ?
क्रूर, दुर्जन का राजसत्ता पर आधिपत्य !
चिन्तन, अपनी डायरी मे जह बात लिख रखना कि **सूर्य की दिशा बदलने पर जिस प्रकार परछाई भी अवश्य बदलती है,**
उसी प्रकार सत्तास्थान पर बैठे हुए व्यक्ति के मानस
के आधार पर प्रजा के जीवन में ज़रूर परिवर्तन आता है।
कुमारपाल का मानस प्रजा मे निर्भयता का
वातावरण पैदा कर सकता है, तो हिटलर का मानस प्रजा मे भय का साम्राज्य भी पैदा कर सकता है। बात एकदम स्पष्ट है।
परिधि का निर्णय केन्द्र के हाथ मे है,
तो प्रजा की उन्नति का निर्णय सत्ता के हाथ मे है।
अब तो तू कबूल करेगा न कि
सत्ता का केन्द्रीय बल सज्जन ही चाहिये, और कोई नही।

महाराज साहेब,

आपके पत्र मे प्रस्तुत की गयी
मुँहतोड दलील का मेरे पास कोई जवाब नही,
फिर भी एक प्रश्न मन मे यह उठा करता है
कि सत्तास्थान पर आने मे
सफल बने हुए सज्जन को, दॉव-पेच अपनाकर,
सत्ताभ्रष्ट करने मे दुर्जन कामयाब तो नही होगे न ?
अर्थात् ,
क्या अपनी दुष्टता से दुर्जन, सज्जन को सत्ताभ्रष्ट नही करेगे ?

चिन्तन,

तेरी यह शका बराबर है ।
अब सुन इसका मजेदार उत्तर ।
समझ ले कि एक थियेटर मे एक ऐसा पिक्चर चल रहा है,
जिसका जनमानस पर खूब गहरा असर पडा है ।
पिक्चर की कहानी इतनी प्रेरक है कि, उसने दो भाईयो के बीच के क्लेश मिटा दिये है, दो दुश्मनो को मित्र बना दिया है .
दो भागीदारो के बीच समाधान करा दिया है
थियेटर मे से बाहर निकलते हुए दर्शको
की आखो से आसू बह रहे है
अब यदि इस पिक्चर की ताकत तोडनी हो,
अर्थात् जिस थियेटर मे यह पिक्चर चल रहा हो,
उस थियेटर मे जानेवाले दर्शको की सख्या एकदम कम करनी हो,
तो सामने के थियेटरवाले को अपने थियेटर मे
इस पिक्चर से भी बढिया पिक्चर दिखाना पडेगा ।
इसका अर्थ क्या है ?
यही कि **एक स्थान से 'अच्छे' को हटाने के लिये**
उसके स्थान पर 'ज्यादा अच्छे' को लाना पड़ता है ।
खराब को लाने से नही चलता । इसी प्रकार,
एक स्थान से 'खराब' को हटाने के लिये

उसके स्थान पर उससे भी 'ज्यादा खराब' को लाना पडता है।
अच्छे को लाने से नही चलता।
सक्षेप मे कहा जाय, तो
कोयल की जमी-जमायी सभा मोर से टूटती है,
कौए से नही....
और इसी प्रकार
कौए के अत्याचार को अच्छा कहलाने
के लिये गरुड़ या चील को मैदान मे आना पड़ता है।
हंसका वहाँ काम नही।
अब सुन, तेरे सवाल का जवाब !
सत्तास्थान पर बैठे हुए सज्जनको
सत्ताभ्रष्ट करने मे दुर्जन कामयाब नही होता,
परन्तु उससे भी ज्यादा सज्जन ही कामयाब होता है।
जिस सज्जन ने सत्ता पर आने के वाद
जनकल्याण के ही कार्य सतत किये है,
गरीवो के कलेजे को ठडक पहुँचाकर उनकी दुआये पायी है,
धनवानो को सलामती दी है,
जन मानस मे सुसस्कारो के बीज बोये है,
छोटे से छोटे आदमी की ज़रूरत भी पूरी करके उसे सतोष दिया है,
शिष्ट पुरुषो की मान-मर्यादा रखी है,
ऐसे सज्जन को जब लोग ही सत्तास्थान पर बिठाना चाहते हो,
तब उसे सत्ता से भ्रष्ट करने मे दुर्जनो को सफलता
मिलने की सभावना बहुत कम है।
हालाँकि, यह तो राजनीति है।
जहाँ कोई हमेशा के लिये शत्रु नहीं होता
और कोई हमेशा के लिये मित्र भी नही होता।
इसीलिये तेरे द्वारा व्यक्त की गयी शका सही भी हो सकती है,
फिर भी इस भयस्थान को महत्त्व न देते हुए,
सज्जन को सत्ता पर लाये बिना प्रजा के
सुख-शान्ति-संस्कारो को सलामत नही रखा जा सकता।

चिन्तन,

पिछले पत्र के अनुसधान मे ही इस पत्र
मे मै तुझे कुछ लिखना चाहता हूँ।
एक बात याद रखना कि
दूसरे सबसे ज्यादा बुरे बनने मे जितना खतरा है,
उससे
अनेक गुणा खतरा दूसरे सबसे ज्यादा अच्छे बनने मे है...
विष्टा की अपेक्षा गदगी के ढेर को इतना खतरा नही,
जितना खतरा गुलाब के पौधे की अपेक्षा बगीचे को है।
जेबकतरे की अपेक्षा गुडे को इतना खतरा नही,
जितना खतरा सज्जन की अपेक्षा सत को है।
इसका मतलब यही है कि ज्यादा बुरा ज्यादा सुरक्षित है।
अर्थात् कम खराब को लोग फिर भी चुनौती देते है,
परन्तु ज्यादा खराब को तो लोग दूर ही से नमस्कार करते है।
इसी प्रकार ज्यादा अच्छा ज्यादा असुरक्षित है। अर्थात्
कम अच्छो की तो लोग शायद अवगणना ही करते है,
परन्तु ज्यादा अच्छो का तो पूरा फायदा उठाते है।
जिसकी नजर के सामने यह वास्तविकता है,
उसके मन मे कभी यह विचार नही आयेगा कि ज्यादा अच्छे वनने जानेवाले को ही
क्यो ज्यादा तकलीफे सहनी पडती है ?
सद्गृहस्थ की अपेक्षा सज्जन को,
सज्जन की अपेक्षा सत को और
सत की अपेक्षा परमात्मा को क्यो ज्यादा सहन करना पडता है ?
यह तो उनकी नियति है।
फिर भी ज्यादा अच्छे लोग अपनी
अच्छाई छोडने का कभी विचार तक नही करते
'इससे तो बुरे थे, यही ठीक था'
ऐसे विचार तो पल भर के लिये भी नही करते,
और यही अभिगम प्रत्येक सज्जन का होना चाहिये।

यह तो ससार है ।
यहॉ तो अच्छो से भी बुरो की सख्या ज्यादा है,
इतना ही नही
बुरो को परेशान करनेवाले जितने नही,
उतने अच्छो को परेशान करनेवाले है ।
गालियॉ सुननी पडती है, इसलिये व्यापारी
अपना पेमेन्ट छोड नही देता ..
रेड पडती है, इससे घबराकर
वालकेश्वरवाला झोपडी मे रहने नही चला जाता .
कुछ दुर्जन टीका-टीप्पणी करते है, परेशान करते है,
या तकलीफ देते है, इससे घबराकर
सज्जन अपनी सज्जनता नही छोड़ देते...
एक बात तेरी डायरी मे लिख रखना कि...
दूसरो की टीका-टिप्पणी से घबराकर जो
अपनी सही प्रवृत्ति भी छोड देता है,
उसे अपने जीवन के विकास की आशा भी
रखने का अधिकार नही है ।
मै तो यहॉ तक कहूँगा कि
अग्नि को पाकर सोना विशुद्ध ही बनता है,
पानी को पाकर सीमेंट मजबूत ही बनता है,
हल की चोटे सहकर खेत कोमल ही बनता है, तो
टीकाओं की झड़ियॉ स्वीकारकर सज्जन समृद्ध ही बनता है ।
तू तेरा नबर ऐसे सज्जन मे लगा देना..
भिखारी के बेटे से भी राजपुत्र के लिये
ज्यादा कष्टो मे से गुजरना इसलिये ज़रूरी है
कि उसके सर पर सैकड़ो-हजारो के
योग-क्षेम की जिम्मेदारी आनेवाली है...
कष्टो के ढेर का सत्कार करके,
तू ज्यादा से ज्यादा समृद्ध, मजबूत व होशियार वनता जा,
यही शुभेच्छा !

महाराज साहेब,

मुझे तो लगता है कि आपने
मुझे महत्त्वपूर्ण ओहदे पर बिठाने की ठान ही ली है ।
क्योकि पिछले पत्र मे आप द्वारा दी गयी
सलाह इसी हकीकत की तरफ इशारा करती है ।
हालॉकि, मै इसका विरोध नही करता,
परन्तु मन मे यह शका उठती है कि
क्या पद के बिना भी हम
कोई ठोस कार्य नही कर सकते ?
समाज या राष्ट्र मे फैली हुई
बुराईयॉ हटाने के लिये क्या
हमारा पद पर होना जरूरी ही है ?
सज्जनता के बल पर क्या हम बिना पद के,
समाज को मार्गदर्शन नही दे सकते ?

चिन्तन,

आदर्श के रूप मे यह विचारधारा अच्छी है ।
परन्तु आदर्श आदर्श है
और वास्तविकता तो आखिर वास्तविकता है ।
तेरे द्वारा रखी गयी बात आदर्श के रूप मे तो ठीक है,
परन्तु वास्तविकता यह है कि पद
या स्थान पर बैठा हुआ कायर भी शूरवीर लगता है,
जबकि पदहीन या स्थानहीन
सज्जन या शक्तिशाली व्यक्ति को भी सत्ता पर आसीन व्यक्ति
कमजोर साबित करके रहता है ।
क्या तुने यह हायकु पढा है ?

ले रहे कौए
कपोतो की तलाशी,
तोते चुप है !

कौए कबूतरो की तलाशी ले रहे है और

तोते चुप है, क्या तू इसका तात्पर्य समझा ?
कौए अर्थात् सत्तास्थान पर बैठे हुए दुर्जन,
कबूतर अर्थात् निर्दोष प्रजाजन और
तोते अर्थात् सत्ताहीन सज्जन ।
सामनेवाला व्यक्ति सर्वथा निर्दोष है, ऐसा नजर
के सामने दिखने पर भी सत्ताधारियो के द्वारा
उस पर जब जुल्म किये जाते है,
तब सत्ताहीन सज्जन के पास मौन रहने के सिवाय
कोई चारा नही रहता ।
क्या तू ऐसा मानता है कि हिटलर
के निर्दय हत्याकाड मे मारे गये लाखो यहूदी अपराधी ही थे ?
दुर्जन ही थे ?
नही, उनमे से ज्यादातर तो बेचारे एकदम सीधे-सादे व सरल थे,
फिर भी उन सबको मारने मे हिटलर को सफलता मिली ।
इसका यही कारण था कि सज्जनो के पास सत्ता नही थी ।
उनकी सज्जनता लाखो मे से एक भी निर्दोष को न बचा पायी ।
चिन्तन,
तुझे स्पष्ट शब्दो मे बता दूँ कि
गलत जगह पर दिखायी गयी उदारता दुर्गुणो
को जन्म देती है और दुर्जनों को बल प्रदान करती है ।
पद छोडने की गाधीजी की दिखायी गयी उदारता (?)
की बहुत बडी कीमत इस देश को आज चुकानी पड रही है ।
जिसे प्रजाजन की प्रगति मे दिलचस्पी थी, उस बापू ने,
देश की प्रगति मे दिलचस्पी थी,
उस नेहरू को इस देश की बागडोर सोप दी ।
इसीका यह नतीजा है कि यह देश आज उद्योगो,
इमारतो व मल्टीनेशनल कपनियो से आबाद बन गया है,
परन्तु इस देश की आम प्रजा बरबाद हो रही है कुपोषण से,
कुसस्कार से और कुवातावरण से ।
अब है कोई बचने का उपाय ?

महाराज साहेब,

कौए-कबूतर और तोते के हाइकु के द्वारा
आपने तो बहुत कुछ कह दिया.
आपका कहना भी सही है ।
चाहे जितनी सज्जनता हो,
परन्तु हाथ मे अधिकार ही न हो, तो क्या फायदा ?
हॉ, अधिकारहीन सज्जन शायद स्वय को बचा सके,
परन्तु अनेको को बचाने की स्वय मे रही हुई ताकत
को तो वह काम मे ही नही लगा सकता ।

चिन्तन,

यदि अधिकार दुर्जन के हाथ मे ही है,
तो अधिकारहीन सज्जन को अपनी
सज्जनता टिका पाना बहुत कठिन काम है ।
याद रखना,
राजनीति तो सारे देशका कूँआ है ।
वहॉ जो चलता है, वही व्यक्ति के उवारे मे आता है ।
यदि राजनीति मे बदमाशगिरी है, स्वार्थी मनोवृत्ति है, रिश्वत है,
गद्दारी है, षड्यत्र है, छल-कपट है, हवसखोरी है,
तो आम जनता मे भी यह सब आने की काफी सभावना है ।
क्या तुने ये पक्तियॉ नही पढी ?
जिसका राजा व्यापारी,
उसकी प्रजा भिखारी.
इसका तात्पर्य यही है कि सत्ताधारियो के जीवन मे जो कुछ है, वही आम प्रजा के जीवनमे आता है । मन कैसा विचित्र है ?
यह तो इसी अभिगम मे चलता है कि 'यदि बडे लोग ही चोरी करते हो, सरासर झूठ चलाते हो, विश्वासघात करते हो, तो हमे भी यह सव करने मे हर्ज ही क्या है ?'
बस, ऐसे बहाने बनाकर बडो की सब
बुराईयो को वह अपने जीवन मे स्थान दे देता है ।
क्या तू ऐसा मान रहा है कि सत्ता पर बैठे हुए दुर्जन हमारी सज्जनता को कैसे चुनौती

दे सकते है ? इसका जवाब है -

पानी धरती के रंग को पकड़े विना नही रहता, तो
मन वातावरण का असर लिए बिना नही रहता ।

सत्तास्थान पर बैठे हुए दुर्जन वातावरण को
सतत कलुषित बनाते ही रहते है । एक छोटी-सी बात करूँ ?
टी वी. पर आज सरकार का अधिकार है ।
चेनले प्रसारित करने के अधिकार सरकार के
जरिये दूसरो को दिये जाते है ।
टी.वी. के छोटे-से पर्दे पर आनेवाले
दृश्यो की आज क्या हालत है ?
अत्यन्त गये-बीते व अति बीभत्स कक्षा के
दृश्य सतत पर्दे पर दिखायी देते है ।
मॉ-वाप,
भाई-बहन
सासु-बहू,
पुत्र-पिता
पुत्री-माता,
देरानी-जेठानी
सब एक-साथ टी वी के सामने बैठ जाते है ।
किसीको नही पता कि किस क्षण टी वी. पर कैसा दृश्य आनेवाला है ? अचानक कोई
बीभत्स दृश्य आ जाता है
और भले-भले सज्जन की ऑखे शर्म के मारे नीचे झुक जाती है ।
टी.वी. के सामने बैठने से पहले किसीके मन मे विकारभाव न भी हो,
परन्तु ऐसे हल्के दृश्य देखते ही
मन विकारभाव से ग्रस्त हो जाता है ।
क्या बताऊँ तुझे ?
जो सचमुच अपने मन की पवित्रता टिका रखने के लिये गभीर है,
वे भी टी.वी., वीडियो के इस तूफान के आगे लाचार बन गये है ।
अब तो तू समझ गया न कि सत्तास्थान पर वैठे हुए दुर्जन,
व्यक्ति की सज्जनता के लिये कैसे खतरनाक सिद्ध हो सकते है ?

महाराज साहेब, **१६**

आपका तो जवाब नही ।
आज तक मै समझता था कि यदि
हम सज्जनता टिकाना ही चाहते है,
तो दुनिया की कोई ताकत हमे चलायमान नही कर सकती ।
परन्तु आपके पिछले पत्र ने तो मुझे हिलाकर रख दिया ।
जेल मे रहे हुए कैदी के
व्यक्तित्व का निर्णय जेलर के हाथ मे आ जाता है,
तो प्रजाजन के व्यक्तित्व का निर्णय
सत्ता पर आसीन व्यक्तियो के हाथ मे आ जाता है ।
ऐसा मै आपके पिछले पत्र से समझा हूँ ।
मेरी इच्छा है कि इस विषय पर आप कुछ विशेष प्रकाश डाले ।

चिन्तन,

तुझे याद ही होगा कि पूर्व के एक पत्र मे
तूने राज्यसत्ता के हाथ मे रहे हुए शिक्षण के कारण
बच्चो की कैसी हालत होती है, इसकी वात की थी ।
इस पत्र मे मै तुझे भोजन के वारे मे लिखना चाहता हूँ ।
'मेरे पेट मै कैसा भोजन जाना चाहिये,
इसका निर्णय यदि राजसत्ता के हाथ मे ही हो,
तो उस स्थान पर कौन आयेगा,
इस बात के प्रति भला मै उदासीन रह सकूँगा ?
इस उदासीनता के फल आज देश के
करोडो प्रजाजन वुरी तरह से भुगत रहे है
धरती पर जतुनाशक दवाये छिडक-छिडककर सरकार ने उसे बजर तो बनाया ही है,
परन्तु साथ ही साथ दूषित भी वनाया है. .
अनाज मे चाहे गेहूँ हो या बाजरा,
द्विदल मे चाहे मूग हो या मटर,
फल मे चाहे चीकू हो या आम,
सब्जी मे चाहे तुरई हो या भीडी,

एक चीज़ भी ऐसी नही, जो जहर-मुक्त हो ।
शायद ऐसा भी कहा जा सकता है कि
प्रत्येक प्रजाजन जाने-अनजाने भी अपने पेट मे
भोजन के द्रव्यो के साथ जहर घुसा रहा है .
एक तरफ यह तकलीफ है,
तो दूसरी ओर सरकार ने मिलावट की
एक भयकर नीति अपनायी है ।
गेहूँ के आटे मे मछली के चूर्ण की मिलावट,
घी मे गाय की चर्बी की मिलावट,
आइस्क्रीम मे अडे के रस की मिलावट,
बिस्किट मे हड्डी के चूरे की मिलावट,
वाजारु स्वादिष्ट पदार्थो मे मटन टेलो की मिलावट,
सीरप मे वैल के खून की मिलावट .
तू कल्पना भी न कर सके इतना लवा यह लिस्ट है ..
घर मे तेरी पत्नी तुझे भोजन मे ज़हर दे दे, तो
उसके खिलाफ कानूनी तौर पर कदम उठाये जा सकते है,
परन्तु सरकार द्वारा मान्य की गयी मिलावट
चाहे जितनी ज़ालिम और खतरनाक हो, फिर भी उसके खिलाफ
कदम नही उठाये जा सकते...
चिन्तन, शायद तू नही जानता कि पश्चिम के देशो के शासको ने,
अपने वहाँ प्रतिबधित घोपित हुई ढेर सारी दवाईयो को प्रजाजन के पेट मे डालने के लिये, इस देश के शासको को, समझा दिया है ।
फिलहाल तो उन देशो मे से ऐसी-ऐसी दवाये अपने यहाँ आ रही है,
जिनका सेवन करके
इस देश के प्रजाजन सतत मौत की तरफ धकेले जा रहे है ।
मै कोई ज्योतिषी नही,
फिर भी इतना तो जरूर कह सकता हूँ कि
सत्तास्थानो के प्रति पुण्यवान सज्जन भी निष्क्रिय ही वने रहेगे,
तो हो सकता है कि इस देश का कल का
प्रधानमंत्री शायद गुंडा हो और राष्ट्रपति डाकू ।

१७

महाराज साहेब,

आपके पत्र मे व्यक्त की गयी हकीकत
पढकर सर से पॉव तक कॉप उठा ।
सत्तावानो के द्वारा ऐसे जालिम अत्याचार ?
प्रजाजन के आरोग्य के साथ ऐसा भयकर खिलवाड ?
आपकी विचारधारा के साथ मै पूर्णतया सहमत हूँ
कि यह देश तभी बच सकता है,
यदि इसकी बागडोर पुण्यवान सज्जनो के हाथ मे होगी ।
समझ मे तो यही नही आता कि सज्जन बाप भी,
अपनी सपत्ति कुपुत्रो के हाथ मे नही सौपता
सज्जन सेठ भी
अपनी गाडी के स्टीयरीग व्हील पर
शराबी ड्रायवर को नही ही बैठने देता
सज्जन प्रिसिपल भी अपनी कॉलेज लफगे प्रोफेसर
के भरोसे नही छोड देता सज्जन डॉक्टर भी
अपना दवाखाना नालायक कपाउडर के हाथ मे नही सौप देता
सज्जन वकील भी अपनी ऑफिस वदमाश आदमी
के हाथ मे नही सौपता
तो सज्जन प्रजाजन भी सारा देश नालायको के हाथ मे
चले जाने पर भी इतने निश्चिन्त बनकर कैसे जीते होगे ?
वाप, सेठ, प्रिसिपल
डॉक्टर या वकील के रूप मे, सज्जनो की जो जवाबदारी है,
उससे भी उनकी प्रजाजन के रूप मे
जवाबदारी अनेक गुणा बढ जाती है ।
इस वात पर वे गभीरता से विचार क्यो नही करते होगे ?
अनिष्ट के साथ असहकार और अच्छे के साथ सहकार,
यह तो सज्जनो का फर्ज है ।
सत्तास्थान की अवगणना के द्वारा
परोक्ष रूप से भी सज्जन अनिष्ट को सहकार दे रहे है ।

क्या इस हकीकत को
समझने मे वे मार खा रहे होगे ?
कॉलेज के अध्ययन के दौरान
कई बार मैने यह वाक्य सुना है कि Might is Right
'बल ही सत्य है',
क्या यह वाक्य सज्जनो के सुनने मे नही आया होगा ?
यदि सुनने मे आया भी हो, तो क्या
इस वाक्य पर उन्हे भरोसा नही है ?
महाराज साहेब,
पश्चिम के चाणक्य कहलानेवाले
मेक्यावली का एक वाक्य मुझे याद आ रहा है ।
उसने लिखा है कि इस दुनिया को ढाल से नही,
तलवार से ही जीता जा सकता है...
इस वाक्य को थोडा सुधारकर मै कहता हूँ कि
यह दुनिया सत्ता के आगे ही झूकती है,
सत्ता बिना की समझदारी के आगे नही ।
यह दुनिया सत्त्व की ही गुलाम है,
सत्त्व बिना की सज्जनता की नही ।
यदि दुर्जनो के पास सिर्फ सत्ता होने पर भी
वे दुनिया को झुका सकते है, तो सज्जनो के पास तो सज्जनता है,
उसमे यदि सत्ता भी मिल जाय, तो फिर पूछना ही क्या ?
मेरे पास दूसरी लबी समझ तो नही,
परन्तु पुकार-पुकारकर मै सज्जनो को कहना चाहता हूँ कि
'दुर्जनो की सख्या देखकर हताश मत होना ।
क्योकि सत्ता तो गुणात्मक ही टिकती है, संख्यात्मक नही ।
रावण के १० मस्तक राम के १ मस्तक के सामने टिक नही पाये,
दुर्योधन की १८ अक्षौहिणी सेना ने
सिर्फ एक सारथि के रूप मे रहे हुए
कृष्ण के आगे घुटने टेक दिये थे ।
आओ सब मैदान मे, जीत आपकी ही है ।'

चिन्तन,

१८

तेरा पत्र पढकर दिल खुश हो गया ।
एक बात तुझे बता दूँ कि
तू भी समझ सकता है कि
एक साधु होने के कारण,
इस बात मे मुझे बिल्कुल दिलचस्पी नही होगी
अपने शरीर पर भी यदि
हमे अधिकार प्रस्थापित नही करना है, तो फिर
सारे देश पर अधिकार प्रस्थापित करने के लिये
सज्जनो को चुनौती देने की चेष्टा भला मै क्यो करूँ ?
परन्तु न जाने किस
गलतफहमी के कारण ज्यादातर सज्जन
तमाम महत्त्वपूर्ण पदो के प्रति नीरसता दिखाने लगे है,
निष्क्रिय बनने लगे है, तब उन्हे उनका फर्ज
याद कराने के लिये ही मेरा यह प्रयास है ।
मै नही जानता कि इस प्रयास मे
मुझे सफलता मिलेगी या नही ?
एक कर्तव्य के तौर पर यह बात
तुझे बताये बिना मै नही रह सकता ।
आज एक अत्यन्त खतरनाक परिस्थिति का
निर्माण हो रहा है, क्या तुझे उसका ख्याल है ?
आज उपदेश सज्जनो के हाथ मे है,
जबकि ताकत दुर्जनो के हाथ मे है ।
नीतिमत्ता बनाये रखने का
उपदेश सज्जन दे रहे है .
अनीति करने को मजबूर करे, ऐसे व्यवसाय की रूपरेखा
सत्तास्थान पर बैठे हुए दुर्जन बना रहे है ।
ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये,
यह उपदेश सज्जनो के हाथ मे है और ब्रह्मचर्य के इस उपदेश के चीथडे उडा दे, ऐसे

पिक्चर, मेगेजिन, मासिक पत्रिकाये पब्लिक के वीच रखने की प्रतियोगिता सत्ता पर वैठे हुए दुर्जनो ने शुरू की है ।
टोले को समाज मे परिवर्तन करने का उपदेश
सज्जन जोर-शोर से दे रहे है
और दुर्जन सत्ता के बल पर समाज
को टोले मे परिवर्तित कर रहे है । नयी पीढी के सस्करण के लिये सज्जन गला फ़ाड रहे है और दुर्जन अपने पास रही हुई सत्ता के बल पर इस पीढी को उल्टे रास्ते पर ले जा रहे है ।
सज्जन सत्ता मे Selection का विकल्प सूचित कर रहे है और
दुर्जन Election की बाते जोर-शोर से कर रहे है ।
चिन्तन, यह तो ऐसा है कि. गाडीका मालिक सेठ है,
और उसे कहाँ ले जाना इसका निर्णय ड्राईवर करता है .
बच्चे को जन्म माँ देती है
और उसे क्या खिलाया जाय, क्या पिलाया जाय
कौन से कपडे पहनाये जाये,
किस प्रकार का शिक्षण दिया जाय,
इसका अधिकार आया अपने हाथ मे रखती है .
पसीना बहाकर,
बुद्धि का उपयोग करके, पैसे व्यापारी कमाता है
और उसका लेखा-जोखा, हिसाब-किताब मुनीम अपने हाथ मे रखता है । वदर को ऐसा कहा जाता है कि तुझे जहाँ जाना हो, वहाँ जाने की छूट है, लेकिन उसकी रस्सी तो मदारी अपने हाथ मे ही रखता है ।
चिन्तन, यह तो बडी बूरी नीति है
यदि उपदेश की योग्यता सज्जन के पास है,
तो ताकत भी उसके पास ही होनी चाहिये ।
यदि उपदेश को
आचरण के स्तर पर लाने मे सज्जन को सफलता दिलानी ही है,
तो ताकत उसके हाथो में सौंप देने की उदारता
शासको को दिखानी ही चाहिये ।
इस विसवाद को टालने के लिये इसके सिवाय और कोई विकल्प नही ।

१९

महाराज साहेब,

आपके पत्र से एक बात बिल्कुल स्पष्ट हो
गयी है कि MASS को बचाने के लिए
CLASS को मैदान मे लाने के सिवाय
और कोई विकल्प ही नही .
परन्तु आज सब जगह यही सुनने को मिलता है कि
जिन्हे अच्छा कहा जा सके, ऐसे इन्सान दुनिया मे है ही कहाँ ?
और यदि ऐसे अच्छे इन्सान हैं ही नही, तो
ओहदे पर चाहे जिसे बिठाने मे तो लाभ से भी
नुकसान ज्यादा होने की सभावना नही ?
कहिये, आपके पास इसका क्या जवाव है ?

चिन्तन,

पहली बात तो यह है कि
यदि दुर्योधन व युधिष्ठिर समकालीन ही होते है,
यदि रावण और राम समकालीन ही होते है,
यदि कंस और कृष्ण समकालीन ही होते है, तो
दुर्जन और सज्जन भी समकालीन ही होते हैं ।
अर्थात् तेरी यह शका तो सर्वथा गलत है कि
जिन्हे अच्छा कहा जा सके, ऐसे इन्सान दुनिया मे है ही कहाँ ?
नही, नही आज भी अनगिनत ऐसे पुण्यात्मा है,
जिनके जीवन मे हमेशा सज्जनता की महक फैलती ही रहती है ।
हॉ, हो सकता है कि दुनिया शायद उन्हे न पहचानती हो,
परन्तु इसका मतलब यह नही कि दुनिया मे सज्जन है ही नही ।
फिर भी, एक बार अलग ढग से तेरी इस बात को सच मान भी लूँ, कि ओहदे पर
बैठने का जिनका पुण्य हो,
ऐसे सज्जन आज करीब-करीब दिखते ही नही,
तो फिर ओहदे पर किसे बिठाया जाय ?
चाहे जैसे नालायक को पद पर बिठाने मे तो
परिस्थिति वैसी की वैसी कलुषित रहने की सभावना है ।

तो चिन्तन, मै तुझे यही कहना चाहता हूँ कि
एकदम अच्छे इन्सान चाहे न मिले, तो
आखिर कम-से-कम खराब लोगो को पसद करके भी
उन पदो पर बिठाने के प्रयत्न करते रहना चाहिये ।
यह बात तुझे एक उदाहरण से समझाता हूँ ।
स्कूल मे मौखिक परीक्षा देकर घर लौटे
पुत्र ने खुश होते हुए पप्पा से कहा,
'पप्पा ! मुझे परीक्षा में प्रथम स्थान मिला'
'सचमुच' ?
'हॉ' ।
'क्या पूछा था टीचर ने ?'
'हाथी को कितने पॉव होते है ?'
'फिर ?'
'मैने जवाब दिया कि पांच पॉव होते है ।'
'ऐसा गलत जवाब, फिर भी पहला नबर ?'
'जी पिताजी ।'
'इसका कारण ?'
'क्योकि किसी विद्यार्थी ने अठारह पॉव कहे, तो किसीने सोलह बताये, तो किसीने दस, किसीने आठ कहे, तो किसीने छ परन्तु मैने पाच कहे, इसीलिये मुझे पहला नबर मिल गया ।
हालॉकि, मेरा जवाब भी सही नही था,परन्तु सबकी अपेक्षा सत्य के ज्यादा निकट था, इसीलिये मुझे पहला नबर मिला ।'
चिन्तन, मेरी बात भी ऐसी ही है ।
१००% पेमेण्ट नहीं मिलता, तो आदमी ७५% में भी हिसाव चुकाता ही है । ठीक इसी प्रकार, पद पर बिठाने के लिये किसीमें शायद १००% सज्जनता न भी दिखती हो,
परन्तु आखिर ९०% सज्जनता को भी पसंद करके,
पद पर ऐसे व्यक्ति को बिठाने के प्रयत्न तो करने ही चाहिये,
परन्तु एकदम गये-बीते इन्सान को तो
उस स्थान तक पहुँचने ही नहीं देना चाहिये ।

२०

महाराज साहेब,

आप ही के प्रवचन मे मैने
एक बार सुना था कि
'घर के बगीचे मे एक भी फूल न उगा हो,
तो फूलदान खाली रखना चाहिये,
परन्तु उसमे कचरा भरने की मूर्खता तो कभी नही करनी चाहिये ।'
मेरा सवाल यह है कि यही
अभिगम इस क्षेत्र मे भी क्यो नही स्वीकारा जाता ?
अर्थात् १००% अच्छा इन्सान न मिले,
तो ही उसे सत्ता पर विठाना चाहिये,
परन्तु कम वूरे इन्सान को तो सत्ता पर हर्गिज नही विठाना चाहिये ।'

चिन्तन,

तेरा सवाल ठीक है ।
अब ले सुन इसका जवाव ।
सत्ता का स्थान ऐसा है कि जहॉ कभी भी शून्यावकाश नही होता ।
अर्थात् एक प्रधानमत्री का आकस्मिक निधन होने पर
उस वक्त उस स्थान के लिये कोई योग्य व्यक्ति न
दिखने पर भी वह स्थान खाली नही रहता ।
तुरन्त ही उस स्थान पर किसी न किसी की नियुक्ति हो ही जाती है ।
एक अपेक्षा से देखा जाय तो राजनीति नदी के पानी जैसी है...
आप नदी मे एक जगह पर गड्ढा करो,
तो तुरन्त ही चारो ओर से पानी
उसी तरफ आने लगता है और गड्ढा भर जाता है ।
राजनीति मे भी ऐसा ही तो है ।
चाहे जैसा महारथी विदा ले ले
तुरन्त उस स्थान पर कोई न कोई तो आ ही जाता है ।
परिस्थिति जव ऐसी ही है,
तब मै तुझे पूछता हूँ कि १००% सज्जन की अनुपस्थिति मे,
यदि ९०% सज्जनतावाला व्यक्ति मिल जाय, तो उसे सत्तास्थान पर विठाया जाय या

१००% के आग्रह मे ९०%
दुष्टतावाले व्यक्ति को भी उस स्थान पर बैठने
की अनुकूलता दी जाय ? तुझे कहना ही पडेगा कि कम से कम बूरे व्यक्ति को उस स्थान पर बिठाना ही चाहिये।
फूल नहीं है, फूलदान खाली रखने की हमारी पूरी तैयारी है, परन्तु खाली फूलदान मे धूल भी जमने के लिये तैयार ही बैठी है तो वेमन से भी प्लास्टिक का फूल उस फूलदान मे हमे लगाना ही पडता है।
उस फूलदान को हम कम से
कम धूल के आधिपत्य से बचा तो सकते है न ?
बस, सत्ता के क्षेत्र मे भी यही अभिगम अपनाना पडता है।
चिन्तन, क्या बताऊँ ?
पिता की बिदाई के बाद पिता के बिना भी घर चल सकता है।
प्रिंसिपल की आकस्मिक विदाई के बाद
प्रिंसिपल के बिना भी कॉलेज चल सकती है।
उद्योगपति के विदाई के बाद उद्योगपति के बिना सिर्फ मेनेजर से भी फेक्टरी चल सकती है,
परन्तु
सत्ता का क्षेत्र ऐसा है कि वहाँ
सत्ताधारी व्यक्ति के बिदा होने बाद बिना किसी विलब के उस स्थान पर अन्य व्यक्ति की नियुक्ति हो ही जाती है।
बस,
इसी कारण से तुझे उपरोक्त विकल्प बताया है।
तुझे शायद पता न हो,
परन्तु पहले जमाने में अपने अनाज के
कोठार को चूहों के उपद्रव से बचाने
के लिये व्यापारी चूहों के दर के
पास मिठाई का टुकड़ा रख देता था।
चूहे समझते कि हमें मिठाई मिल गयी और
व्यापारी समझते कि बहुत छोटे-से नुकसान मे ही काम हो गया।
बड़े नुकसान से तो बच गये। इसका तात्पर्य समझ लेना।

महाराज साहेब,

आपने तो बडी अच्छी तरह से
मेरी शका का समाधान कर दिया।
परन्तु एक प्रश्न अभी भी मेरे मन मे उठता है
कि सत्ता मिलने से पहले का सज्जन इन्सान,
सत्ता मिलने के बाद भी भला सज्जन रह पायेगा ?
इसका कारण यह है कि इतिहास भी इस बात का साक्षी है
कि सत्ता, सपत्ति व स्त्री के लिये पुरुष ने
किसी भी प्रकार के सिद्धान्त को गिरवी रखने मे शर्म नही रखी है। सत्ता के खातिर
पुत्र ने सगे पिता का खून किया है.
सपत्ति के खातिर भाई ने भाई को गोली से उडा दिया है .
स्त्री के खातिर ताकतवर राजाओ ने प्रजा को कष्ट दिये है।
यदि सत्ता, सपत्ति व स्त्री इस हद तक पुरुष को निर्दय वना सकते है, तो सत्तास्थान पर
पहुँचने के बाद सज्जन को दुर्जनता का रग नही ही लगेगा, इसका क्या भरोसा ?

चिन्तन,

तेरी आशका बिल्कुल सही है, परन्तु एक वात याद रखना कि
निर्वल को दी गयी ताकतवाली चीज़ भी उसे ज्यादा निर्वल ही वनाती है,
जवकि ताकतवर को दी गयी
वही चीज़ उसे ज्यादा ताकतवर वनाती है।
मद पाचनशक्तिवाले को गरिष्ठ पदार्थ खिलाने पर
उसकी पाचनशक्ति और ज्यादा मद हो जाती है,
जबकि अच्छी पाचनशक्तिवाले को वही पदार्थ खिलाने पर
उसकी पाचनशक्ति और भी खिल उठती है
सत्ता तो प्रचड ताकतवाली चीज है।
वह यदि दुर्जन को मिल जाय, तो
उसके द्वारा उसकी दुर्जनता अमावस की काली रात को भी
शर्माना पडे, उस पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है. और
यदि वह सज्जन को मिल जाय, तो
उसके द्वारा उसकी सज्जनता पूर्णिमा की चादनी को भी हार माननी पडे, उस पराकाष्ठा

पर पहुँच जाती है..
इतिहास भी इस वात की गवाही देता है .
एक ओर अजयपाल है,
चगेज़खान है,
औरगजेव है,
नादिरशाह है,
हिटलर है,
तो दूसरी ओर वस्तुपाल है,
कुमारपाल है,
तेजपाल है,
वीरधवल है,
पेथडशा है..
सत्ता की प्राप्ति ने दुर्जनो को ज्यादा दुर्जन बनाया है
और सज्जनो को ज्यादा सज्जन बनाया है ।
हालॉकि, इसमे अपवाद भी कम नहीं.....
अच्छे लोग भी हाथ मे सत्ता आने के बाद
सगे पिता को भी भूल गये हो, ऐसे किस्से भी कम नही ।
सक्षेप मे, तेरे द्वारा व्यक्त की गयी आशका बिल्कुल सही होने पर भी यह खतरा उठाने की तरफदारी मै इसलिये करता हूँ कि
धर्म जीवनकला की आत्मा है,
तो राजनीति जीवनकला का शरीर है ।
रोगो से घिरे शरीर से आत्मकल्याण की साधना खूब मुश्किल हो जाती है, तो सडी हुई राजनीति से प्रजाजनो के सुसंस्कारो की पुजी को सलामत रखने का काम इससे भी ज्यादा कठिन हो जाता है ।
साधक को अपना शरीर स्वस्थ रखना ही चाहिये ।
सज्जन को राजनीति को स्वच्छ रखना ही चाहिये ।
और आखरी बात, .
गुडो के बीच भी शक्तिशाली अमीर यदि अपनी सपत्ति को टिका सकता है, तो
सत्त्वशील सज्जन सत्ता के बीच भी
अपनी सज्जनता को ज़रूर टिका सकता है ।

महाराज साहेब,

आपने तो बहुत सुन्दर समाधान किया ।
यदि गहराई मे से ही सज्जनता प्रगट हुई है, तो
भयस्थान होने पर भी सज्जन को
महत्त्वपूर्ण पद तक पहुँचाना जरूरी है
वह स्वय तो बचेगा ही,
परन्तु अनेको को बचाने के पुण्यकार्य का श्रेय भी उसे मिलेगा ।
परन्तु मुझे एक बात यह समझनी है कि
वर्तमानकाल मे इस देश मे
सत्तास्थान तक पहुँचने की जो व्यवस्था है,
उस व्यवस्था पर अमल करने के लिये
भला कोई भी सज्जन तैयार होगा ?
जहॉ सज्जन और दुर्जन की अंगुली की ताकत समान मानी गयी है, जहॉ देशभक्त और देशद्रोही के वोट का मूल्य समान माना गया है, जहॉ अल्पसंख्यक मतदाताओं के
मत पर मिली हुई जीत के द्वारा बहुमतवर्ग पर
शासन करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है,
उस चुनाव-प्रणाली के साथ भला सज्जन का अन्त:करण सम्मत होगा ? यदि नही, तो सज्जन सत्तास्थान तक पहुँच ही कैसे पायेगा ?

चिन्तन,

मै भी मानता हूँ कि सत्तास्थान पर
पहुँचने की वर्तमान व्यवस्था मे अनेक प्रकार की त्रुटियॉ है,
परन्तु जब व्यवस्था यही है, तो इसीमे से रास्ता निकालना पडेगा न ?
इसका सरल रास्ता यह है, कि चुनाव मे सज्जन स्वय खडा न हो,
परन्तु उसके आसपासवाले उसे पसद करके खडा करे...
चुनाव के प्रचार की सारी व्यवस्था वे लोग उठा ले
उसके खर्च की व्यवस्था भी धनिक वर्ग उठा ले
और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसके लिये ज्यादा से ज्यादा सख्या मे लोग
मतदान करने के लिये घर से निकल पडे -

यदि इतना हो सके, तो मै तुझे विश्वास के साथ कहता हूँ कि सज्जन को सत्तास्थान तक पहुँचने में कोई बाधा नहीं पहुचेगी।

वैसे तो, सत्तास्थान पर बैठे हुए दुर्जनो की लुच्चागिरी
देखकर बरसो पहले बर्नार्ड शा जैसे चिन्तक ने कहा था .
'बन्दर के हाथ मे अस्तरा आ गया है ..
अब तो गला न जाने कब कट जाय, इसीका इन्तजार है'
यह बात तू भी हमेशा याद रखना।
तुझे स्वय को महसूस होगा कि
अब इस क्षेत्र की होनेवाली थोडी सी भी उपेक्षा का यही अर्थ है कि करोडो प्रजाज़नो को जान-बूझकर अनिष्ट की आग मे फेक देना।
क्या कहूँ तुझे ?
दुष्ट शासकों की दुष्टता के परिणामस्वरूप
जो अत्यन्त घिनौनी कुव्यवस्था पैदा हो जाती है,
वह कुव्यवस्था, उन्हें मिलनेवाले दंड़ से नष्ट नही हो जाती।
व्यक्ति अथवा छोटे-से टोले द्वारा
पैदा की गयी कुव्यवस्था तो सत्ता के जोर पर नष्ट की जा सकती है,
परन्तु जब सत्ता स्वय ही कुव्यवस्था का सर्जन करती है,
तब उसके असर को नष्ट करना भले
भलो के लिये भी कठिन हो जाता है।
इस देश मे एक वह वक्त भी था,
जब बलात्कार के गुनाह मे पकडे हुए अपने पुत्र को खुद राजाने भरी राजसभा मे ज़हर का कटोरा पी जाने के लिये मजबूर किया था।
और आज ?
बलात्कार के दृश्योवाली फिल्मो को बिना रोक-टोक के मजूरी देकर,
उन फिल्मो द्वारा सरकार दोनो हाथो से कमा रही है... ।
मै अन्तर से यही कामना करता हूँ कि
जिस प्रकार कीचड के बीच रहा हुआ मजबूत पत्थर भी अनेको को
वहाँ से सही-सलामत बाहर निकालता है,
उसी प्रकार राजनीति की गदगी के बीच भी सत्त्व से टिका रहनेवाला सज्जन, अनेकों के जीवन को सलामत बनाने के लिये आगे आता है।

महाराज साहेब,

२३

जिसकी पाचनशक्ति मद हो,
उसे कोई भारी पदार्थ की ऑफर करे,
तो वह साफ इन्कार कर देता है कि
'भाई । यह खाने की अपनी ताकत नही,
यदि खा भी लूँ, तो पचने की कोई शक्यता नही ।'
सवाल यह उठता है कि दुर्जन भी
भारी पदार्थ के लिये ऐसा अभिगम अपनाता है,
तो सत्ता के लिये भी यह अभिगम अपनाने मे
उसे क्या हर्ज है ?
पात्रता न होने पर भी सत्ता से क्यो चिपका रहता है ?
सत्ता पर पहुँचने के लिये वह
सब प्रकार के हल्के रास्ते क्यो अपनाता है ?

चिन्तन,

इसका एक ही कारण है कि वह दुर्जन है ।
तू शायद नही जानता, परन्तु
सही बात तो यह है कि दुर्जन्
स्वय भी अच्छी तरह से जानता है कि 'मै क्या हूँ ?'
उसके पास कुर्सी न हो, तो
उसकी बिल्डिग मे भी कोई उसका भाव नही पूछता.
अब यदि वह स्वय को ऊँचा बताना चाहे, तो
इसका एक ही विकल्प है - कुर्सी पर बैठ जाना ।
और उसी कारण से वह सत्ता पर पहुँचने के
लिये सबसे अतिम रास्ते अपनाने के लिए भी तैयार हो जाता है ।
और जैसे ही उसे इसमे सफलता मिलती है,
उसमे रही हुई दुर्जनता सर्व क्षेत्रो मे प्रगट होने लगती है ।
पश्चिम के विचारक बेकन की ये पक्तियाँ तुने पढी है ?
'दुर्जन जब सज्जन होने का ढ़ोंग करता है,
तब ज्यादा दुष्ट हो जाता है ।'

इसमे भी दु खद आश्चर्य तो यह है कि सत्ता पर
बैठे हुओ को ज्यादातर वर्ग 'सत' ही मानने लगता है .
दुकान का उद्घाटन कराना है ?
राजनेता को बुलाया जाय.
प्रदर्शनी का उद्घाटन करना है ?
मंत्री को बुलाया जाय...
निदानकेप का उद्घाटन करना है ?
किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को बुलाया जाय ।
अरे, किसी धर्मस्थान का उद्घाटन करना है ?
प्रधानमत्री तक पहुँचा जाय ।
चिन्तन, क्या तू जानता है कि ऐसी परिस्थिति क्यो पैदा हुई ?
सफल अपराधी राजनेता बनता है और असफल राजनेता अपराधी बनता है, यह बात सब जानते है ।
फिर भी बडे बडे आयोजनो मे मत्रियो को बुलाने की यह प्रवृत्ति कैसे चालु हुई है, क्या यह तू समझ सकता है ?
इसका कारण यही है कि उनके हाथ मे सत्ता है . .
सरासर गलत कारण दिखलाकर भी वे ऑफिस बन्द करा सकते है,
प्रदर्शनी केन्सल करा सकते है ।
निदानकेम्प बन्द करा सकते है ।
धर्मस्थान बन्द करा सकते है . .
यह हकीकत सबको पता है, इसीलिये तो अत करण की 'ना' होते हुए भी सज्जन ही नही, संतो को भी मत्रियो को प्राधान्य देने की प्रवृत्ति करनी पडती है । क्या बताऊँ ?
जिस किसी व्यक्ति, समाज, सस्था या
धर्मादा ट्रस्ट को राजकीय बल का साथ नही, उन सबकी स्थिति कैसी बेकार है, यह तो तू जानता ही होगा ।
धर्मस्थानो को बचाने के लिये धर्मस्थानो के ट्रस्टियो को आज ऐसे मंत्रियो को किस प्रकार संभालना पड़ता है,
इसका सिलसिलाबद्ध इतिहास तुझे जानना हो,
तो आ जाना मेरे पास अकेले मे !
सुनकर तेरा रोम-रोम रो उठेगा !

महाराज साहेब,

२४

आपका पत्र पढते ही
ऑखो मे से आसू बहने लगे ।
आप तो साधु है,
सत्ता पर छगनलाल आये या मगनलाल,
आपको इससे कोई मतलब नही ।
सत्तास्थान पर आपका भक्त आये,
तो उसके पास कोई काम निकलवाने की आपकी इच्छा नही,
या सत्तास्थान पर आपको न माननेवाला व्यक्ति आये,
तो वह आपकी साधना मे कोई दखलबाजी नही कर सकता,
फिर भी आपने जिस गभीरता से
इस विषय पर मार्गदर्शन देना शुरू किया है,
अनेक भयस्थान होने पर भी जिस
तर्कबद्ध रूप से
आप पुण्यवान सज्जनो को सत्तास्थान
पर बैठने के लिये प्रोत्साहित कर रहे है,
यह पढ़ते हुए हृदय गद्‌गद्‌ हो उठा है....
पिछले पत्र मे लिखी गयी
अतिम पक्तियो ने तो कमाल कर दिया .
पढकर मन स्तब्ध रह गया है । राजकीय जान-पहचान के अभाव मे धर्मस्थानो के सज्जन ट्रस्टियो को भी यदि इतना सहना पडता हो, तो इसका अर्थ तो यही है कि यदि सज्जन कोई राजकीय लॉबियॉ न बना सके, तो भविष्य मे इन धर्मस्थानो की सारी सपत्ति सरकार अपने कब्जे मे ले लेगी । इस विषय पर आपका क्या कहना है ?

चिन्तन,

तेरी आशका बिल्कुल सही है ।
मै तो परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे बुरे दिन हमे न देखने पडे । इसी अनुसधान मे एक बात कह दूँ ?
अच्छे से अच्छे बुद्धिमान कहलानेवाले, लेखक, वक्ता व चिन्तक भी आज जोर-शोर से इसी बात का प्रचार कर रहे है कि राजनीति और धर्मनीति दोनो अलग चीज है,

इसीलिये राजनीति मे धर्म का बिल्कुल हस्तक्षेप नही होना चाहिये ।
धर्मगुरुओं को
राजनीति की बातो मे दखल नही देना चाहिये ।
परन्तु चिन्तन, तू स्पष्ट समझ लेना कि
बिना धर्म की
राजनीति कूटनीति है । यदि राजनीति को धर्म का स्पर्श नही मिले, तो वह
राजनीति प्रत्येक प्रजाजन के लिये
खतरनाक सिद्ध हुए बिना नही रहेगी ।
एक अत्यन्त गभीर बात करूँ ?
यदि उनका मानना है कि धर्मगुरुओ को राजनीति मे दखलबाजी नही करनी चाहिये
धर्मादा ट्रस्टो पर
राजनेता अपना अधिकार क्यो जमा बैठे है ?
तीर्थस्थानो के विवाद मे वे स्वय क्यो
कूद पडे है ?
प्रजाजनो को अपनी-अपनी धर्ममान्यताओ का सहज रूप से
पालन क्यो नही करने देते ?
परन्तु, इन प्रश्नो का उनके पास कोई जवाब नही ।
तुझे शायद पता नही कि
पश्चिम की राजनीति के सस्थापक माने जानेवाले
मेक्यावली जैसे ने भी शासको को चेतावनी देते हुए लिखा है कि
'प्रजा की इज़्ज़त पर
हाथ डालने की भूल कभी मत करना ।'
आज क्या चल रहा है ?
एक ही छोटी-सी बात ले ।
देश की अधिकाश प्रजा, जिसे 'माता' मानता है,
उस गाय के कत्ल को रोकने के लिये
इस देश की प्रजा को जुलूस निकालने पडते है,
आंदोलन करने पडते है,
ठेठ सुप्रिम कोर्ट तक लडना पडता है..
है उनके पास इसका कोई जवाब ?

महाराज साहेब,

आपका पत्र पढा ।
परन्तु सवाल यह है कि
धर्म के नाम पर ही जब भयकर प्रकार के अत्याचार चलते हो,
प्रजाजनो मे, आपस मे अविश्वास का
वातावरण पैदा किया जाता हो,
देश की सलामती खतरे मे हो,
तब तो शासको को इस विषय मे दखलबाजी करनी ही पडेगी न ?

चिन्तन,

इसकी ना नही ।
परन्तु इसका अर्थ यह नही कि उन्हे हमेशा के लिये
दखलबाजी करने का अधिकार मिल जाता है ।
क्या तुझे पता है ?
मतदाता नेताओ को 'लीज़' पर ताकत देते है....
और वे उसे
'ऑनरशिप' समझ बैठते है....
उनके द्वारा घोषित होनेवाली नीतियो पर तू कभी
गभीरता से विचार करेगा, तो तुझे इस बात की प्रतीति हो जाएगी
किसी धर्मादा ट्रस्ट मे,
किसी ट्रस्टी द्वारा हिसाब-किताब मे कभी गडबड हो गयी और सरकार द्वारा प्रत्येक
धर्मादा ट्रस्ट पर चेरिटी कमिश्नर की नियुक्ति कर दी गयी
व्यापारी अपनी सपत्ति घोषित करे या न करे,
नेता अपनी सपत्ति घोषित करे या न करे,
परन्तु धर्मादा ट्रस्ट की एक छोटी से छोटी चीज भी
चेरिटी कमिश्नर के ध्यान मे होनी ही चाहिये
क्या जरूरत है इसकी ?
भाविको द्वारा धर्मस्थानो को दी गयी सब चीजो की जानकारी पाकर सरकार क्या करना चाहती है ?
एकदम सीधी-सादी बात है कि सिर्फ

एकाध अध्यादेश (ordinance) के वल पर सरकार ट्रस्टो की सारी सपत्ति अपने कब्जे मे ले सकती है ।

चिन्तन, हो सकता है कि इसमे शायद तुझे अतिशयोक्ति लगे,
परन्तु वर्तमान राजनीति जिस खतरनाक मोड पर आज खडी है,
उसे देखते हुए मै तुझे कहता हूँ कि यह सब कुछ सभव है .
और इसमें भी जिस वर्ग के पास संगठन नही,
संगठन है, तो जागृति नहीं,
जागृति है, तो जुनून नही,
जुनून है, तो उसे अमल मे लाने जितना सत्त्व नहीं,
उस वर्ग की हालत तो बड़ी बुरी होनेवाली है ।
उस वर्ग को धर्मस्थान के आगे रही हुई गटर को
हटाने के लिए भी सत्ताधारियो के तलुवे चाटने पडेगे ..
धर्मस्थान के आगे गदगी करनेवालो को वहाँ से हटाने
के लिये सत्ताधारियो को 'वजन' देना पडेगा ।
धर्मस्थान की पूजी हडपने के सरकारी आदेश का
विरोध करने के लिये सुप्रीम कोर्ट मे
लाखो रुपये खर्च करने पडेगे ।
अरे, स्वय को मिले हुए अधिकारो का उपयोग
करने के लिए भी लाखो रुपये खर्च करने पडेगे ।
सक्षेप मे,
कपास के गोदाम पर चिनगारी रख दी गयी है ।
घासतेल के डिब्बे बिल्कुल बाजु मे ही पडे है...
कुछ शराबी उन डिब्बो को उठाने के प्रयत्न कर रहे है ।
ठीक उसके पास मे ही पुलिस स्टेशन है
अग्निशमन केन्द्र भी बाजु मे ही है. .
पुलिस के हाथ मे बन्दूक है...
बबे पानी से भरे हुए है और एक जागृत व्यक्ति ने तुरन्त ही
पुलिसस्टेशन व अग्निशमन केन्द्र पर फोन द्वारा
इस खतरनाक परिस्थिति के समाचार पहुँचा दिये .
अब जवाबदारी है पुलिस की, बबेवालो की !

चिन्तन,

२६

पिछले पत्र के अनुसधान मे
एक दूसरी बात कर दूँ ।
वर्तमानकालीन राज्यव्यवस्था व वैज्ञानिक अभिगमो ने
शान्ति व सलामती के,
जय व पराजय के पूरे के पूरे समीकरण बदलकर रख दिये है ।
पहले भी युद्ध तो चलते ही थे,
मारा-मारी व काटा-काटी तो उस वक्त भी चलती थी,
परन्तु
उस काल मे जय-पराजय का निर्णय 'वल'
के आधार पर होता था ।
जिसके पास ज्यादा बल होता, वह बनता विजेता
और जिसके पास कम वल होता, वह बनता पराजित ।
परन्तु आज के युग मे बल तो बन गया है गौण
और वल का स्थान लिया है छल ने !
जो छल मे पारगत, वह बनता है विजेता
और जो छल मे कच्चा, वह बनता है पराजित ।
तू चाहे महाभारत के युद्ध के प्रसग पढे या, रामायण के युद्ध की बाते पढे,
सम्राट अशोक के कलिग युद्ध की वाते पढे या
सिकदर के आक्रमण की बाते पढे,
बेशक इन सर्व स्थानो पर तुझे बल का ही बोलबाला दिखेगा ।
परन्तु आज विजेता बनने के लिये बल अनिवार्य नही,
ताकत अनिवार्य नही
सिर्फ एक ही आदमी शत्रुपक्ष की असावधानी का लाभ उठाकर
उसके स्थान पर एटमबोब फेक सकता है
और पल-दो पल मे लाखो को मौत के घाट उतार सकता है ।
बल मे तो आमने-सामने लडने की बात थी,
इसीलिये उसमे जिसकी भी मृत्यु होती,
वह युद्ध मे शामिल ही रहता,

आज बल का स्थान लिया है छल ने,
इसीलिये जरूरी नही कि लडनेवाले आमने-सामने ही हो,
आकाश मे रहनेवाला, धरती पर रहे हुओ को मार सकता है...
सागर के तल मे बैठा हुआ ..
आकाश मे उडनेवाले को उडा सकता है..
अमेरिकावाला अमेरिका मे बैठे-बैठे
जापानवाले को खत्म कर सकता है,
तो इराकवाला बकर मे वैठे-बैठे
इरानवाले को परलोक मे रवाना कर सकता है .
एक तरफ यह परिस्थिति है,
तो दूसरी तरफ इसीके फलस्वरूप ऐसी परिस्थति पैदा हो गयी है
कि जो युद्ध मे शामिल नही, जिसे युद्ध पसद नही,
उस पर भी युद्ध का असर हो रहा है .
सैनिक ही नही मरता, नागरिक भी मरता है
सशक्त ही नहीं मरता, अशक्त भी मरता है ।
सैनिको की छावनी पर ही बम नही गिरते,
अस्पतालो पर भी बम गिरते है ।
सिर्फ सैनिको की फौज पर ही बम नही बरसाये जाते,
अनाथाश्रम के बच्चो पर भी बम बरसाये जाते हैं.
पुरुष ही नही मरते, स्त्रियाँ भी मरती है. .
सिर्फ युद्ध के मैदानो मे ही खून की नदियाँ नही बहती,
बगीचे भी खून से भर जाते है.
उजाले मे ही युद्ध नही चलते, अधेरे मे भी चलते है ..
सक्षेप मे, बल का अर्थ ही है, मर्यादा जबकि
छल का अर्थ ही है निर्लज्जता, वेशर्मी !
इसी छल के आधार पर जब आज के युद्ध चल रहे हैं,
जगत के अरबों इन्सानों की सुरक्षा जब गिने चुने २०-२५ लोगो के हाथ में
ही है, तब इन २०-२५
लोगो मे कोई दुर्जन, दुष्ट या युद्धखोर न घुस जाय,
इसकी जवाबदारी क्या सज्जनो पर नहीं ?

चिन्तन,

२७

युद्ध की बात जब निकली ही है,
तब उसके बारे मे
एक दूसरी खास बात भी
इस पत्र द्वारा तुझे बताना चाहता हूँ ।
महाभारत के युद्ध मे
पाडव-कौरवो के बीच बोये गये
वैर के बीज ने महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया है.
रामायण के युद्ध मे
राम-रावण के वीच पडी दरार ने महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया है
सक्षेपमे,
पूर्व के काल मे युद्ध होते थे, वैर के कारण...
परन्तु आज युद्ध होते है, शस्त्र पड़े रहते है, इसलिये ।
शक्तिशाली देश अपने शस्त्रागार मे पडे हुए शस्त्रो को
निकालने के लिये छोटे-छोटे देशो को
आपस मे लडने के लिये भडकाते है,
घी-तेल-गुड-मिट्टी का तेल- सब्जी जैसे
रोजिंदा जीवन मे जरूरी द्रव्यो की तगी
महसूस करनेवाले ये छोटे देश अपने प्रजाजनो को ये द्रव्य मिल पाये,
इसके लिये प्रयत्न करने के वजाय
शस्त्रो की खरीदी के पीछे करोडो-अरबो रुपये उडाते है ।
कोई छोटी सी वात पकडकर युद्ध करते है.
जिसमे हजारो लोग मर जाते है, अर्थतत्र अस्त-व्यस्त हो जाता है,
पर्यावरण दूषित हो जाता है, पराजित तो रोता ही है, परन्तु
विजेता भी विजय का आनद नही ले सकता ।
इसका सबसे वडा नुकसान तो यह होता है कि
जिदगी भर एक दूसरे के पडोस मे ही रहना जिनके लिये निश्चित हुआ है, उन दोनो
देशो के प्रजाजनो मे
एक-दूसरे के प्रति धिक्कार की भावना पैदा हो जाती है ..

अविश्वास की भावना जागने लगती है
युद्ध की भयंकर करुणता यह है ।
इसमे सिर्फ इन्सानो की ही श्मशान-यात्रा नही निकलती,
अविश्वास की प्रतिष्ठा होने से
विश्वास की भी श्मशान-यात्रा निकल जाती है..
नफरत का बोलबाला होने से प्रेम का भी अग्निसस्कार हो जाता है ।
वैर की प्रतिष्ठा होने से भाईचारे का दफन हो जाता है ।
तिरस्कार को ही प्रधानता मिलने से
सौजन्यता का भी दहन हो जाता है ।
द्वेषभाव को ही गौरव मिलने से सद्भाव की भी होली सुलग उठती है
चिन्तन,
बाजु की बिल्डिंगवाले के साथ मैत्री जमाकर
तेरे बिल्कुल पास में रहनेवाले पडोसी के साथ
दुश्मनी करने की मूर्खता तो तू नही करता, परन्तु
अमेरिका-रूस के साथ मैत्री जमाने के प्रयत्न करके
भारत पाकिस्तान के साथ और
पाकिस्तान भारत के साथ
सतत युद्धो की भाषा मे ही बात कर रहा है,
यह मूर्खता न जाने क्यो, किसीकी नज़र मे आती हीं नही..
''पानी मे रहकर मगरमच्छ से वैर नही रखा जाता' क्या
आज के सत्ताधीशो को यह नीतिवाक्य मालुम नही ?
परन्तु मैने तुझे इसी पत्रमे शुरूआत मे लिखा है न कि
'आपस मे वैर है, इसलिये नही लडना है,
परन्तु शस्त्र पडे रहेते है इसलिये लडना है ।
जहॉं इसी अभिगम का बोलबाला हो, वहॉं
सत्ताधीश लडाई न करने की समझदारी रखे,
इसकी संभावना वहुत कम है ।
अब तो तेरी समझ मे आया न कि
पुण्यवान सज्जनो के हाथ मे ही इस देश की वागडोर होनी चाहिये,
ऐसा आग्रह मै क्यो कर रहा हूँ ?

महाराज साहेब,

२८

इतनी गदी राजनीति ?
एक तो कीचड, वह भी चिकना ।
एक तो चिकना, ऊपर से ढलान !
भले-भलो के आदर्शों का दफन हो जाय,
इस हद तक बिगडी हुई, सडी हुई और
सब खराबियो की उद्गमस्थानभूत मानी जानेवाली इस राजनीति मे,
सज्जन की सज्जनता टिकी रहेगी, ऐसा आप मानते है ?
वह सज्जनता टिकाने जाएगा, तो कुर्सी नही टिका सकेगा और
कुर्सी टिकाने जाएगा, तो सज्जनता नही टिका पाएगा ।
मुझे तो लगता है कि
इससे बेहतर यही है कि हम अपना-अपना सभाले,
यही बहुत है ।
समष्टि को हम सुधार नही सके और खुद का भी बिगड जाय,
ऐसा खतरा क्यो मोल लिया जाय ?

चिन्तन,

फिर से यही कायरता भरी बात ?
एक चिन्तक की बहुत ही अच्छी बात याद आ रही है ।
उसने लिखा है कि
'दुनिया मे दुष्टता के बलों को
विजयी बनने के लिये सिर्फ यही
शर्त है कि कुछ न करनेवाले भले लोग,
अच्छी तादाद मे निकले ।'
तू तेरा नबर इसीमे लगाना चाहता है न ?
लडकर दुर्जन जीत जाय, तो
उसे चुनौती देकर भी हराया जा सकता है, परन्तु
कुछ न करने द्वारा सज्जन ही जब सामने से
दुर्जन को विजय की भेट देता है,
तब क्या किया जाय ?

चिन्तन,
सिंहासन मे लगी कील चुभती है,
सिर्फ इस कारण से सिंहासन न तो तोड़ा जा सकता है,
न ही छोड़ा जा सकता है ।
या तो कील निकाल दी जानी चाहिये,
या फिर कील बराबर कर देनी चाहिये ।
याद रखना, मैने सिर्फ सज्जन को ही राजनीति मे जाने की वात नही की है, परन्तु
पुण्यवान सज्जन को राजनीति मे जाने की बात की है ।
यदि पुण्यवान सज्जन राजनीति मे प्रवेश करता है, तो
उसके प्रभाव मात्र से आसपास का वातावरण निर्मल बनने लगता है ।
दुर्जन को या तो दुर्जनता अपनाने का मन ही नही होता,
या फिर उसकी दुर्जनता को सफलता नही मिलती ।
भयकर आग की लपटो के
बीच भी बबावाला सलामत रह सकता है, तो
गदी राजनीति के बीच भी पुण्यवान सज्जन को अपनी सज्जनता
टिका पाने मे कोई बाधा नही पहुँचती ।
तू शायद नही जानता,
परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि **सज्जनता व साहस के साथ**
जो अनिष्टो के सामने लड़ता है,
उसकी निष्फलता की भी लोग पूजा करते है ।
इसीलिये तुझे फिर से कहता हूँ कि
राजनीति की भयकर कोटि की गदगी की
तू चिन्ता मत कर ।
बस एक ही चिन्ता कर,
सज्जनता को पराकाष्ठा पर ले जाने की ।
यदि इसमे तुझे सफलता हासिल हो गयी,
तो मुझे यकीन है कि
तू कभी निष्फल नही होगा ।
और आखरी बात.. ज़िदगी को पीछे से समझना है, परन्तु
आगे से जीना है । इसका तात्पर्य तू समझ लेना ।

२९

महाराज साहेब,

आपके पत्रने सब गलतफहमियाँ दूर कर दी ।
मुझे तो लगता है कि अपने पर
होनेवाले अन्याय का प्रतीकार
निजी जीवन मे तो आराम से हो सकता है, परन्तु
सार्वजनिक तौर पर इसका प्रतीकार करना हो, तो
या तो संगठन चाहिये,
या अधिकार चाहिये ।
कही पर पढा था कि
'कलौ सघे शक्ति'
कलियुग मे सगठन मे शक्ति है ।
ओहदे पर पहुँचनेवाले के पास अधिकार होते है और
अधिकार सगठन से ही प्राप्त होते है ।
इसका मतलब तो यही हुआ न कि किसी भी क्षेत्र मे अग्रस्थान पर
पहुँचने के लिये Party वनाये विना चलता ही नही
और Party वनाने जाये,
तो कही न कही तो गलत समाधान करना ही पडता है .
अपनी Party मे खराब व्यक्ति हो,
उसे भी अच्छे का लेवल लगाना पडता है ।
जनसमूह मे उसे 'अच्छे' के रूप मे पेश करना पडता है ।
और प्रतिपक्ष मे सचमुच कोई अच्छा व्यक्ति हो, फिर भी उसे
खराब मानकर लोगो के समक्ष 'खराब' ही वताना पडता है.
इस अपाय से वचने का विकल्प वताईये न !

चिन्तन,

तेरी बात सही है, परन्तु इस सभवित अपाय से वचने का
श्रेष्ठ विकल्प तो यह है कि Party के वदले
व्यक्ति को ही महत्ता देना ।
अर्थात् तुझे ओहदे पर जाना हो, तो
Party को पसद न करके तेरे व्यक्तित्व को ही निखारना ।

यदि तेरे व्यक्तित्व का सुन्दर निर्माण होता जाएगा,
तो अपने आप ही ओहदे तक पहुँचने
का तेरा रास्ता साफ होता जाएगा ।
अल्प प्रयास से, बिना किसी छल-प्रपच के,
किसीको भी पछाडने की चेष्टा किये बिना तू लक्ष्यस्थान तक
पहुँचने मे सफल हो जाएगा ।
यदि तुझे किसीको पसद करके ओहदे पर भेजना हो, तो
Party को पसद न करके अच्छे व्यक्ति को ही पसद करना ।
कम से कम तेरे अन्त करण को दगा देने से तो तू बच जायेगा ।
एक बात खास ध्यान मे रखना कि
भीड़ हमेशा तलहटी पर ही ज्यादा दिखती है,
शिखर पर तो कोई अकेला-दुकेला व्यक्ति ही मिलता है...
और टेगोरजी की यह बात भी सतत नज़र के सामने रखना कि
इन्सान में दयालुता है, इन्सानो में क्रूरता है ।
इसका अर्थ विल्कुल स्पष्ट है ।
सख्यावृद्धि का आकर्षण सिद्धान्तो के विषय मे
कुछ न कुछ छूट रखवाकर ही रहता है ।
एकान्त मे दयालु दिखनेवाला इन्सान समूह मे शक्तिशाली हो जाता है ।
और समूह की एक कमजोरी है कि इसमे अच्छा तत्त्व
दब जाता है और खराब तत्त्व बाहर आता है ।
वास्तविकता यह होने पर भी तुझे हताश होने की कोई जरूरत नही ।
इस जगत का एक बडा वर्ग तो
अधेरे मे खडे रहकर ही पत्थर फेकता है ।
वहाँ यदि प्रकाश हो जाय, तो वह वर्ग भागे विना नही रहता ।
प्रकाश की एक ही किरण,
घोर अधकार को जीतने के लिये काफी है,
दवा की एक ही गोली, ढेरो रोगो को मिटाने के लिये काफी है ।
सज्जन की एक ही आवाज़, दुर्जनो की ललकार के लिये काफी है ।
आवश्यक्ता है निष्ठा की और निष्ठा के अनुरूप प्रयास की ।
फिर तो सफलता दूर नही !

महाराज साहेब !

३०

आपके पत्र से बहुत सुन्दर समाधान मिल गया ।
यह पत्र-व्यवहार शुरू हुआ,
तबसे मै इसी उलझन मे था कि
पसद का सिक्का किस पर लगाया जाय ?
Party के लिये दिल नही मानता
और व्यक्ति पर सफलता मे शका रहा करती है ।
आपने ठीक ही बताया कि 'अच्छे'
को कही भी गौण न बनने दिया जाय,
क्योंकि सज्जनता को तो हमने इस स्थान तक जाने की आधारशिला बनाया है ।
वही गौण बन जाय और ताकत ही मुख्य बन जाय
तो यह व्यवस्था तो आज भी चालु ही है ।
नही, नही, केवल ताकत ही नही, साथ मे सज्जनता भी चाहिये ही ।
और दो मे से यदि एक को पसद करने की वात आये,
तब सज्जनता ही पसन्द करनी चाहिये ।
चाहे इसमे जीत न मिले, फिर भी,
सज्जनता विना की ताकत तो कदापि पसन्द नही करनी चाहिये
ऐसा मै समझा तो हूँ, परन्तु अभी मन मे एक सवाल उठता है कि
सत्तास्थान पर पहुँचने की जो व्यवस्था है, वह व्यवस्था यदि ऐसे ही
रहनेवाली हो, तो ऐसा कोई सुधार शक्य है कि
जिसमे सज्जन के पास ही ताकत आती जाय ?
चिन्तन,
एक छोटा -सा भी महत्त्वपूर्ण सुधार हो जाय, तो
वर्तमान राज्यव्यवस्था मे आमूलचूल परिवर्तन हो जाय ।
वह सुधार यह रहा - **जिनके भी पास मतदान का अधिकार है,**
उन सवके लिये मतदान यदि अनिवार्य कर दिया जाय,
मतदान न करनेवालो पर कानूनी
कदम उठाने की घोषणा हो जाय,
तो सारी राज्यव्यवस्था मे ऐसी उथल-पुथल मच जाय,

किसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

तू शायद ऐसा पूछे कि

सिर्फ मतदान अनिवार्य बनाने से

इतना सारा परिवर्तन किस तरह हो सकेगा ?

तो ले, सुन इसका जवाब ।

आजकल जो मतदान होता है, उसमे शिक्षित वर्ग, श्रीमत वर्ग
और सज्जन वर्ग करीब-करीब शामिल नही होता, यदि होता है,
तो भी उसकी सख्या बहुत कम है ।

मतदान के समय यह वर्ग या तो
घर मे बैठकर टी वी आदि देखने मे समय बिता देता है,
या तो महाबलेश्वर या माथेरान की सैर करने निकल पडता है ।
या तो फिर सामाजिक या धार्मिक कार्यो मे व्यस्त बन जाता है ।

और जो वर्ग मतदान मे शामिल होता है,
वह या तो अर्धशिक्षित है, अनपढ है,
या प्रलोभनो मे लुभा जानेवाला है,
उसके पास दीर्घदर्शिता का अभाव है,
लबे समय के लाभ-नुकसान को समझ पाने की
विशिष्ट समझ उसके पास नही ।

उम्मीदवारो द्वारा दिये जानेवाले वचनो के खोखलेपन को चुनौती
देने की क्षमता उसके पास नही ।

मैं जो कहना चाहता हूँ, वह तू समझ सकता है ।

जिसके पास समझ है, वह मतदान में शामिल नही होता और
मतदान में शामिल होता है,
उसके पास हित-अहित को समझ सके, ऐसी सूक्ष्म प्रज्ञा नहीं ।

इसीका यह दुष्परिणाम आया है कि एक तरफ
सज्जनो के पास ताकत आयी ही नही है । अन्य सज्जनो ने
इकट्ठे होकर भी एक सज्जन को ताकतवर नही बनाया है .
तो दूसरी तरफ ताकत हासिल करने मे दुर्जनो को कोई तकलीफ नहीं ।
पुलिस पुलिसचौकी मे ही बैठा रहे, फिर गुडो को लूटपाट करने मे
वैसे भी तकलीफ पडने का सवाल ही कहाँ रहता है ?

महाराज साहेब,

आपने तो कमाल की बात की है.
आपके द्वारा बताये गये विकल्प
पर जब खूब गभीरता से
विचार किया, तब एक बार तो
ऐसा लग ही गया कि
यदि यह विकल्प अमल मे लाया जाय,
तो सत्तास्थान पर आनेवाला सारा वर्ग ही बदल जाय
क्या धनवान मतदाता
गुंडे को वोट देगा ?
क्या शिक्षित मतदाता
अगूठाछाप को सत्तास्थान पर भेजेगा ?
क्या सज्जन मतदाता
दुर्जन को गद्दी पर विठायेगा ?
विल्कुल शक्य नही
शायद चुनाव-प्रणाली न भी बदले,
परन्तु इसमे इतना सुधार आ जाय,
तो भी सारा देश ढेर-सारे अनिष्टो से बच जाय, इस बात मे कोई शका नही ।
आपने यह सूचन शायद सिर्फ राजनीति के लिए ही किया है,
परन्तु मै स्वय तो इस मान्यता पर पहुँचा हूँ कि
जहॉ भी Selection के बदले
election प्रथा है,
उन सव सस्थाओ मे यह विकल्प अमल मे लाना चाहिये ।
जिस किसीके हाथ मे मतदान का अधिकार है,
उस अधिकार का उपयोग उसे अनिवार्य रूप से करना ही पडता है ।
न करे,तो उस सस्था मे वह रह नही सकता ।
अपने-आप ही उसकी सदस्यता रद्द हो जाती है ।
महाराज साहेब, प्रश्न तो यह उठता है कि
सत्तास्थान पर वैठा हुआ वर्ग इस विकल्प के विषय मे

क्या विचार भी नही करता होगा ?
चिन्तन,
पुलिसचौकी मे बैठे हुए पुलिस को अनिवार्य रूप से
पुलिसचौकी से बाहर आना ही चाहिये,
ऐसा ज़िहाद यदि गुंडे छेड़े,
तो
सत्तास्थान पर बैठे हुए सत्ताधीश यह ज़िहाद छेड़े कि
निष्क्रिय बने हुए मतदाता को अनिवार्य रूप से
मतदान के लिये बाहर आना ही चाहिये ।
इसका कारण स्पष्ट है ।
उन लोगो के हाथ मे सत्ता रहेगी ही नही,
वे लोग बे-रोकटोक काले काम कर ही नही सकेगे ।
उन लोगो की तानाशाही चल ही नही सकेगी ।
क्या बताऊँ तुझे ?
आज के सत्ताधीशो ने तो एक अजीब खेल शुरू किया है ।
नोट लेते है अमीरो के पास से, उन्हे अच्छे प्रमाण मे
बॉटते है गरीबो मे, और बदले मे वोट लेते है गरीवो के पास से ।
सक्षेप मे,
अमीरो के नोट व गरीबो के वोट यही तो है सत्तास्थान तक
पहुॅचने का उनका एकमात्र चालकबल, उस चालकवल को तोडने की
भूल सत्ताधीश करे ?
तू सिर्फ राजनीति की ही बात क्या करता है ?
छोटी-सी सस्था मे तो इस विकल्प को अमल मे लाकर दिखा !
याद आ जायेगी ।
सत्तास्थान पर बैठे हुए सब यही चाहते है कि
मतदान के अधिकार का उपयोग सब मतदाता करे ही नही,
जनरल मीटिग मे सब सदस्य उपस्थित रहे ही नही ।
और तुझे फिर एक वार कह दूँ कि सज्जनो का जैसा ठडा रूख है,
वह देखने पर सत्ताधीशो की गद्दी को कोई खतरा
आज तो नही, परन्तु कभी भी नही !

महाराज साहेब,

आपकी आगाही सच निकली
एक सामाजिक सस्था मे
मै ट्रस्टी पद पर हूँ ।
तीन दिन पहले ही हमारे ट्रस्ट बोर्ड की मीटिग मे
मैने यह बात रखी .
'अपनी सस्था के कुल १४२ सदस्य है ।
उन सवके नाम पर एक परिपत्र भेजकर
उन्हे स्पष्ट बता दे कि
सस्था की जनरल मीटिग मे जो भी सदस्य अनुपस्थित रहेगे,
उनकी सदस्यता हमेशा के लिये रद्द कर दी जाएगी '
मै आगे कुछ बोलूॅ, इससे पहले तो हमारे अध्यक्ष महोदय ने
मुझे रोक दिया, 'बरसो से इस सस्था की प्रणाली यह है कि
जनरल मीटिग की जानकारी सवको दे दी जाय उसमे आना या
न आना, यह निर्णय करने का काम सदस्य का है । उसमे आने के
लिये किसी पर दवाव कैसे डाला जा सकता है ?' इस अध्यक्ष को मै पहचानता हूँ
'रिश्वत' खाये विना उसे नही चलता
हिसाव-किताव मे गडवड, काम मे आलसी
यह है उसका स्वभाव ।
मेरा यह भी अनुभव है कि जव कभी जनरल मीटिग
होती है, तव सस्था के आदरणीय व शिष्ट सदस्य हाजिर होते ही नही
और अध्यक्ष अपने साथियो को हाजिर किये बिना नही रहता
अध्यक्ष की ओर से, जो भी प्रस्ताव पेश होते है,
उन पर उसके ये साथी सम्मति का सिक्का लगा देते है
और वहुमति से वे सव प्रस्ताव मजूर हो जाते है.
इसमे भी करुणता तो तव पैदा होती है कि
जब मीटिग मे पास किये गये प्रस्तावो की प्रति सब सदस्यो
तक पहुँचती है, तव जिनका नबर सज्जन मे लगता है, ऐसे सदस्य
इन प्रस्तावो के खिलाफ कुढन निकालते है ।

'भला ऐसा कही चलता होगा कि अध्यक्ष अपनी मर्जी मे आये, वैसे
प्रस्ताव अपने पर थोप दे ?
इस प्रकार चाहे जैसे प्रस्ताव रखने का इसे भला क्या अधिकार है ?
एक बार तो इस अध्यक्ष को भी मजा चखाना चाहिये !'
महाराज साहेब,
मुझे खेद के साथ कहना पडता है कि आप बिलकुल सही है .
सज्जनो की घोर निष्क्रियताने, दुर्जनो को अपनी दुर्जनता का आतक
फैलाने के लिये खुला मैदान दे दिया है ...
कौमी दंगेबाजी के समय यदि पुलिस निष्क्रिय रहे, तो
प्रजा गृहमंत्री का इस्तीफा मांगने के लिये आवाज उठाती है,
परन्तु सारी प्रजा का भविष्य निश्चित करनेवाले चुनाव जब आते है,
तब उम्मीदवारो की पसंद के विषय मे
या अपने मतदान के अधिकार का इस्तेमाल करने के विषय मे
सर्वथा निष्क्रिय रहनेवाले सज्जनो को कोई
कुछ पूछने के लिए भी तैयार नही....
महाराज साहेब, इस वक्त मै शायद आवेश मे हूँ।
मेरा खून गरम हो गया है ।
मुझे तो विचार आता है कि
करोड़ो लोगो के सुन्दर भावि के प्रति इस हद तक ठडा रूख रखनेवाले
सज्जनो को क्या जेल मे बन्द नही कर देना चाहिये ?
अथवा तो चुनाव के वक्त मेरे जैसे
१००/१०० युवको के समूह को सज्जनो के घर जाकर,
उन्हे घर से बाहर निकालकर
जबरदस्ती भी मतदान के लिये तैयार नही करना चाहिये ?
आप कहते है कि पुण्यवान सज्जनो को राजनीति मे जाना ही चाहिये ।
मै कहता हूँ,
पहले नबर मे, मतदान के लिये सबको
घर से बाहर निकलना ही चाहिये ।
यदि इसके लिए भी उनके मनमे कोई उत्साह नही है, तो फिर
आगे की तो बात ही क्या की जाय ?

चिन्तन; **३ ३**

तेरे आक्रोश को मै समझ सकता हूँ ।
तेरे शब्दो के पीछे छिपी व्यथा को
मै बराबर पढ सकता हूँ ।
तेरे आवेश के पीछे रही हुई शुभकामना
को मै बराबर देख सकता हूँ ।
इस अनुसधान मे मै तुझे यही कहना चाहता हूँ कि
हताश होने की कोई ज़रूरत नही .
कवि ओलियट का यह वाक्य
तुने नही पढा ?
उसने साफ लिखा है कि FOR US THERE IS ONLY TRYING
अपने हाथ मे तो एक ही वात है- प्रयत्न करते रहना ।
मरीज अस्पताल मे आता है, क्या करता है डॉक्टर ? प्रयत्न ।
वकील के पास मुवक्किल आता है, क्या करता है वकील ? प्रयत्न ।
दुकान पर ग्राहक आता है, क्या करता है व्यापारी ? प्रयत्न ।
शिक्षक के पास विद्यार्थी पढने जाता है, क्या करता है शिक्षक? प्रयत्न ।
अरे ! प्रवचन मे श्रोता आते है, हम क्या करते है ? प्रयत्न
बस, यही तो एक चीज अपने हाथ मे है ।
परिणाम की ज्यादा
आशा न रखना और
सम्यक् प्रयत्नो मे पीछे न हटना ।
मै तुझसे यही कहना चाहता हूँ ।
मै भी सिर्फ प्रयत्न ही करता हूँ,
तो तू भी प्रयत्न ही करते रहना ।
हाँ, परिणाम के बिना तुझे चैन न पडता हो, तो
यह परिणाम तेरे मे ला ।
बन जा सज्जन,
हो जा सगठित और फिर
हो जा सक्रिय !

देख, कैसा आनन्द आता है !
चिन्तन,
एक छोटी-सी, परन्तु महत्त्वपूर्ण वात की
ओर तेरा ध्यान खास खीचना चाहता हूँ..
समष्टि के लिये सत्याग्रही बनने से पहले
स्वयं के लिये सत्यग्राही बनना कभी मत भूलना ।
क्योकि सत्य की प्रतिष्ठा करने मे भी एक वडा खतरा है ।
खुद के जीवन मे सत्य की प्रतिष्ठा करनी नही, शक्ति होने पर भी इस
विषय मे सर्वथा उपेक्षा ही करना
और समष्टि मे सत्य की प्रतिष्ठा के लिये
कूद पडना, यह वर्तमान युग को लगा हुआ भयंकर रोग है ।
तूने यह पक्ति पढ़ी है न ?
'सिद्धान्त की रक्षा के लिये लोग लडने को जितने उत्सुक है,
उतने सिद्धान्त को जीने के लिये नही ।'
इस करुणता का सर्जन तेरे लिये न हो, यही मेरी अपेक्षा है ।
'मै हताश हो गया हूँ'.. ऐसा रोना कभी मत रोना ।
दूसरों की टीका से
हमें सन्मार्ग छोड़ देने की गलती नही करनी है,
तो अपेक्षित परिणाम के अभाव में भी
हमें सन्मार्ग छोड़ नही देना है ।
शुभ निष्ठा के साथ,
सम्यक् समझपूर्वक,
सबके हित को हृदय मे समाकर,
गलती का पता चलते ही वापस लौटने की तैयारी के साथ,
हमे सम्यक् पुरुषार्थ करते रहना है ।
और न जाने
कब, कहाँ, किसके द्वारा सम्यक् विचारो के वोये हुए वीज
उग जायेंगे और समस्त मानवजाति को,
सम्यक् आचार-उच्चार-विचार की हरियाली से
व्याप्त बना देगे ! वस, आगे बढता जा... मजा ही मजा है ।

महाराज साहेब,

३४

आपके पत्र ने मुझे आक्रोश व हताशा,
दोनो मे से बाहर निकाल दिया ।
और उसमे भी सत्याग्रही बनने से पहले
सत्यग्रही बनने की बात करके तो
आपने मुझ पर कितना उपकार किया है,
यह तो शायद आप भी नही जानते ।
कुछ अशो मे, इस बात मे मै कच्चा ही था ।
'दुनिया मे प्राणो की आहुति देकर भी
सत्य की प्रतिष्ठा होनी ही चाहिये ।'
यह थी मेरी मान्यता, परन्तु आपने बढिया सलाह दी कि
पहले खुद के जीवन मे सत्य की प्रतिष्ठा,
फिर ही आगे बढने की बात ।
इस विषय पर आप थोड़ा और प्रकाश डाले,
ऐसी प्रार्थना करता हूँ ।

चिन्तन,

व्यवहार मे भी एक बात तो स्पष्ट दिखती ही है कि
नदी मे डूबते हुए को बचाने वही जाता है,
जिसे खुद को तिरना आता है ।
आग मे फॅसे हुए को वचाने वही जाता है,
जिसे खुद को आग मे से कैसे वचा जाय, इसकी जानकारी है ।
दसवी कक्षा के विद्यार्थी को पढाने की बात वही करता है,
जिसे खुद को दसवी के अभ्यास-क्रम की जानकारी है
तो,
बस, यही बात यहॉ भी समझनी है ।
निष्ठा के मामले मे यदि तू खुद ही टूटा हुआ है
तेरा मन ही यदि इसके लिये दुविधा मे फॅसा हुआ है,
सामने प्रलोभन दिखते ही यदि निष्ठा खत्म हो जाती है,
लालच के आगे यदि तू सचमुच लाचार बन ही जाता है,

तो मेरा कहना है कि
फिलहाल तू जहाँ है, वहीं खड़ा रह जाना ।
आगे बढ़ने की तेरी चेष्टा,
दुनिया को तो लाभ करना हो तो करेगी परन्तु
तुझे स्वयं को तो नुकसान पहुँचाये बिना नही रहेगी ।
कुमारपाल महाराजा का जीवनप्रसग तो तुझे पता है न ?
वे धर्मसाधना मे बैठे थे और उनके शरीर पर मकोडा चढ गया,
उसे दूर करने के पूर्ण प्रयन्त करने पर भी
जब सफलता न मिली,
तब उन्होने छुरी मगवाकर अपने शरीर के जिस भाग पर
मकोडा चिपका हुआ था, वह सारा भाग काट डाला .
चमडी काटकर भी मकोडे को बचा लिया ।
चिन्तन,
उन्होने स्वजीवन मे की थी जीवदया की प्रतिष्ठा,
इसीका यह प्रभाव था कि अपने अठारह देश के साम्राज्य मे
लोगो के द्वारा जीवदया का पालन कराने मे सफलता मिली थी ।
सदेश स्पष्ट है .. पहले सत्यग्राहिता और बाद मे ही सत्याग्रहिता ।
जहाँ तक मेरा ख्याल है, वहाँ तक सुकरात ने लिखा है कि
'हे प्रभु ! सारी दुनिया को सुधारना,
परन्तु इसकी शुरूआत तो मेरे से ही करना !'
बस, तुझे यही करना है । हल्दी के रग जैसी सज्जनता को
पलाश के रग जैसी बना दे.
कच्चे धागे से बधे हुए सगठन को,
तार से बधी हुई गेद जैसी
और नन्हे बच्चे की तरह धीमे कदम
भरती हुई सक्रियता को
जेट विमान की गति जैसी बना दे..
फिर,
न तेरा मन आक्रोशसभर वन सकेगा और
न ही तेरा चित्त हताशाग्रस्त वन सकेगा ।

३५

महाराज साहेब,

आपने मुझे वक्त पर चेतावनी दी,
इसके लिये आपका खूब-खूब आभार ।
दोहरे मोर्चे पर
आज से जंग शुरू करने का निश्चय किया है ।
मेरी सज्जनता को परिपक्व बनाना और
परिपक्व बन चुके सज्जनो को मैदान मे लाना ।
मुझे श्रद्धा है कि
इन दोनो बातो मे मुझे सफलता मिलकर ही रहेगी ।
हालाँकि,
एक बात मै यह जानना चाहता हूँ कि
व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण मे जैसे उसके घर का वातावरण,
उसे मिलनेवाला शिक्षण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है,
उसी प्रकार समूह के व्यक्तित्व के निर्माण के लिये
कौनसे परिबल खूब महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है ?

चिन्तन,

तेरा सवाल बढिया है, अब सुन इसका जवाब !
पहली बात तो यह है कि
पैसो का समूह ही जैसे रुपया बनता है,
बिन्दुओ का समूह ही जैसे सागर बनता है,
समय का समूह ही जैसे घटा कहलाता है;
उसी प्रकार
व्यक्तियो का समूह ही प्रजा बनती है ।
इसका अर्थ यह है कि यदि व्यक्ति ही बिगडा हुआ है, तो
प्रजा भी बिगडी हुई ही होगी और यदि प्रजा सुधरी हुई होगी, तो
व्यक्ति भी सुधरे हुए होगे ।
यह बात मै तुझे इसलिये कहना चाहता हूँ कि
निजी सद्गुण के बिना राष्ट्र मे सार्वजनिक सद्गुण नहीं होते और
सार्वजनिक सद्गुण ही तो

प्रजातंत्र की नींव हैं ।

तुझे शायद पता न हो, परन्तु इस देश के प्रत्येक प्रजाजन के पास
दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय सद्‌गुण थे...
एक सद्‌गुण था,
'सत्यमेव जयते'
दूसरा सद्‌गुण था,
'अहिंसा परमो धर्मः'
विभिन्न जातियो व विभिन्न धर्मोवाले इस देश मे शायद
कुछ विषयो मे मतभेद थे, और आज भी है ।
कोई मन्दिर को मानते है, तो कोई गुरुद्वारे को..
कोई बिंदी को मानते है, तो कोई तिलक को..
कोई यात्रा को महत्त्व देते है, तो कोई प्रार्थना को
किसीको साकार उपासना पसद है, तो किसीको निर्गुण उपासना
परन्तु
सत्यमेव जयते और **अहिंसा परमो धर्मः** मे कोई मतभेद नही था ।
ये दो सद्‌गुण राष्ट्रीय सद्‌गुण के रूप मे घोषित हुए थे
औसत प्रजा
विपरीत परिस्थिति मे भी झूठ बोलने के लिये
तैयार नही होती थी और
हो सके वहाँ तक जीवन में हिंसा को टालती थी ।
और इसीका यह प्रभाव था कि
कुत्ते को रोटी,
कबूतर को दाना,
चीटी को शक्कर,
मूक पशुओ की सभाल, . यह सब यहाँ बिल्कुल सहज था
तू शायद पूछेगा कि आप 'था' शब्द-प्रयोग करने के वदले
'है' शब्द का प्रयोग करो, तो क्या हर्ज़ है ?
क्योकि इस देश मे भिन्न-भिन्न जाति व
विभिन्न धर्मोवाले प्रजाजन तो आज भी विद्यमान है !
इसका जवाब अगले पत्र मे. ...

चिन्तन,

'सत्यमेव जयते' और 'अहिंसा परमो धर्मः'
ये दो सूत्र तो आज भी राजनेता
छूट से इस्तेमाल करते है
राष्ट्रीय स्मारको पर और
राष्ट्रीय सिक्को पर ये सूत्र आज भी अकित है ।
परन्तु फर्क इतना पड गया है कि
ये दोनो सूत्र प्रजाजन के निजी जीवन के अभिगम के रूप मे
इस देश को मिले थे,
आज ये सूत्र रह गये है, परन्तु इनके अमल के नाम पर शून्य है
हालॉकि फर्क सिर्फ एक 'अ' मे ही पडा है...
'अहिसा' मे जो 'अ' है, वह 'सत्य' के आगे लग गया है ।
'सत्यमेव जयते' का स्थान ले लिया है
'असत्यमेव जयते' ने और
'अहिंसा परमो धर्मः' का स्थान ले लिया है
'हिंसा परमो धर्मः' ने ।
एक क्षेत्र तो तू ऐसा दिखा कि जहॉ सत्य जीतता हो ।
पैसे कमाने है ?
व्यवहारकुशल (?) बनो .
हिसाब की बही पास करानी है ?
थोडे उदार (?) वनो .
कॉलेज मे एडमिशन चाहिये ?
थोडा वजन (?) रखो.
गैरकानूनी ढग से इमारत बनवानी है ?
थोडी सी समझदारी (?) दिखाओ..
घटिया माल का निर्यात करना है ?
थोडे दीर्घदर्शी (?) बनो ?
खून करने पर भी निर्दोष छूटना है ?
हाथ खुले रखने की हिम्मत (?) लाओ . .

हॉ, इसका अर्थ यह नही कि कही भी सत्य बोला ही नही जाता
और सत्य जीतता ही नही ।
नही, नही, कही-कही सत्य बोला भी जाता है
और सत्य जीतता भी है,
परन्तु सत्य बोलने का स्थान शायद झोपडे है,
बंगले नही....
और सत्य की जीत भी सैकडो की है, लाखो की नहीं.. छोटी है,
बडी नहीं । इस सत्य की जीत को अपवाद कहा जा सकता है,
परन्तु नियम के रूप मे घोषित नही किया जा सकता ।
क्या तुने यह वाक्य पढा है ?
'सत्य तो सरल इन्सान भी बोल सकता है, कमज़ोर इन्सान भी वोल सकता है,
अनपढ इन्सान भी बोल सकता है, परन्तु
सफाई के साथ झूठ बोलने के लिये थोडी बुद्धि होनी जरूरी है .
थोड़ी व्यवहारकुशलता होनी जरूरी है ।'
आज के वैज्ञानिक युग मे
सरलता की कोई कीमत नही,
व्यवहारकुशलता का ही बोलबाला है ।
निरक्षर तिरस्कार का पात्र है, साक्षर का बोलबाला है ।
कमज़ोर को कोई नही पूछता, साहसी को ही एवॉर्ड मिलता है ।
सवेदनशीलता को कोई नही देखता,
लोग बुद्धि के पीछे पागल बनते है ।
अब तू ही बता इसमे सत्य कहॉ से जीते ? और सत्य कैसे जीये ?
चिन्तन,
आज की समस्या वुद्धि के अभाव या अल्पता की नही,
परन्तु बुद्धि के दुरुपयोग की है ।
बुद्धि का अभाव या वुद्धि की अल्पता
सत्य के लिये जोखिमी नहीं, परन्तु वुद्धि का दुरुपयोग ही असत्य
की एक मात्र सुरक्षित दीवाल है ।
आज सर्वत्र कम्प्युटर का ही वोलवाला है और
कम्प्युटर संवेदनशील हो, ऐसा तो आज तक नही सुना है ।

चिन्तन,

३७

आज सत्य का स्थान जैसे
असत्य ने ले लिया है,
उसी प्रकार अहिंसा का स्थान
आज हिंसाने ले लिया है...
मच्छर बढ गये है ? मारो .
कुत्तो की तकलीफ है ? मारो. .
सूअर परेशान करते है ?
खत्म करो
विदेशी मुद्रा पानी है ?
पशुओ को मारो ।
गाय-भैस बेकार हो गये है ?
कत्लखाने भेज दो ।
डॉक्टरी लाईन लेनी है ?
मेढक मारो...
बच्चा नही चाहिये ?
गर्भपात करा दो . सशोधन करना है ?
बन्दरो को मारो ।
प्लेग का शक है ? चूहो को खत्म कर डालो ।
आगन मे सॉप निकला है ?
खत्म कर दो धधे मे कोई प्रतिस्पर्धी पैदा हुआ है ?
उसे उडा दो
सक्षेप मे, एक ही बात है ..
तुम्हारे स्वार्थ मे जो भी प्रतिबन्धक बनता है अथवा तो किसी भी
प्रकार से तुम्हारा स्वार्थ पुष्ट होता है, तो इसके लिये तुम्हे जिसे भी
खत्म करना हो, उसे बिना किसी हिचकिचाट के खत्म कर ही डालो ।
तुझे शायद पता न हो, परन्तु आज दुनिया मे 'स्वैच्छिक मृत्यु' को
कानूनी बल देने की बात आज के बुद्धिजीवी जोर-शोर से कर रहे है ।
'यदि मरीज स्वयं ही खुशी से (?)

मरने के लिये तैयार है, तो फिर
दवाओ के जोर पर, भयकर पीडा होने पर भी
उसे क्यो जीने दिया जाय ?
जीवन पर यदि व्यक्ति का अपना अधिकार है, तो
मरण पर भी उसका अधिकार क्यो मान्य न किया जाय ?
उसे खुद को यदि मरना ही है, तो उसे मरने दिया जाय और
इसके लिये हमे उसे जरूरी सहयोग (?) देना चाहिये ।'
यह है- स्वैच्छिक मृत्यु की परिभाषा ।
क्या तू इसमे रही हुई भयकरता को समझ सकता है ?
'पिताजी की बीमारी बहुत लबी चल रही है
व्यवस्थित इलाज कराने पर भी कोई फर्क नही.
इसके कारण, धधे पर बराबर ध्यान नही दिया जाता
दे दो उन्हे ज़हर का इजेक्शन
और उनकी मृत्यु को घोषित कर दो स्वैच्छिक मृत्यु !'
'तुम्हारे पैसे जिसने दबाये है, वह तुम्हारे घर मे आया है
कर दो दरवाजे बन्द, दे दो उसे जहर का इजेक्शन,
घोषित कर दो कि उसे जोरदार एटेक आ गया था,
बेचारा दर्द के मारे तडप रहा था,
उसने स्वय कहा कि मुझे जहर का इजेक्शन दे दो.
और हमने तुरन्त डॉक्टर को बुलाकर उसकी इच्छा पूरी की थी ।
चिन्तन,
अनचाही पत्नी,
अनचाहा बच्चा,
धंधे की पोल जान गया हो, ऐसा ग्राहक,
लफड़े जान गया हो, ऐसा मित्र,
इन सबको स्वैच्छिक मृत्यु के नाम पर परलोकमें रवाना करने का
लायसन्स देनेवाला यह कायदा है । सक्षेप मे,
खुद मजे से जीये ।
इसमे कोई बीच मे आये, तो उसे खत्म कर दो...
क्योकि **'हिंसा परमो धर्मः'**

चिन्तन,

पिछले पत्र मे हिसा के विषय
मे लिखी गयी बातो मे शायद
तुझे अतिशयोक्ति लगे,
परन्तु मेरा कहना है कि यह तो 'अल्पोक्ति' है ।
मौज-शौक के साधनो मे,
खाने-पीने की चीजो मे,
धधे की सामग्रियो मे चलनेवाली कातिल
हिसाओ से तो मै और तू
शायद सर्वथा अनभिज्ञ है..
गरीबी के कारण यहाँ किडनी बेची जाती है,
यह बात तो समझी जा सकती है,
परन्तु दर्दियो को मालुम न हो, इस तरह भी सैकडो लोगो की किडनी
अस्पतालो मे निकाल दी जाती है,
और इसका जोरदार धधा चलता है
नन्हे-नन्हे मासूम बच्चो के अगोपागो का भी
यहाँ बडा बाजार है ..
सक्षेप मे, **ज़ालिम हिंसाने**
इस देश की प्रजा को कठोर बना दिया है,
तो बात-बात पर झूठ बोलनेवाली
इस देश की प्रजा बेशर्म बन गयी है....
अहिसा और सत्य, ये दो राष्ट्रीय सद्‌गुण आज उपहास का कारण बन रहे है ।
सत्य को रूढिवादिता और अहिसा को कायरता माना जाता है.
इस अनिष्ट के पीछे सबसे बडा हाथ
तो आज के राजनेताओ का है .
उन्होने ही असत्य को और हिसा को प्रोत्साहन दिया है .
असत्यवादियो और हिसको को उन्होने एवार्ड दिये है
मदिर बनवाने की परवानगी देने से पहले वे
किसीकी भावना को ठेस न पहुँचे, इसका ध्यान (?) रखते है,

परन्तु इस देश के लाखो लोग विरोध मे होने पर भी
जगी कत्लखाने खोलने की इज़ाज़त देते वक्त वे
बिल्कुल नही हिचकिचाते ।
तुझे सिर्फ एक छोटा-सा प्रयोग करने का सूचन करता हूँ ।
तू जिस बिल्डिंग मे रहता है, उस बिल्डिग के १० लडको को बुलाकर
सिर्फ इतना पूछ लेना कि
'वर्तमानकालमे सत्तापक्ष मे या विरोधपक्ष मे
जो भी नेता है, उनमे से
तुम किसे अपने जीवन का आदर्श मानते हो ?'
मै तुझे यकीन के साथ कहता हूँ कि
तुझे शायद जिनके भी नाम मिलेगे
वे करीब-करीब भूतकाल के होगे... उन नामो मे शायद गाधीजी होगे,
लोकमान्य तिलक होगे,
सरदार वल्लभभाई पटेल होगे,
विनोबा भावे होगे,
जयप्रकाश नारायण होगे,
परन्तु वर्तमानकाल का कोई नाम शायद नही होगा ।
इसीसे तू कल्पना कर सकता है कि **जो देश अपनी युवा प्रजा के आगे वर्तमान के एक भी नेता को आदर्श के रूप में पेश न कर सके, उस देश का भविष्य कैसा भयंकर होगा ?**
तुने मुझे देश के व्यक्तित्व के निर्माण के लिये
महत्त्वपूर्ण परिबलो के बारे मे पूछा है न ?
मै क्या उत्तर दूँ ?
एक वक्त था, जब इस देशका नौजवान
कहता था कि Give me liberty or death.
या तो मुझे स्वतत्रता दो, या फिर मौत !
आज का नौजवान कहता है कि Give me T.V. or death
दे दो मुझे विलास के साधन, या फिर दे दो मोत !
खतरनाक मोड पर आ खड़ी है आज की राजनीति !
एक ही गलत निर्णय और करोडो का भविष्य बर्बाद !

महाराज साहेब,

३९

आपकी बात एकदम सही निकली
मैने करीब ५० युवको से
आपके द्वारा बताया गया सवाल पूछा,
जवाब तो कैस मिले, मत पूछो बात !
'हमारा बस चले तो इन सब नेताओ को जेल मे डाल दे '
'डाकू तो फिर भी अच्छे थे कि जो सिर्फ
अमीरो को ही लूटते थे,
परन्तु ये सफेदपोश डाकू तो ऐसे भयकर है
कि गरीबो को भी नही छोडते ।
'टी वी जैसे मौज-शौक के साधन किश्तो पर मिलते है और
दैनिक जीवन मे जिसकी जरूरत पडती है,
ऐसे साग-भाजी आदि रोकडे पैसे चुकाकर ही लेने पडते है,
ऐसी नीति बनानेवाले राजनेताओ मे अक्ल होने मे भी शक है ।'
इस आज़ादी से तो
ब्रिटीशरो की गुलामी लाख दर्जे बेहतर थी, जहॉ
रुपया महंगा था और अनाज सस्ता था, आज तो
इस सरकार ने रुपया सस्ता व अनाज महंगा करके
प्रजा को बेहाल बना दिया है..'
'प्रजाजनो की बेवकूफी के
ही परिणामस्वरूप जिनको आज तिहाड जेल मे
होना चाहिये था, वे सब ससद मे घुस गये है '
'असाप्रदायिकता का बनावटी नकाब ओढे हुए
राजनेताओं का यही काम है कि
जिससे बारहखडी मे 'गणपति' के 'ग' के बदले
'गधे' का 'ग' ही स्वीकार्य बना है .'
'किसी भी सरकारी समारोह के
उद्घाटन मे दीपक नही जलाया जा सकता,
नारियल नही फोडा जा सकता, क्योकि इसमे साप्रदायिकता की बू आती

है और इसके कारण किसीके भावोको ठेस पहुँचती है,
ऐसा कुछ न हो जाय, इसीलिये फीता काटना ही ठीक है,
ऐसी नीति निश्चित करनेवाले राजनीतिज्ञो को मानसिक इलाज हेतु
अस्पताल मे ही दाखिल करना चाहिये. .'
संक्षेप मे, कही भी, किसी भी जुबान से
वर्तमान राजनेताओ के लिये अच्छा अभिप्राय आज तक नही सुना
शायद उनके लिये सबके दिल मे तिरस्कार ही देखने मिला ।
आपकी आगाही एकदम सच निकली ।
मै तो यही नही सोच सकता कि यदि इसी तरह
इस देश की गाडी आगे बढती रही, तो ५/१५ साल बाद
इस देश का क्या हाल होगा ?

चिन्तन,

देशकी स्थिति मे तो शायद तुझे दिन-ब-दिन सुधार ही दिखेगा
५० मजिल की इमारत का स्थान १५० मजिल की इमारत ले ले,
धूल भरी कच्ची सडको का स्थान शायद डामर की सडके ले ले,
टी वी का स्थान शायद उपग्रह ले ले
इलेक्ट्रोनिक साधन शायद सारे देश की काया-पलट कर डाले,
परन्तु जो भी प्रश्न है, वह इस देश मे बसनेवाली प्रजा का है ।
उसकी हालत शायद कुत्ते से भी बदतर होगी ।
उसका शरीर ऐसे रोगो से घिरेगा, जिनकी कल्पना भी न की हो
उसका मन सतत तनावग्रस्त ही रहेगा ..
व्यभिचार-सदाचार के बीच की भेदरेखा समझनी मुश्किल हो जाएगी .
हिसक भाव शायद सीमा लाँघ जायेगे ।
इसी वास्तविकता का चित्रण करती हुई किसी लेखक की ये पंक्तियाँ पढी है ?

'विश्व आखुं, हिंसाथी थरथर्यु,
पेटमां पिस्तोल लइने बालक अवतर्यु'

हालाँकि, सत्य-सदाचार-नीतिमत्ता आदि सद्‌गुणो के खातिर
दु खी होनेवाले इन्सान आज भी कही-कही दिखते है और
लगता है कि शायद उन्ही के कारण इस देश की प्रजा संभवित
अनिष्ट मे से सही-सलामत उबर जाएगी ।

महाराज साहेब,

४०

आपका पत्र पढा ।
मेरे दिल मे यह सवाल उठता है
कि परिस्थिति इस हद तक
बिगडी होने पर भी कौन-सा परिबल आपको अभी भी
आशावादी बना रहा है ?
किस परिबल के आधार पर आप 'अब भी परिस्थिति सुधर
सकती है' ऐसा मान रहे है ?
किस आधार पर आप सज्जनो को मैदान मे आने की
चुनौती दे रहे है ?
चाहे जैसा निपुण डॉक्टर भी
केसर के मरीज के लिये आशा छोड बैठता है
चाहे जैसा कुशल तैराक भी
भॅवर मे फॅसे हुए व्यक्ति की आशा छोड देता है
चाहे जैसा शक्तिशाली बबेवाला भी
दावानल मे फॅसे हुए के लिये आशा छोड देता है. .
चाहे जैसा विद्वान शिक्षक भी, आवारा विद्यार्थी की आशा छोड देता है
तो आप किस विश्वास के बल पर एकदम सडी हुई व बिगडी हुई
वर्तमान राजनीति को सुधारने के मामले मे आगे बढ रहे है ?

चिन्तन,

तूने जो बात रखी है,
इसका विचार तो मुझे भी कभी-कभी आ जाता है.
परन्तु मुझे एक बात का बराबर ख्याल है
कि किसी भी क्षेत्र मे मिलनेवाली
जीत मे अपनी ताकत से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण
भूमिका अदा करती है – दुश्मन की कमज़ोरी की ।
इसी जानकारी के बल पर मै आगे बढ रहा हूँ .
दुर्जनता,
स्वार्थान्धता,

कामान्धता,
सत्तालालसा,
छल-कपट,
दॉव-पेच,
ये सब है - दुर्जनो की कमज़ोरियॉ ।
अधकार मे रस्सी सॉप बनकर डराये, यह सभव है,
परन्तु प्रकाश होते ही वही व्यक्ति
बिल्कुल घबराये बिना जैसे रस्सी को उठाकर फेक देता है,
इसी प्रकार, सज्जनो के असगठन और
साथ-ही साथ निष्क्रियता के कारण
हो सकता है कि दुर्जन ताकतवर लगे, परन्तु
ज्यो ही सज्जन सगठित हुए,
सक्रिय बने त्यो ही तमाम दुर्जन शक्तिहीन साबित हुए ही समझो ।
चिन्तन,
मेरी नज़र दुर्जनो की ताकत पर इतनी नही,
जितनी सज्जनो की निष्क्रियता पर है ..
यदि वहॉ कुछ गर्मी आये, तो
बाजी अवश्य अपने हाथ मे है ।
क्या बताऊँ तुझे ?
निष्क्रियता. रोग तो है ही,
परन्तु साथ-ही साथ शत्रु भी है ।
रोग का शुरूआत का दौर शरीर के अस्तित्व के लिये इतना खतरनाक नही होता परन्तु
सतत उपेक्षित होनेवाला यह रोग जब मौत के शत्रु के सामने लाकर खडा कर देता है,
तब शरीर का अस्तित्व ही खत्म हो जाता है ।
सज्जनों !
आपकी निष्क्रियता इस देश के करोड़ो लोगों के लिये
रोगरूप और शत्रुरूप बन ही रही है,
अथवा तो बनने की भूमिका पर पहुँच ही गयी है,
तो अब इतनी ही विनंति है कि आप सब सक्रिय वनो ।
आपकी सक्रियता दुर्जनों की ताकत को तोड़े बिना नहीं रहेगी ।

महाराज साहेब,

आपके पत्र मे आपके
आशावादी रूख को देखकर मन-ही-मन
मैने आपको नमस्कार किया ।
मुझे खुद को भी जीवन की एक नयी ही दिशा मिली
हताश कभी होना नही और प्रयत्न कभी छोडने नही...
परन्तु एक सवाल यह उठता है कि सत्तास्थान पर न पहुँचकर,
सत्तास्थान के बाहर रहकर ही
क्या हम सत्ताधीशो के जरिये
अपना मनचाहा काम नही करवा सकते ?
अर्थात् King न बनकर King maker नही बन सकते ?
मुझे तो लगता है कि
यह अभिगम स्वीकारने मे असफलता की सभावना
करीब-करीब नही रहेगी और गलत रास्ते भी अपनाने नही पडेगे ।
इस सबन्ध मै आपका प्रतिभाव जानना चाहता हूँ ।

चिन्तन,

यह बात इतनी आसान नही, जितनी तू समझता है ।
क्योंकि King maker **तो वही बन सकता है,**
जिसके पास चाहे विशाल संख्या का बल न हो,
परन्तु विशाल प्रमाण मे संपत्ति तो हो ही ।
तू समझ सकता है कि वर्तमान युग मे ज्यादा सपत्ति इकट्ठी
करने के लिये स्वय के साथ कितने गलत समाधान करने पडते है ।
जीवन मे कितने
गलत रास्ते अपनाने पडते हैं । कितनी गलत नीतियो पर
कर्तव्यता की मुहर लगानी पडती है !
और यह सब करने मे
सज्जनता को ताक पर रखना पडेगा
और यही तो तकलीफ है ।
सज्जनता को गौण बनाकर या

दुर्जनता को अपनाकर
किसी भी क्षेत्र मे मिलनेवाली सफलता -
लंबे अरसे के बाद हानिकारक सिद्ध होने की पूर्ण सभावना है ।
चिन्तन,
ठीक है, King maker बना जा सके, तो King
बनने की आवश्यकता नही, परन्तु शक्यता का विचार भी तो करना
पडेगा न ? हॉ, एक बात है ।
यदि मजबूत लघुमति के पास अर्थसत्ता हो, तो वह विराट
बहुमति को भी शक्तिहीन बना सकती है ।
सिर्फ एक ही व्यक्ति के पास विपुल सपत्ति नही, परन्तु
एक निश्चित समूह के पास विपुल संपत्ति !
यदि यह हो, तो
विराट बहुमति को अपने वश मे रखने मे
उसे सफलता आसानी से मिलती है ।
सक्षेप मे,
सत्ता को वश मे रखने की ताकत सपत्ति मे है ।
सत्ता को बदलने की ताकत संपत्ति मे है. ..
सत्ताधारियो के निर्णयो को बदलने की ताकत सपत्ति मे है ।
एक पहलू यह है, तो दूसरा पहलू यह है कि
सपत्ति को अपने पास लाने की ताकत सत्ता मे है -
धनवानो को अपने पीछे घूमाने की ताकत सत्ता मे है ।
धनवानो की नीति बदलने की ताकत सत्ता मे है ।
दो ही बात है ...
या तो सत्ता या संपत्ति !
ये दो जिसके पास है वह क्या नही कर सकता ?
यदि सत्ता है, तो वह King है और यदि संपत्ति है,
तो वह King maker है ।
तुझे जो भी रास्ता उचित लगे, वह अपनाने की छूट है, परन्तु सज्जनता
को टिकाकर ही और सज्जनता की प्रतिष्ठा करने के लक्ष्य को
आत्मसात् करके ही करना ! इसके बिना तो हर्गिज़ नही !

महाराज साहेब,

दोनो रास्तो मे कठिनाई तो है ही ।
फिर भी मुझे तो लगता है कि
सत्तास्थान के महत्त्व के परिबल के
रूप मे सज्जनो को आगे तो आना ही पडेगा ।
वे King बनेगे तो भी
सज्जनता का गौरव बढानेवाली नीति के निर्माता बनेगे
और वे King maker बनेगे, तो भी
King के ज़रिये सज्जनता के ही काम करायेगे ।
अब मेरे मन मे कोई शका ही नही है कि
तमाम महत्त्वपूर्ण ओहदो पर हमे कब्जा जमाना चाहिये या नही ?
हो सके उतने प्रयत्न करके सज्जनो को
इन ओहदो पर स्थान ग्रहण करना ही चाहिये...
फिर चाहे वह ओहदा सचिव का हो या मेनेजर का हो
सासद का हो या विधानसभा के सदस्य का हो,
चेयरमेन का हो या सेक्रेटरी का हो,
मत्री के पी ए का हो या सस्था के अध्यक्ष का हो,
सरपच का हो या कलेक्टर का हो,
कमिश्नर का हो, या चपरासी का हो,
सवाल यह है कि सज्जन शुरुआत कहाँ से करे ?

चिन्तन,

जवाब स्पष्ट है ।
छोटे ओहदे से ।
एक बात तुझे खास बता दुं कि **अपनी त्रुटियो
व अपनी मर्यादाओं को नज़र के सन्मुख रखकर
इनका सामका करने का सामर्थ्य दिखाने को जो तैयार नही,
उसे कभी भी
ऐसे ओहदे पर बैठने के अरमान नही सजाने चाहिये ।**
यह तो समाज है, प्रजा है, समूह है ।

यदि अपनी त्रुटियो का परिमार्जन करने के मामले मे
आप बिल्कुल गभीर नही,
शक्ति और अधिकार क्षेत्र मे अपनी मर्यादाओ को स्वीकारने की भी
आपकी तैयारी नही, तो आपको कोई ओहदे तक नही पहुँचने देगा ।
यदि आप पहुँच भी गये, तो कोई टिकने नही देगा ।
और बात भी सच ही है न ?
बेटा
बाप की भाषा मे बात करने लगे या
चपरासी
मेनेजर की भाषा मे बात करने लगे,
सज्जन
संत की भाषा मे बात करने लगे या
सचिव
मुख्यमंत्री की भाषा मे बात करने लगे, तो
हास्यापद ही लगेगा न ?
इसीलिये पहला काम यह कर ।
अपनी त्रुटियो को समझ ले और अपनी मर्यादाओ को जान ले । फिर
त्रुटियो का परिमार्जन करने लग जा और
मर्यादा मे रहकर सज्जनता का काम करने लग जा ।
मै तुझे विश्वास के साथ कहता हूँ कि
यह समाज तेरे पीछे पागल बने विना नही रहेगा ।
वातावरण चाहे जितना बिगड़ा हुआ हो,
चाहे सर्वत्र भ्रष्टाचार दिखता हो,
परन्तु औसत प्रजा अच्छे नेता, अच्छे अधिकारी को
अपने सर पर रखकर नाचने के लिये आज भी तैयार है ।
ऐसे नेता को हर वर्ष चुनकर सत्तास्थान पर
बिठाने के लिये आज भी तैयार है ।
सरकार ऐसे निष्ठावान अधिकारी की बदली न कर डाले,
इसके लिये वातावरण को तंग बनाने के लिये भी तैयार है ।
इससे ज्यादा आशास्पद बात भला और क्या हो सकती है ?

चिन्तन,

पिछले पत्र के अनुसधान मे ही एक बात कहूँ ?
प्रसिद्ध चिन्तक रोशेफ फोल्ड ने
एक जगह लिखा है कि
'दुष्ट मानव को जब अच्छे होने का ढोग करना पड़े,
तब समझना कि भलमनसाई की जीत हो रही है ।'
सज्जनता की यही तो प्रचड ताकत है ।
भयकर कक्षा के अनीतिखोर व्यापारी को भी
अपनी दुकान पर बोर्ड तो
'प्रामाणिकता ही हमारा मुद्रालेख है'
इसीका लगाना पडता है ।
मिलावटी माल बेचते हुए व्यापारी को भी
अपने ग्राहको से ऐसा ही कहना पडता है कि
'हमारे यहाँ एकदम शुद्ध माल मिलता है ।'
'प्रजा के सच्चे हितचिन्तक तो हम ही है..'
'विद्यार्थी के भले के लिये ही मै उसे सजा देता हूँ ।'
इससे क्या सूचित होता है ?
यही कि दुर्जनता का कही भी सीधा स्वीकार नही ।
चाहे
आचरण मे दुर्जनता है,
परन्तु उस पर पानी तो सज्जनता का ही चढाना पडता है ।
यदि दाभिक सज्जनता भी इतनी प्रचड ताकतवाली
साबित होती हो, तो मै तुझे यही पूछना चाहता हूँ कि
प्रामाणिक सज्जनता तो
कितनी जोरदार ताकतवाली साबित होगी ?
जो भी ऐसा कहता है कि
'आज के काल मे सज्जनता की कोई माग नही',
उससे मेरा यही कहना है कि
'माग तो सज्जनता की ही है ।'

मिलावटी भी,
शुद्ध ज़ाहिर न हो, तो स्वीकार्य नही बनता....
नकली माल भी
असली जाहिर न हो, तब तक खपता नहीं.
दुर्जन भी,
सज्जन के रूप मे स्वय को प्रस्तुत करने मे सफल न बने
तब तक स्वीकार्य नही बनता ।
यह वास्तविकता यही बताती है कि सर्वत्र सज्जनता की ही माग है ।
चिन्तन, सज्जनता की इस माग को नजर मे रखकर ही तो
तेरे साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया है ।
परन्तु
एक और गभीर बात कहूँ ?
दुर्जन को
सज्जन की प्रचंड़ ताकत पर जितना ज़बरदस्त विश्वास है,
उसके लाखवें भाग का भी विश्वास
सज्जन को अपनी ताकत पर नही...
वह तो यही मान बैठां है कि 'अपने से कुछ नही होगा ।
जेट विमान की गति से वातावरण बिगड रहा है
और हम सुधार शायद कर भी पाये तो सायकल की गति से ।
दुर्जनता दिखती है गेलन जितनी
और अपने पास रही हुई सज्जनता है- बोतल जितनी. .
इसमे अपनी डुगडुगी कहाँ बजे ? क्या बताऊँ ?
दुर्जन आक्रामक बन रहे है, इसका जितना दु ख नही,
उतना दु ख प्रचंड सामर्थ्य होने पर भी सज्जन निष्क्रिय बन गये है,
हताश बन गये है, इसका है ।
एक ही अपेक्षा है –
सज्जनता की शक्ति केन्द्रस्थ बने. क्योंकि
जो केन्द्रस्थ बनता है, वही बल बन जाता है और
जो बल बनता है,
वही निर्बलो के लिये चुनौती बन जाता है ।

महाराज साहेब,

पहली ही बार पता चला कि
सज्जनता की इतनी प्रचड ताकत है ।
दुर्जन को भी स्वय को सज्जन के
रूप मे पेश करना पडता है
'मै सज्जन ही हूँ' यह बताने के लिये सघर्ष करना पडता है,
इससे बढकर सज्जनता की जीत और क्या हो सकती है ?
अब मुझे इस बात मे तो कोई शका नही रही कि
सज्जनता अनाथ नही, परन्तु सनाथ है ।
सज्जनता मूल्यहीन नही, परन्तु मूल्यवान है .
सज्जनता बेजान नही, परन्तु ताकतवाली है.
सज्जनता निस्तेज नही, परन्तु तेजस्वी है ।
किन्तु
जहॉ तक मेरा ख्याल है, वहॉ तक पूर्व के एक पत्र मे
मैंने आपसे पूछा था कि देश के
व्यक्तित्व के निर्माण के लिये मूलभूत तत्त्व
कौन-से है ? किन परिबलो पर देश का व्यक्तित्व निखरता है ?
ऐसी कौन-सी बाते है, जिन पर सज्जनो को
ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है ? बताने की कृपा करेगे ?

चिन्तन,

तीन तत्त्व है.
विरासत,
वातावरण और प्रभाव ।
जो देश अपने अतीत की भव्य विरासत को,
संभालकर रख सकता है, उस देश को अपनी विकासयात्रा मे
तनिक भी तकलीफ नहीं होती ।
शायद दु ख के साथ कहना पडेगा कि
वर्तमान राजनेता इस मामले मे एकदम कमज़ोर सिद्ध हुए है ।
सामग्री-क्षेत्र मे भी इस देश के पास भव्य विरासत थी,

वे सामग्रियाँ आज पहुँच रही है विदेशो मे ।
विदेशियो ने देशद्रोहियो को फोडा है और
पैसो के लालच मे देश की लाखो-करोडो रुपयो की
प्राचीन वस्तुये देशद्रोही विदेशो मे रवाना कर रहे है ।
परन्तु, इस नुकसान से भी बढ़कर सद्‌गुणो की भव्य विरासत को आज के राजनेताओंने
जो देशनिकाला दिया है और अब भी दे रहे है,
इस नुकसान की भरपाई तो हो ही नही सकती...
शील के लिये
इस देश की स्त्रियो ने जोहर किये...
सदाचार के लिये
इस देश के नौजवानो ने नाम रोशन किया...
रैयत की रक्षा के लिये
राजाओ ने अपने प्राणो की कुर्बानी दी....
विद्यार्थियो को सस्कार देने के लिये
ऋषियो ने अपने खून का पानी कर दिया...
मूक पशुओ को सभालने के लिये राजपूतो ने केशरिये किये ।
दुष्काल मे फँसे हुओ को उबारने के लिये
व्यापारियो ने अनाज के भडार खुले रख दिये...
बचपन मे ही माताओ ने अपने बच्चो को
'शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि...' की लोरियाँ सुनायी ।
वचन निभाने के लिये राजाओ ने जगल की राह अपना ली..
सक्षेप मे, शील - सदाचार - दान - वात्सल्य - उदारता - सौजन्यता -
संस्करण आदि सद्‌गुणो की भव्यातिभव्य विरासत के पुर्जे- पुर्जे
राजनेताओ ने उड़ा दिये है ।
सिकंदर को एरिस्टोटल ने कहा था कि
भारत मे से कुछ भी लाया जा सके ऐसा हो,
तो किसी संत को लेते आना ।
विदेश में से यहाँ आनेवाले को
वहाँ का विदेशी आज कहता है कि तू भारत जा रहा है ?
तो विश्वसुंदरी को देखते आना और मौका मिले तो यहाँ उठाते आना ।

चिन्तन,

विरासत के क्षेत्र मे जैसे
अत्यन्त खेदजनक स्थिति है
वैसे ही वातावरण के क्षेत्र मे भी
कोई गौरवप्रद स्थिति तो है ही नही ।
वातावरण का अर्थ तू जलवायु मत समझ बैठना ।
वातावरण से मेरा मतलब है - सहज अनुकूल स्थिति ।
प्राचीन काल मे कोई नीतिमत्ता को बनाये रखना चाहता, तो
कोई अडचन नही आती थी.
राज्य के कोई ऐसे जटिल कायदे नही थे कि
जो अनीति करने के लिये मजबूर करे
व्यापारियो के बीच ऐसा अविश्वास का वातावरण नही था कि
जो अनीति करने के लिये उकसाये
ग्राहक -व्यापारियो के सबन्धो मे ऐसी कोई दरार नही थी कि
जो अनीति के लिये मन को तैयार करे ।
और, पैसे कमाने के ऐसे कोई सीधे रास्ते नही थे कि
जिसके लालच मे अनीति करने का मन हो जाय ।
उस वक्त विज्ञापनो की ऐसी मारामारी नही थी कि
जिसके कारण माल की उत्पादन कीमत से
बिक्री कीमत कई गुणा ज्यादा रखनी पड़े ।
हर कोई व्यक्ति, हर किसी व्यवसाय मे घुसकर उस व्यवसाय की बरसो पुरानी
व्यवस्था को तोड नही सकता था । और इसीलिये
उस वक्त गलाकाटू प्रतियोगिता का वातावरण नही छाता था ।
परन्तु आज ? नीतिमत्ता के स्तर को बनाये रखना चाहनेवालो को
प्रचड सत्त्व दिखाना ही पडेगा ।
सरकारी कायदे-कानून विचित्र है. .
वातावरण मे अविश्वास है - प्रतियोगिता जालिम है ।
पहले ग्राहक व्यापारी के पास माल लेने जाता था
उसके बदले आज व्यापारी को ग्राहक के

पास ऑर्डर लेने जाना पडता है ।
ग्राहक व्यापारी के पास पैसे लेकर आता था,
उसके बदले आज पेमेण्ट लेने के लिये
व्यापारी को ग्राहक के घर चक्कर लगाने पड़ते है ।
आवश्यकताये बढी है, देखा-देखी बढ गयी है...
'माग के अनुसार माल का उत्पादन' इस सूत्र का स्थान आज
'उत्पादन के अनुसार माग'.. इस सूत्र ने ले लिया है ।
चाहे बाजार मे माल की कोई माग न हो,
एक बार उसका उत्पादन तो कर ही डालो
बाद मे लाखो रुपयो के विज्ञापन देकर माल की माग पैदा करो ।
फिर तो माल भी धड़ाधड बिकने लगेगा
यही गणित आजकल चल रहा है....
कर चुकाने की रूपरेखा बडी अटपटी है ।
स्व. प्रधानमत्री राजीव गाधी को लालकिले से घोषणा करनी पडी थी कि
'एक रूपये के टेक्स के सामने सरकार के हाथ मे
सिर्फ दस पैसे ही आते है...'
अधिकारियो मे फैले हुए भ्रष्टाचार की मात्रा कितनी ज़ालिम
होगी, इसका अदाज इसीसे लगाया जा सकता है ।
चिन्तन, जाड़े मे वृक्ष पर आम खोजने जानेवाले को सफलता
हासिल करने में बहुत परेशानी होती है, उसी प्रकार नीतिमत्ता का स्तर बनाये
रखना चाहनेवाले को आज बहुत कठिनाई होती है ।
वातावरण ही दूषित ।
अनीति सहज, अनीति के विचार सहज,
अनीति के रास्ते मे सफलता सहज,
अनीति का सामूहिक स्वीकार सहज ।
यह लक्षण देश के व्यक्तित्व का विकास करने मे
बाधक बने बिना नही रहेगा । क्या बताऊँ तुझे ?
प्राचीन काल मे नीतिमत्ता का जो गुण समष्टिगत था,
वह गुण आज व्यक्तिगत बनता जा रहा है ।
क्या यह दु.खद स्थिति नहीं ?

चिन्तन,

जैसे अर्थक्षेत्र मे
नीतिमत्ता के मामले मे आज
वातावरण अत्यन्त प्रतिकूल है, वैसे ही कामक्षेत्र मे
सदाचार के मामले मे भी वातावरण अत्यन्त खेदजनक है
यहॉ पर शीलरक्षा को प्राण माना जाता था
निर्दोषो को बेरहमी से खत्म करनेवाले
डाकू-लूटेरे भी स्त्री को खराब नजर से नही देखते थे,
सहशिक्षण की तो यहॉ बात ही नही थी
यौन-शिक्षा देने की हिमायत यहॉ कोई नही करता था ।
शादी के अलावा अन्य सबन्ध समाज स्वीकारता नही था,
मैत्री के करार या वादो की यहॉ किसीको कल्पना भी नही थी
नादानी मे (?) गर्भ रह जाने पर,
इसे खत्म करने की कोई कानूना व्यवस्था यहॉ पर नही थी..
स्वय शासक भी इस मामले मे बहुत कडक थे
वात्स्यायन से भी पतजलि का बोलबाला ज्यादा था.
पवित्रता टिकाने के लिये
सेकडो स्त्रियो के अग्निस्नान करने की बात यहॉ गूजा करती थी .
यहॉ सास्कृतिक कार्यक्रमो के नाम पर
स्त्रियो का शरीर नही लूटा जाता था,
सक्षेप मे,
शीलपालन, सदाचारपालन सहज था .
वातावरण भी इसके अनुरूप था..
अरे । राजनीति के बेताज बादशाह कहलानेवाले
चाणक्य को भी लिखना पडता था कि
'राज्यमूलं इन्द्रियजयः ,
जो शासक पॉचों इन्द्रियो को वश मे रखता है,
वह राजगद्दी को टिका सकता है ।
आज इस विषय मे क्या बात की जाय, यही समझ मे नही आता । अश्लीलता को

आज 'कला' का नाम दिया जा रहा है।
गर्भपात को आज सरकार की भी सहमति मिल गयी है
'ब्यूटी क्वीन' को एवार्ड मिल रहे है।
यौन-शिक्षण को आज अनिवार्य माना जाने लगा है. .
'ब्रह्मचर्याश्रम' शब्द सिर्फ शब्दकोष का विषय बन गया है .
टी.वी., केबल, चेनलोने चारो ओर तूफान मचा दिया है...
कपड़े उतारनेवाली अभिनेत्रियो के पिछे पब्लिक पागल है...
विलासी-द्विअर्थी केसेटो की बाजार मे जोरदार माग है.
सेन्सरबोर्ड अगूठा छाप हो, ऐसा लगता है..
फिल्मो मे बलात्कार के दृश्यो का अभिनय
करनेवाले अभिनेता आज के नौजवानो के आदर्श है...
माँ - बेटा,
भाई - बहन,
चाची - भतीजा,
मामी - भानजा
आदि के सबन्ध भी कही-कही सड़ने लगे है।
सत्ताधारी स्वय भी इस
मामले मे एकदम ढीले है. .
चेहरा सिह का और चमडी सियार की, ऐसी उनकी स्थिति है..

चिन्तन,
अर्थ व काम प्रजा के जीवन की ये दो अत्यन्त
महत्त्वपूर्ण पटरियाँ ही यदि टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी हो,
टूट गयी हों, सड़ गयी हों,
उखड़ गयी हों,
तो प्रजा की क्या हालत होगी ?

जब रोम जल रहा था, तब नीरो बिगुल बजा रहा था,
ऐसी मानसिक स्थिति आज औसतन प्रजाजन की हो गयी है .
आचरण के क्षेत्र मे आया हुआ अनिष्ट, यदि स्वीकार के क्षेत्र मे
आ जाय, तो परिस्थिति कैसी भयकर हो सकती है,
उसकी शायद तू कल्पना भी नही कर सकता।

चिन्तन,

अर्थ और काम की ही तरह एक
अति महत्त्वपूर्ण क्षेत्र था - शिक्षण का ।
इस मामले मे भी
वर्तमान वातावरण कलुषितता की पराकाष्ठा पर पहुॅच गया है ।
उस जमाने मे शिक्षण-व्यवस्था राज्याश्रित नही थी,
और दूसरी बात यह थी कि
शिक्षण सिर्फ आजीविका केन्द्रित नही था .
शिक्षण की व्यवस्था शिष्ट पुरुषो के हाथ मे थी
और शिक्षण के साथ ही सस्करण भी जुडा हुआ था ।
तुझे शायद पता न हो, परन्तु वास्तविकता यह है कि
जहॉ शिक्षण राज्याश्रित होता है,
वहॉ सियार पैदा होते है,
सिंह नही ।
राज-सत्ता शिक्षण का ढाचा ही ऐसा बनाती है कि
जहॉ सिर्फ कायरो के टोले ही तैयार होते है.
गलत व्यवस्था या गलत अभिगमो के सामने
बलवा पुकारने की क्षमता उस वर्ग के पास होती ही नही ।
हॉ, यह वर्ग प्रिसिपल व प्रोफेसरो के आगे हुल्लड मचा सकता है ।
यह वर्ग जी एस के चुनाव के वक्त गुडागीरी कर सकता है ।
यह वर्ग लडकियो के टोले देखकर पागल बन सकता है ।
बरसो पहले एक पुस्तक मे विवेकानद का एक वाक्य मैने पढा था 'यदि मेरे हाथ मे सत्ता आ जाय, तो सबसे पहला काम, इस देश की सारी युनिवर्सिटियो पर बम फेककर, उन्हे उडाने का करूँगा ।'
इस आक्रोश का क्या कारण ?
इसका एक ही कारण है .
शिक्षण की ही प्रधानता, सस्करण की कोई बात ही नही ।
स्वतत्रता के नाम पर उच्छृखलता,
विनय के स्थान पर उद्धतता,

विद्वत्ता के नाम पर अहंकार, ताकत के स्थान पर जंगलीपन,
इन सब दूषणों की जन्मदात्री बन रही है
आज की शिक्षणसंस्थायें ।
पढने का लक्ष्य है, पेट भरने का ।
पढाने का लक्ष्य है, पेट भरने का ।
जीवन को उदात्त बनाने की तो कही कोई बात ही नही ।
मन की सम्हाल लेने की, विचारधारा को निर्मल
बनाने की या आत्मा को पवित्र बनाने की तो कही कोई चर्चा ही नहीं ।
बस, एक ही लक्ष्य खाओ, पीओ और ऐश करो ।
चिन्तन,
शायद इस देश के एक भी
सस्कारी माता-पिता ऐसे नही कि जो
ऐसी शिक्षण-प्रणाली से त्रस्त न हो...
एक भी समझदार लेखक -
वक्ता या कवि ऐसा नही कि जो इस शिक्षणप्रथा से सतुष्ट हो ..
एक सज्जन भी ऐसा नही, जिसका अन्त करण
वर्तमान शिक्षण के परिणाम से नही रोता हो,
और फिर भी सम्यक् सुधार के चिह्न नही दिखते..
शायद सबने वर्तमानकालीन शिक्षणव्यवस्था को
अनिवार्य अनिष्ट मानकर स्वीकार लिया है ।
इस देश की नीव के स्थान पर रही हुई
युवापेढ़ी के संस्करण की बात मे
वर्तमान राज्यसत्ता द्वारा दिखायी गयी
अक्षम्य लापरवाही के कडवे नतीजे तो आयेगे तब आयेगे,
परन्तु, अब भी घर-घर मे माँ-बाप व वच्चो के बीच जो सघर्ष चल रहे है,
आक्षेपबाजी चल रही है,
वह देखते हुए यही कहा जा सकता है कि
यह शिक्षणप्रणाली शायद बच्चो को कही का न रहने देगी ।
माँ-बाप के तो नही हो सकते,
परन्तु शायद खुद के भी नही रह सकते !

महाराज साहेब,

वातावरण मे आये हुए खतरनाक परिवर्तन की
आपकी बातो से मेरा मन सिहर उठा है .
नीति से नियन्त्रित अर्थ,
सदाचार से नियन्त्रित काम और विनय-सस्करण
से नियन्त्रित शिक्षण,
इन तीनो क्षेत्रो पर आज जो बिजली गिरी है,
उसे देखते हुए लगता है कि अब
उस देश का कोई भविष्य ही नही .
बिना नीति का अर्थ,
बिना सदाचार का काम और
बिना सस्करण का शिक्षण
अर्थात् मानव के देह मे शैतानियत ही या और कुछ ?
अर्थलपट
आक्रामक बनेगा,
कामलपट
व्यभिचारी बनेगा और
उद्धत स्वेच्छाचारी बनेगा ।
तो फिर सद्व्यवहार की आशा किसके पास रखी जाय ?
मै स्वय

ऐसा मानता हूँ कि इस दुनिया की कही जानेवाली किसी भी प्रकार की शक्तियो पर या तो व्यक्ति का नियंत्रण चाहिये या फिर स्वयं के अन्तःकरण का नियंत्रण चाहिये ।

यदि व्यक्ति का या खुद के अन्त करण का नियत्रण न हो, तो ये शक्तियाँ स्व-पर के लिये पीडादायी सिद्ध होगी ।
खुले आम घूमता हुआ शेर,
टोकरी मे से बाहर निकला हुआ सर्प,
पानी मे से बाहर आया हुआ मगरमच्छ,
जो आतक फैलाता है,

उससे अनेक गुणा आतक तो अनियत्रित शक्तिवाला फैलाता है ।
मै आपसे इतना ही पूछना चाहता हूँ कि अर्थ, काम व शिक्षण क्षेत्र का भूतकालीन भव्य वातावरण इस देश के प्रजाजनो को फिर से देखने व अनुभव करने मिले, क्या ऐसी कोई सभावना नज़र नही आती ?

चिन्तन,

इसका जवाब मै तो कैसे दूँ ?
हॉ, यदि इस देश के प्रत्येक प्रजाजन को ऐसा लगे कि
'आज के इस कलुषित वातावरण के निर्माण मे
प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मैं भी कुछ अंशों मे जिम्मेदार हूँ ही
और मेरे अकेले का भी सम्यक् प्रयास
इस वातावरण को अल्प अंशों में भी सुधार सकता है',
तो भावि अवश्य आशास्पद है ।
क्या एक बात तू जानता है ?
शहर मे बसनेवाले लोगो के, हर एक के घर से निकलता हुआ धूँआ,
आकाश मे एक गाढा बादल बनकर
कभी-कभी विमान के लिये खतरनाक सावित हो जाता है ।
यह वास्तविकता यही बताती है कि समष्टि के
बिगाड मे व्यक्ति की जवाबदारी कम नही ..
तू उज्ज्वल भावि के वारे मे पूछ रहा है, परन्तु
करुणता तो यह है कि इस देश के बहुजनवर्ग को तो
आज की इस ज्वाला मे ज्योति के ही दर्शन हो रहे है ।
इस देश की धरती पर बहुराष्ट्रीय कंपनीयो के आगमन का
यह वर्ग नारियल फोडकर स्वागत करने को तैयार है
माइकल जेक्सन के सिर्फ एक प्रोग्राम के पीछे
इस देश का युवा वर्ग लाखो रुपये उडाने के लिये तैयार है .
और पाश्चात्य टेक्नोलोजी की जूठन को
यह वर्ग मिठाई मानकर खुशी-खुशी खाने को तैयार है ।
कैद मे से मुक्ति की बात तो बाद मे,
परन्तु जो कैद को ही अपना घर
मानकर उसे सजाने मे मशगूल है, उसका क्या किया जाय ?

महाराज साहेब,

आपका पत्र पढकर मै तो स्तब्ध हो गया ।
आपकी बात सही है ।
जो ज्वाला को ज्योति मानता हो,
उसे कैसे बचाया जाय ?
जो सूजन को स्वस्थ शरीर की निशानी माने,
उसे कैसे स्वस्थ बनाया जाय ?
जिसे बरबादी मे आबादी के दर्शन होते हो,
उसे कैसे उबारा जाय ?
जो कारागृह को घर मानता हो,
उसे वहाँ से बाहर कैसे निकाला जाय ?
फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि
सम्यक् विचारो का यह प्रसार कही तो किसीको क्षुब्ध करेगा ही ।
किसीकी तो निद्रा बिगाडेगा ही ।
किसीको तो चोट पहुँचायेगा ही ।
किसीको तो गभीरता से विचार करने को मजबूर करेगा ही ।
मेरी आपसे यही विनति है कि आप हताश होकर
इन विचारो के प्रसार का अभियान स्थगित न कर दे ।

चिन्तन,

मै हताश हूँ ही नही ।
बढ़िया लोगो को उनके बढ़िया विचारो के लिये हल्के लोगो से हमेशा परेशानी रहा ही करती है ।
परन्तु, यहाँ इसकी परवाह भी किसे है ?
क्योकि हमारे पास रही हुई परमात्मा के अनुग्रह की और गुरुदेवो के शुभाशीष की प्रचड पूजी पर हमे अपार आस्था है..
अमावस्या की काली रात भी बीत जाती है, तो
यह परिस्थिति भी हमेशा के लिये थोडे ही टिकनेवाली है ?
हाँ, सत्त्व को खिलने दो और पुरुषार्थ चालु रखो ।
इस कर्तव्य से पीछे मत हटो ।

अपार धीरज है,
शुभ निष्ठा है,
सम्यक् समझ है और
परिणाम के लिए ऐसी कोई आतुरता नही .
फिर मन को हताशा छूने का सवाल ही नही उठता ।
हालाँकि,
मन मे एक समझ बिलकुल स्पष्ट है कि
औसतन प्रजा मे दुर्जनता की जो प्रतिष्ठा हो रही है,
वह जल्दी से जल्दी टूटनी ही चाहिये ..
गलत आचरण फिर भी शायद चलाना पडे, परन्तु
गलत मान्यता तो स्थिर होने से पहले ही तोडनी होगी ।
क्या तुझे पता है ?
सज्जन आँख जैसा है, तो दुर्जन अंधकार जैसा है । ऑख ने अंधकार का कुछ भी नही बिगाड़ा है, फिर भी जिस प्रकार अंधकार ऑख को देखने मे प्रतिबन्ध करता है, उसी प्रकार
सज्जन ने दुर्जन का, चाहे कुछ भी न बिगाड़ा हो, फिर भी
सज्जन के सत्कार्यो मे दुर्जन सतत बाधा पहुँचाया ही करता है...
क्या बताऊँ तुझे ?
आज कई जगह ऐसा देखा जाता है कि छगनभाई
मगनभाई को फोन करके पूछते है कि
'क्यो मगनभाई ! क्या कर रहे हो ?'
तब मगनभाई जवाब देता है कि 'कुछ नही,
बस यो ही जरा आडा पडा हूँ ।'
चिन्तन,
दुर्जन का यही तो एक काम है .
सज्जन कोई भी अच्छा काम शुरू करे,
वह आडा ही पडता है हमे और कुछ नही करना, बस, उसे सीधा करना है ।
इसके लिये उस पर आक्रमण करने की कोई जरूरत नही ।
हम जरा गरम होकर दिखाये
और वह हो जायेगा एकदम सीधा ।

महाराज साहेब,

आपने तो कमाल की बात कर दी .
बिल्ली आडी आकर अपशुकन करती है,
तो दुर्जन आडा पडकर अच्छे कार्यो
मे रोडे अटकाता है ।
परन्तु,
बिल्ली आडी आने पर इन्सान वापिस मुड जाता है, इस तरह
दुर्जन के आडे पडने पर सज्जन को अच्छे कार्य से वापिस मुडने की जरूरत नही ।
दुर्जन को सीधा करके,
उसकी दुर्जनता को ललकारते हुए,
उसकी दुर्जनता के सामने सज्जनता को पराकाष्ठा पर ले जाते हुए,
सज्जन को अपने ध्येय मे आगे बढना चाहिये ।
मुझे लगता है कि आज तक सज्जनो द्वारा की गयी इस भूल को
सुधारने की बात करने के लिये ही
आपने यह पत्र व्यवहार जारी रखा है
मेरा अनुमान ठीक है न ?

चिन्तन,

तेरी बात सही है ।
जहाँ भी दुर्जन अच्छे काम के बीच मे आया है,
बाधक बना है,
वहाँ सज्जन ने उस अच्छे काम को स्थगित कर दिया है
दुर्जनने जीत जरूर हासिल की है,
परन्तु अपने बल पर नही, सज्जन की निर्बलता के बल पर ।
क्या तुझे पता है ?
इस दुनिया में करुणासभर लोग जैसे गिने-चुने है,
उसी प्रकार क्रूरतासभर लोग भी गिने-चुने ही है ।
जो भी वर्ग अधिक संख्या मे है, वह वर्ग है - 'ठंडा..'
हम अपना काम करते रहे
हम किसीका बिगाडे नही,

कोई हमारा बिगाडने आये, तो वहाँ से हम हट जाये.
बस,
इस मान्यतावाला वर्ग बहुत बडी सख्या मे है ।
इस पत्रव्यवहार के द्वारा इस वर्ग मे थोडी गरमाहट
लाना चाहता हूँ ..
इस वर्ग से मेरा यही कहना है कि
व्यक्तिगत सहनशीलता ज़रूर बहादुरी है,
परन्तु समष्टिगत सहनशीलता तो कमज़ोरी है...
तुझे चुपडी हुई रोटी न मिले,
यह तू प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार ले, यह तेरी बहादुरी है ।
इसमे दो राय नही, परन्तु सारे बबई को घी न मिले और
बबईवासी एक भी शब्द उच्चारे बिना
इस परिस्थिति को स्वीकार ले, यह कमजोरी है ।
और
इससे भी आगे वढकर मै तो कहना चाहूँगा कि
व्यक्तिगत सहनशीलता भी सामग्री के क्षेत्र मे ही स्वीकारी जानी चाहिये,
सद्‌गुण के क्षेत्र मे तो हर्गिज नही ।
तेरे मुँह से कोई घी छीन ले, यह तू खुशी से चला लेगा,
परन्तु
तेरे एक भी सद्‌गुण पर कोई आक्रमण करे, इसे तू
हर्गिज़ न स्वीकार ले... मेरी विचारधारा की यह भूमिका है ।
व्यक्तिगत सद्‌गुण पर हो रहा आक्रमण भी यदि
ललकारने योग्य है, तो यह तो
समष्टिगत सद्‌गुणों पर हो रहे आक्रमण की
बात है । इसे तो स्वीकारा ही कैसे जाय ?
सब पुण्यवान सज्जनो के दिमाग मे यह बात
बराबर जॅच जाय और अपनी-अपनी भूमिका के अनुसार
सद्‌गुणो पर दुर्जनो के द्वारा हो रहे आक्रमण को
हटाने के लिये सव प्रयत्नशील बने,
इसके सिवाय अन्य कोई परिणाम फिलहाल तो मेरे दिमाग मे नहीं ।

महाराज साहेब,

५१

आपकी बात एकदम
व्यवस्थित रूप से समझ गया हूँ.
सामग्री के क्षेत्र मे व्यक्तिगत आक्रमण की
परवाह नही करनी चाहिये, परन्तु
सद्गुण के क्षेत्र मे तो
व्यक्तिगत आक्रमण को भी ज़रूर चुनौती देनी ही चाहिये ।
जब आपकी यह विचारधारा है, तब इस देश के प्रजाजनो को
मिली सद्गुणो की भव्य विरासत व अद्भुत वातावरण को तहस-नहस
करनेवाले दुष्ट शासको के प्रति आपके
आक्रोश को मै समझ सकता हूँ ।
जहॉ तक मेरा खयाल है, वहॉ तक विरासत व वातावरण के साथ एक तीसरे
परिबल 'प्रभाव' की भी बात आप करनेवाले थे ।
मै आपसे विनति करता हूँ कि उस विषय पर आप कुछ समझाये ।

चिन्तन,

प्राचीन काल के शासक प्रभावशाली थे,
अर्थात् उनके प्रजाजनो पर उनका अच्छा प्रभाव था ।
सिर्फ उनकी उपस्थिति ही, दुर्जनो को हिला देने मे काफी थी
सिर्फ उनकी सख्त नजर ही गुनहगारो को
गुनाह कबुल कराने मे सक्षम थी .
उनकी आज्ञा को कोई चुनौती नही दे सकता था
इसके पीछे कुछ परिबल थे
सचालन करने की कुशलता,
विरासत मे मिली खानदानी,
राजवशीय लहू, दीर्घदर्शिता,
प्रजाहितवत्सलता ऐसे अनेक बाह्य व आभ्यन्तर गुणो के
कारण उस जमाने के शासको का जो प्रभाव पडता था,
उस प्रभाव की आज श्मशानयात्रा निकल चुकी है
पाच पाच का खून करनेवाला

खूनी भी आज प्रधानमत्री बन सकता है.
व्यभिचार के गुनाह मे पकड़ा गया गुडा,
जेल मे बैठे-बैठे भी चुनाव लड सकता है ।
सस्कारो से एकदम दिवालिया लफंगा भी
मुख्यमत्री बन सकता है .
सक्षेप मे,
आज तो शासक बनने के लिये दो ही योग्यता जरूरी मानी गयी है ।
उम्र की बालिगता और देश की नागरिकता !
यदि व्यक्ति मे ये दो चीज़ है, तो फिर
वह चाहे जितना लुच्चा-लफगा नालायक-हरामखोर कपटी-क्रूर व
हत्यारा क्यो न हो, फिर भी वह आराम से
सत्तास्थान पर आ सकता है ।

चिन्तन,
स्टीयरिंग व्हील पर बैठनेवाले ड्रायवर की
योग्यता आज जॉची जाती है. .
यदि वह शराबी हो, तो उसे ड्रायविग लायसेस नही दिया जाता ।
अध्यापन करनेवाले शिक्षक,
टेस्टमेचो मे फैसला देनेवाले अम्पायर,
कुश्तीबाजी मे निर्णायक रेफरी,
बैक के मेनेजर .. इन सबकी योग्यता जॉची जाती है, परन्तु आज
सिर्फ एक राजनीति का क्षेत्र ही ऐसा है कि जहॉ
योग्यता का कोई प्रश्न ही नही. .
सारे गॉव के पीने के पानी की टकी
मे ज़हर डालनेवाले को कठोर सजा होती है,
तो पूरे देश का सचालन करनेवाले राजनेता देश के समस्त प्रजाजनो के
जीवन के साथ खिलवाड कर रहे है, क्या उन्हे कोई सजा नहीं ?

चिन्तन,
देश का प्रधानमंत्री पागल नही वनना चाहिये,
यह तो ठीक है, परन्तु गुंडा भी प्रधानमंत्री वनना ही नही चाहिये,
क्या यह भी निश्चित करने की आवश्यकता नही ?

महाराज साहेब,

५२

आपने तो बडी गजब की बात कर दी ।
सवाल तो यह होता है कि छोटे बच्चे
को भी ख्याल मे आ जाय, ऐसी यह बात है
क्या इस देश के बुद्धिजीवियो के
ख्याल मे नही आयी होगी ?
आये दिन सविधान मे सुधार के बारे मे
अपना अभिप्राय व्यक्त करनेवाले कानूनवेत्ताओ की
नजर मे क्या यह सुधार कभी नही आया होगा ?

चिन्तन,

ये सब तो लोकशाही के हिमायती है ।
इस देश के छोटे से छोटे आदमी को भी न्याय मिलना चाहिये,
कमजोर से कमजोर इन्सान को भी अधिकार मिलना चाहिये,
ऐसा माननेवाले वर्ग को यह पता नही कि छोटे को न्याय ठीक है,
कमजोर को अधिकार ठीक है,
परन्तु क्या उसे न्याय,
दूसरे के न्याय की अवगणना करके दिया जाय ?
क्या उसे अधिकार, दूसरे के अधिकार को छीनकर दिया जाय ?
तू एक घर तो मुझे ऐसा बता,
जहॉ घर के प्रत्येक सदस्य को समान अधिकार मिलता हो ।
मम्मी अपने बच्चो को समान मानती है, यह तो ठीक है,
परन्तु सबको समान देती है ?
बडे बेटे को आठ रोटी देती है तो
क्या नन्हे-से दो साल के बेटे को भी आठ रोटी देगी ?
बडे बेटे को पिता धधे के लिये दो लाख रुपये देते है, तो
क्या नौकरी करनेवाले छोटे बेटे को भी दो लाख रुपये देगे ?
इस अभिगम के अनुसार यदि घर चलाया जाय,
तो क्या घर ठीक से चलेगा ?
नही, वहॉ तो पक्का ख्याल है कि

मानना और बात है, और देना दूसरी बात है !
चाहे सबको एक समान मानो,
परन्तु देना तो पात्रता देखकर ही !
मै भी यही पूछना चाहता हूँ कि
एक छोटे से घर को सुचारु रूप से चलाने के लिये
यही अभिगम अपनाया जाना चाहिये, तो
करोडो प्रजाजन जहाँ बसते है, उस देश का सचालन
व्यवस्थित रूप से करने के लिये यही अभिगम क्यो न अपनाया जाय ?
गांधीजी और गोडसे, दोनो को समान अधिकार ?
सज्जन और दुर्जन, दोनो को समान अधिकार ?
खूनी और दयालु, दोनो को समान अधिकार ?
बेईमान और ईमानदार, दोनो को समान अधिकार ?
कुलीन और नीच, दोनो को समान अधिकार ?
चिन्तन,
प्रधानमत्री के सामने ही
उसके केबिनेट के मत्री मार-पीट पर उतर आते है,
और प्रधानमत्री असहाय बनकर बैठे रहते है ।
मंत्री के सामने ही उसका पी. ए. विद्रोह कर बैठता है और
मत्री महोदय कुछ नही कर सकते ।
सचिव के आदेश को चपरासी हवा मे उडा देता है,
मेनेजर के आदेश पर कारकून कोई ध्यान नही देता .
ऐसे प्रभावहीन ओहदे... यह वर्तमान प्रजातत्र के लिये भयकर कलक है
शराबी,
नशाबाज,
देशद्रोही,
व्यभिचारी और
हत्यारे भी देश के सर्वोच्च सत्तास्थान पर जा सकते हो,
उस देश के भविष्य की बात तो दूर रही, परन्तु
उसकी वर्तमान दशा भी किस हद तक बिगडी हुई है, उसका
पता तुझे न हो, ऐसा मै नही मानता ।

५३

चिन्तन,

चाहे जैसे नीच कक्षा के इन्सान को मिलनेवाले
सत्तास्थान का सबसे भयकर कलंक यदि कोई हो,
तो यह है कि
वह नीच इन्सान, हमेशा सत्ताहीन
सज्जन को दबाता ही रहता है ।

वह बदमाश इन्सान, सत्ताहीन सौजन्यशील
को परेशान ही करता है ।
एक छोटे से उदाहरण से मै तुझे यह बात समझा दूँ ?
नगर के राजमार्ग से एक शेर गुजर रहा था,
अचानक उसके कानो मे एक आवाज सुनाई दी,
'ए नालायक ! कहॉ जाता है ?'
जवान सिह यह आवाज सुनकर खडा रह गया
उसने चारो ओर नजर फिरायी, कोई नजर न आया
उसने सोचा कि 'शायद मुझे भ्रम हुआ होगा '
ज्यो ही एक-दो कदम चला कि फिर से आवाज आयी,
'अबे ए बदमाश,
मै तुझसे ही पूछ रहा हूँ कि तू कहॉ जा रहा है ?'
और सिह खडा रह गया ।
उसकी केश-राशि कॉपने लगी ।
और खून गरम हो गया .
''मुझे कोई 'नालायक' और 'बदमाश' कह जाय ?''
क्रोधभरी ऑखो से चारो ओर नजर दौडायी,
परन्तु कोई दिखा ही नही...
यह क्या ?
कोई नजर ही नही आ रहा, तो यह आवाज कहॉ से आ रही है ?
वह आगे कुछ सोचे, इससे पहले ही फिर से आवाज आयी,
'मूर्ख, यहॉ ऊपर देख ऊपर !'
जैसे ही सिह ने ऊपर नजर की वह स्तब्ध रह गया...

छप्पर पर एक बकरा बैठा हुआ था, जो
ऊपर बैठे-बैठे सिह को ललकार रहा था ।
सिह की गर्जना से ही जो कॉपने लगे,
ऐसा कमजोर बकरा,
फिलहाल स्वय को गाली दे रहा था,
इस विचार से ही सिह आवेश मे तो आ गया,
परन्तु करे भी क्या ?
उसने बकरे से सिर्फ इतना ही कहा,
'दोस्त यह तू नहीं बोल रहा, छप्पर बोल रहा है ।
वैसे तेरी यह हैसियत तो नही ।
छप्पर पर से नीचे उतर,
फिर तुझे बता दूँ कि कौन नालायक है और कौन लायक है ?
कमजोर कौन है और बहादुर कौन है ?

चिन्तन,

बस आज की राजनीति की भी यही स्थिति है...
बकरे जैसे दुर्जन
सत्तास्थान पर बैठकर
सिह जैसे सज्जनो को ललकार रहे है. .
परेशान कर रहे है,
कष्ट दे रहे है,
और बेचारे सज्जन कुछ नही कर पाते !
दयनीय बनकर उनके सामने देखा करते है
और उनकी कृपादृष्टि के लिये फॉफे मारते है. .
सिंह जैसे सज्जनोसे मै यही कहना चाहूँगा कि या तो
आप छप्पर पर चढ जाओ या फिर
छप्पर पर चढे हुए बकरो को नीचे उतारो ।

तलहटी पर खड़े सैकड़ों लोगो से शिखर पर खड़ा एक ही इन्सान ज्यादा ताकातवर माना जाता है । सत्तास्थान पर बैठा एक ही आदमी सत्ताहीन सैकड़ो-हज़ारों लाखों लोगों से ज्यादा ताकातवर होता है । वह बात सतत ध्यान मे रखने योग्य है ।

महाराज साहेब,

५४

आपके प्रत्येक शब्द से व्यक्त हुए
आवेश से मै स्तब्ध हो उठा हूँ ।
सबको समान अधिकार देने की
इस लोकशाही पद्धति से
देश की इतनी बुरी हालत
होने पर भी, न जाने क्यो,
जवाबदार अमीर, शिक्षित व सज्जन भी
इस मामले मे कुछ करने को तैयार नही ।
आपके साथ पत्रव्यवहार चलने
से मै इतना तो जरूरत समझने लगा हूँ कि
'बुराई के प्रति सहिष्णुता दिखाना अत्यन्त खतरनाक है ।' एक तरफ
है निर्दय राजनीतिज्ञ और दूसरी तरफ है - निर्बल प्रजाजन,
फिर क्या हालत होगी ?
मै आपसे इतना ही पूछना चाहता हूँ कि
क्या इस मामले मे तुरन्त ही कुछ किया जा सकता है ?

चिन्तन,
अतीत की विरासत व
अतीत के वातावरण को पुनर्जीवित करने की
प्रचड शक्ति जिसमे है,
उस 'प्रभाव' को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये प्रयत्नशील बना
जाय. तभी कुछ अच्छे परिणाम सामने आयेगे ।

जिसकी ऑखे हमेशा शिकार की तलाश मे ही रहती है ।
जिसके होठ प्यालियो के लिये तरसते है,
जिस का मन छल-प्रपच से व्याप्त है,
जिस के हृदय मे, डक के सिवाय और कुछ भी नही,
जिसकी दृष्टि छोटी है जिसकी समझ छिछली है,
जिसकी नजर मे सस्कार की कोई कीमत नही,
ऐसा एक भी व्यक्ति महत्त्वपूर्ण पद पर

न आ जाय, इसका सतत ध्यान रखना चाहिये ।
ऐसा व्यक्ति छल-प्रपच आदि से शायद सत्ता पर आ भी जाय,
लेकिन दुबारा वही व्यक्ति चुनाव मे जीतकर सत्ता पर न आये,
इस विषय मे सतर्क रहने की आवश्यकता है ।
तू जानता ही होगा कि **जो भूतकाल को भूल जाता है,**
उसके नसीब में भूतकाल को
भुगतने की सजा मिले बिना नहीं रहती ।
ब्रिटिशरो की गुलामी का लबा भूतकाल याद न रखे,
तो ज्यादा नुकसान नही होगा, परन्तु
आज़ादी के बाद के भूतकाल को तो तू
सतत अपनी नज़र के सामने रखना ।
जवाहरलाल नेहरु, चरणसिह, मोरारजी देसाई,
जगजीवनराम, गुलजारीलाल नन्दा,
इन्दिरा गाधी, राजीव गाधी, नरसिंह राव. .
इन सबके द्वारा लिये गये निर्णय, इस देश की प्रजा पर उनका असर,
इसका तू तटस्थ रूप से मूल्याकन करना.
तेरी ऑखे रो उठेंगी,
तेरा हृदय करुण पुकार करेगा, तेरा मन विषाद से घिर उठेगा ।
गरीब और अधिक गरीब बना है,
अमीर और अधिक अमीर बना है,
दुर्जन और अधिक दुर्जन बना है, परन्तु
सज्जन और अधिक सज्जन नही बन पाया है ।
मेहनत घटी है,
पैसे बढे है,
सदाचार घटा है,
दुराचार बढा है,
देशप्रेम घटा है,
देशद्रोह बढा है ।
और फिर भी विदेशो के प्रवास पर जानेवाले इस देश के नेता
इस देश के विकास की डीगे हॉका करते है ।

महाराज साहेब, **५५**

'प्रभाव' पर आप इतना जोर देते है,
तो आपसे एक प्रश्न पूछूँ ?
क्या राजाशाही मे तानाशाही का खतरा नही था ?
सत्ता की बागडोर एक ही व्यक्ति
के हाथ मे देने मे कितना खतरा ?
न तो उसके अत्याचारो के सामने
आवाज उठायी जा सकती है और न ही
उसके अनाचारो के सामने ऑख लाल की जा सकती है।
सब कुछ चुपचाप सहन करना ही पडता है।
आप जब भूतकाल को भूलने का मना करते है,
तब मै आपका ध्यान
एक बात पर खीचना चाहूँगा कि
इस देश मे राजाशाही तो थी ही।
परन्तु वे राजा बन गये अत्याचारी,
बन गये सुरा और सुन्दरी के पीछे पागल,
करने लगे प्रजा के हित की उपेक्षा,और इसीके फलस्वरूप इस देश मे आ गयी
लोकशाही। इस विषय मे आपका क्या कहना है ?

चिन्तन,

इसके पीछे (बनाये हुए षड्यत्र को)
रही हुई साजिश शायद तू नही जानता।
परन्तु उसका यहॉ विशद स्पष्टीकरण कैसे करूँ ?
फिर भी एक बात पर तेरा ध्यान खास आकर्षित करना चाहूँगा कि
एक राजा को सारी प्रजा पाल सकती है,
परन्तु सारी प्रजा ही जब राजा बन जाती है,
तब उसको पालना कष्टप्रद बन जाता है।
कभी तुझे वक्त मिले, तो इस देश के राजाओ का इतिहास पढ लेना,
और उनके जीवन मे व्याप्त
अनिष्टो की तुलना

वर्तमान शासको के जीवन मे व्याप्त हुए अनिष्टो के साथ करना !
उस ज़माने मे पशुओ का कत्ल राजमान्य नही था...
उस जमाने मे गर्भपात के लिये इनाम नही मिलता था...
विदेशी मुद्रा के लिये उस जमाने मे
पशुओ के मास का निर्यात नही होता था.
उस जमाने मे विलास के साधन
आम जनता के लिये उपलब्ध नही थे ..
व्यक्तिगत जीवन मे राजा चाहे जैसे भी क्यो न हो,
परन्तु प्रजा की रक्षा करने की अपनी
जिम्मेदारी वे अच्छी तरह से निभाते थे ।
हालॉकि,किसी भी प्रकार की राज्य-व्यवस्था सपूर्ण रूप से
त्रुटि-रहित नही हो सकती और
इसलिये राजाशाही के भी कोई नुकसान नही थे,
ऐसा मै नही कहना चाहता ।
फिर भी मै तुझसे इतना तो जरूर कहना चाहूँगा कि वर्तमानकाल की तथाकथित
लोकशाही (लोकतत्र-प्रजातत्र) बहुत अशो मे टोलाशाही (गुटबाजी) मे और कुछ अशो
मे गुडाशाही मे बदल गयी है .
और बदल रही है । टोले के निर्णय को ही
जहॉ निर्णायक माना जाता हो, उसे लोकशाही कैसे कहा जाय ?
और जहॉ गुंडो की ही *Market Value* हो,
उसे भी लोकशाही कैसे कहा जा सकता है ?
मै तो ऐसा मानता हूँ कि **लोगो का सरकार मे विश्वास,**
यह लोकशाही की सही परिभाषा नही,
परन्तु सरकार का लोगो में विश्वास
यही लोकशाही की सही व्याख्या है ।
प्रजा का हित ही पहले, प्रजा की सलामती ही पहली,
प्रजा की सस्कारिता ही पहली, प्रजा का गौरव ही पहला,
ऐसा जिस किसी सरकार के मन मे वैठा हो,
यही है सच्ची लोकशाही !
कही भी ऐसी सरकार दिखे, तो उसका पता मुझे भेजना ।

महाराज साहेब,

५६

आज लोकशाही,
टोलाशाही और गुडाशाही मे बदल रही है,
इसमे कोई दो राय नही ।
सारी राजनीति अपराधमय बनती जा रही है ।
करीब-करीब तो एक भी नेता ऐसा नही,
जिस पर कोई न कोई आरोप न हो ।
शायद ऐसा कहा जा सकता है कि
Money power,muscle power
और Murder power की
त्रिपुटी से आज की राजनीति व्याप्त है ।
जिसके पास ये तीनो Power हो,
वही शायद चुनाव मे खडा रह सकता है
और वही शायद चुनाव जीत सकता है ।
यदि उसके पास सपत्ति का जोर न हो,
यदि उसके ईर्दगिर्द पाशवी
ताकत धारण करनेवाला टोला न हो,
और यदि उसके पास प्रतिबधक बननेवाला
प्रतिपक्षी उम्मीदवार का काम तमाम करने की
हिम्मत न हो,
तो चुनाव मे जीतना बहुत ही मुश्किल होता है ।
यह है वर्तमान राजनीति की तस्वीर ।
आप चाहे जितने ही चिल्लाया करो,
फिर भी इस पद्धति मे अब परिवर्तन की कोई शक्यता नही ।
दरिद्रता से बचने के लिये धधा करना ही चाहिये
इस समझ मे छूटछाट लेने का मन नही होता,
परन्तु दुर्जनता के इस आक्रमण से बचने के लिये
सब महत्त्वपूर्ण स्थानो पर सज्जनो को पहुँचना ही चाहिये ।
इतनी खराब परिस्थिति देखकर

कई बार छूटछाट लेने का मन हो जाता है।
पत्रव्यवहार के माध्यम से आपने विभिन्न दलीलो के द्वारा
पुण्यवान सज्जनो की निष्क्रियता के
जो दुष्परिणाम आज की प्रजा भुगत रही है,
इसके बारे मे व्यवस्थित रूप से समझाया है,
फिर भी अभी भी ऐसा ही महसूस होता है कि
'इस गदगी मे अपना काम नही'।
इसका कोई विकल्प ?
चिन्तन, इसमे तेरा कोई दोष नही...
आग की भयकर ज्वालाये देखकर
एक बार तो बवेवाला भी
जैसे कॉप उठता है,
चारो ओर जब भयकर रोग फैला हो,
तब जैसे निष्णात डॉक्टर भी एक बार तो डर जाता है,
कौमी दगो मे चलती हुई मार-काट देखकर
एक बार तो साहसी पुलिस भी सिहर उठता है।
फिर भी तुझे यही कहूँगा कि
तूफानो के बीच
टिके रहने में सफलता उसीको मिलती है,
जो स्वयं बलवान होता है, अथवा तो समूह मे होता है।
बलवान स्वयं के बल पर टिका रहता है,
जबकि निर्बल समूह के बल पर टिका रहता है।
अनेक प्रकार की गदगी के आक्रमण के सामने तुझे टिके रहना हो,
तो तुझे यह विकल्प अपनाना ही होगा..
सज्जनता के साथ ही साथ तेरे पास पुण्य की पुजी हो,
तो तुझे नेता बनना पडेगा और
यदि तेरे पास सिर्फ सज्जनता की ही पूंजी हो,
तो तुझे अनुयायी बनकर नेता के हाथो नीचे रहना पडेगा।
दोनो मे से पसंद क्या किया जाय,
यह तो तेरे हाथ मे है।

चिन्तन, ५७

एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वास्तविकता की
ओर मै तेरा ध्यान खींचना चाहता हूँ ।
यदि तू ऑख मे सूरमा न डाले,
तो तेरी ऑख ही कमज़ोर रहेगी
यदि तू पावो मे मालिश न करे,
तो शायद पॉवो मे ताकत न होगी
यदि तू चेहरे पर क्रीम न लगाये, तो शायद चेहरा
कील-मुँहासो वाला रहेगा,
यदि तू पकी हुई अगुली का उपचार न करे,
तो शायद अगुली ही सडने लगती है परन्तु
जब तू मुँह मे भोजन डालने की बात मे लापरवाही बरतता है,
या तो भोजन लेता ही नही, या तो सडा हुआ भोजन लेता है,
या फिर तुच्छ भोजन लेता है,
तब उसका असर शरीर का सब अगोपागो पर पडता है ।
आख-कान-पॉव-हृदय-छाती-फेफडे-हाथ-सर
आदि सब अगोपाग भोजन के अभाव मे अथवा
सडे हुए भोजन के कारण शिथिल,
कमजोर या रोगी बन जाते है ।
ऑख-कान-नाक आदि के मामले मे
लापरवाही बरतनेवाले इस दुनिया मे तुझे शायद कई मिलेगे,
परन्तु खाने के मामले मे लापरवाही बरतनेवाला तो
एक भिखारी भी नही मिलेगा ।
वस,मेरा तुझे यही कहना है कि **वर्तमान जगत मे**
राजनीति ने मुख का स्थान ले लिया है ।
व्यावसायिक क्षेत्र मे लापरवाही से
ज्यादा से ज्यादा सपत्ति पर असर पडता है ।
धर्म क्षेत्र मे लापरवाही से ज्यादा से ज्यादा
सद्‌गुणो पर ही असर पडता है ।

मित्राचारी के क्षेत्र मे बरती जानेवाली लापरवाही
से ज्यादा से ज्यादा मित्रता पर ही असर पडता है
सामाजिक व्यवहार सभालने मे
बरती जानेवाली लापरवाही से ज्यादा से ज्यादा
सामाजिक सबन्ध के क्षेत्र पर ही असर पडता है ।
परन्तु
राजनीति के क्षेत्र मे बरती जानेवाली लापरवाहीसे
किस क्षेत्र पर असर नही पडता, यही सवाल है ।
क्योकि जिस प्रकार मुख का सबन्ध
सब अगोपागो के साथ है,
उसी प्रकार राजनीति का संवन्ध सव क्षेत्रो के साथ है ।
वहाँ जो नीति निश्चित होती है,
उसका असर व्यावसायिक क्षेत्रो पर भी पडता है,
और धर्म क्षेत्र पर भी पडता है,
शिक्षण क्षेत्र पर पडता है,तो भोजन क्षेत्र पर भी पडता है,
जीवनक्षेत्र पर तो पडता ही है, परन्तु जन्मक्षेत्र पर भी पडता है ।
सदाचार क्षेत्र पर तो पडता ही है,
परन्तु नैतिकता के क्षेत्र पर भी पडता है । अरे !
वचनक्षेत्र पर तो पडता ही है, परन्तु विचारक्षेत्र पर भी पडता है
अब तू ही बता, इस क्षेत्र की अवगणना करने का क्या अजाम होगा ?
मुख के क्षेत्र में बरती जानेवाली लापरवाही
सिर्फ एक ही व्यक्ति के जीवन की समाप्ति का कारण वनती है, परन्तु देश
के मुख के स्थान पर रही हुई
राजनीति के क्षेत्र मे बरती जानेवाली
लापरवाही तो करोडों प्रजाजनो के
संस्कार-सलामती-सद्विचारो की मौत का कारण वनती है...
अब तो तूझे कबूल करना ही पडेगा न
कि किसी भी कीमत पर पुण्यवान सज्जनो
राजनीति मे प्रवेश करके
के पूरे शरीर को बचा ही लेना चाहिये !

महाराज साहेब,

अन्तिम एक ही खभे के
सहारे टिकी हुई इमारत,
उस खभे के हटते ही जैसे धराशायी हो जाती है,
इसी प्रकार आपके पिछले पत्र के चिन्तन ने
राजनीति मे नही घूसने की मेरी रही-सही मान्यता
को भी धराशायी कर डाला है
अव कोई शका नही रही कि
पुण्यवान सज्जनो को
राजनीति मे जाना चाहिये या नही ?
एक चीटी जैसी चीटी भी
यदि अपने मुख की उपेक्षा नही करती
तो इस देश का सामान्य से सामान्य प्रजाजन
भी राजनीति की उपेक्षा करे, यह कैसे चल सकता है ?
हॉ, हो सकता है कि सब
अपनी अपनी पात्रता के अनुसार योगदान दे
पुण्यवान व्यक्ति नेतृत्व स्वीकारे,
पुण्यहीन सज्जन पुण्यवान सज्जन के नेतृत्व को मान्य करे ।
पुण्यवान सज्जन के मार्गदर्शन की
जनसमूह अवगणना न करे
जैसी जिसकी पात्रता और जैसी जिसकी भूमिका ।
परन्तु उपेक्षा तो हर्गिज नही ।
अब एक महत्त्वपूर्ण सवाल
पहले के जमाने मे करीब-करीब
प्रत्येक शासक के सर पर धर्मगुरु थे ।
अर्थात् धर्मगुरु का मार्गदर्शन था .
अकबर ने जगद्गुरु हीरसूरि महाराज को सर पर रखा था,
तो कुमारपाल ने कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि महाराज
को सर पर रखा था ।

शिवाजी के सर पर स्वामी रामदास थे,
तो सिकदर के सर पर एरिस्टोटल थे.
महामत्री पेथडशा को
धर्मघोषसूरि महाराज का मार्गदर्शन मिलता था,
तो महामत्री वस्तुपाल-तेजपाल वर्धमानसूरि महाराज
के पास से मार्गदर्शन पाते थे .
आम राजा बप्पभट्टीसूरि महाराज का भक्त था,
तो सप्रति राजा
आर्य सुहिस्तसूरि महाराज का भक्त था .
मै यही पूछना चाहता हूँ कि क्या यह जरूरी है ?
शासको का क्षेत्र होता है राजनीति का,
जबकि धर्मगुरु का क्षेत्र होता है साधना का ।
उनका इस क्षेत्र मे हस्तक्षेप कितना उचित है ?
चिन्तन, परमात्मा के मार्गदर्शन के नीचे
जीवन जीने मे सत का गौरव है,
तो सत का मार्गदर्शन पाते रहने मे सज्जन का गौरव है ।
इसमे भी यहाँ तो सज्जन शासक भी है .
उसके सर पर सिर्फ स्वय की
अकेले की जवाबदारी नही, अनेको की जवाबदारी है ।
उसका एक ही गलत निर्णय करोडो के
जीवन को तहस-नहस करने के लिये काफी है !
ऐसे सभवित नुकसान मे से उबरने के लिये
सज्जन शासक को अपने सर पर धर्मगुरु रखने ही चाहिये
व उनके मार्गदर्शन पर अमल करना ही चाहिये ।
इसी संदर्भ मे एक महत्त्वपूर्ण बात बता दूँ ?
जिसमे भी कुछ कमी (खामी) हो,
उसे अपने सर पर स्वामी रखना ही चाहिये...
विद्यार्थी शिक्षक को सर पर रखे...
शिष्य गुरु को...
व शासक संत को ।

चिन्तन,

एक महत्त्वपूर्ण बात की ओर
मै तेरा ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा,
जिससे तू समझ सके कि शासक को
क्यो किसी सत को सर पर रखना चाहिये ?
क्या तू जानता है ?
अग्रेजी मे एक शब्द है -
Information इसका अर्थ है -'खबर'
यह कही से भी मिल सकती है .
जरूरी नही कि यह खबर देनेवाला पढा-लिखा ही हो,
अनपढ के पास से भी खबर तो मिल सकती है.
जरूरी नही कि खबर देनेवाला सज्जन ही हो,
खबर दुर्जन भी दे सकता है ।
उदा के लिये -
तुझे जोर से प्यास लगी है .
तू सडक पर चल रहा है ।
पानी कहॉ से मिल सकेगा, यह तुझे जानना है ।
यह तो तू सडक के किसी होटलवाले के
पास से भी जान सकता है,
और राह गुजरते किसी
देहाती के पास से भी जान सकता है ।
यह खबर गलत ही मिले ऐसी सभावना नही ,
तो खबर देनेवाला गलत खबर दे,
तो भी इससे नुकसान ही हो, ऐसी भी सभावना नही .
सक्षेप मे
सिर्फ 'खबर' के स्तर पर
ही तुझे आगे बढ़ना हो,
तो इसके लिये ज़रूरी नही कि
तुझे संत के आगे ही जाना पड़े

या सज्जन के आगे ही जाना पड़े ।
तू चाहे जिसके पास जाय, खबर पा सकता है
और खबर के अनुसार प्रवृत्त-निवृत्त हो सकता है ।
परन्तु खबर के बाद दूसरा सोपान है ..जानकारी ।
इसके लिये अंग्रेजी मे शब्द है. . Knowledge ।
यह पाने के लिये तुझे अमुक व्यक्ति के पास ही जाना पडता है । 'पानी कहाँ है ?'
यह तो कोई भी बता सकता है, परन्तु 'पानी क्या है ?'
यह हर कोई नही बता सकता ।
अमुक व्यक्ति के द्वारा ही यह जाना जा सकता है ।
गॅवार या व्यापारी,
वकील या मेनेजर यह नही बता सकता ।
वैज्ञानिक अथवा वैज्ञानिक का अनुयायी ही यह वता सकता है ।
उसके पास से ही यह जानने का आग्रह रखना पडता है ।
क्योकि गलत-खबर से जितना नुकसान नही,
उससे अनेक गुणा
नुकसान गलत जानकारी से होता है ।
H_2O= पानी
यह है.. 'पानी क्या है ?'
इसकी जानकारी ।
अब इस जानकारी के वदले
H_3O = पानी,
ऐसी जानकारी तुझे कही से मिल जाय
और इसके आधार पर तू
इस क्षेत्र मे सशोधन करने के लिये आगे बढता जाय,
तो तेरी मेहनत व्यर्थ होगी, तेरा समय बर्बाद होगा,
तेरी सामग्री बेकार जायेगी ।
इस सभवित अपाय से बचने का श्रेष्ठ विकल्प है -
सही जानकारी हासिल करना और
यह पाने के लिये
सही व्यक्ति के पास ही जाना ।

चिन्तन,

६०

खबर और जानकारी के बाद
एक सबसे महत्त्वपूर्ण सोपान है -सयानापन,
समझदारी, जिसे
अंग्रेजी मे Wisdom कहा जाता है ।
'पानी कहाँ है ?'
इसकी खबर तो एक देहाती भी दे सकता है,
परन्तु 'पानी का उपयोग किस प्रकार किया जाय ?
यह होशियारी तो किसी समझदार
व अनुभवी व्यक्ति के पास से ही मिल सकेगी बस,
शासक को किसी सत को सर पर रखना ही चाहिये,
ऐसा कहने के पीछे मेरा आशय यही है ।
खबर व जानकारी तो शायद कम्प्युटर भी दे सकता है ।
धरती की गहराई मे कहाँ कौन सी चीजे पडी है ?
इसकी खबर तो उपग्रहो के पास से मिल सकती है ।
इन चीजो में कौन-सा तत्त्व कितने प्रमाण मे है ?
इसकी जानकारी कम्प्युटर के पास से पायी जा सकती है,
परन्तु इन तत्त्वो का उपयोग
कब, कैसे, क्यो और कितना करना चाहिये,
इसकी समझदारी तो अनुभवी
के पास से ही पायी जा सकती है ।
चिन्तन,
वर्तमानकाल मे कमी
खबर देनेवाले या जानकारी देनेवाले की नही,
परन्तु समझदारी या होशियारी देनेवाले की है ।
विज्ञानयुग का यही तो अभिशाप है ।
खबर व जानकारी के क्षेत्र मे तो
उसने शायद लबी छलाग मारी है ।
केल्क्युलेटर व कम्प्युटर, केबल व

उपग्रह, सबमेरीन व रॉकेट, मिसाइल्स व बम,
ज़ेरॉक्स व फेक्स..
इन सब साधनो ने शायद
भूतकाल के सब साधनो को पीछे धकेल दिया है .
परन्तु सबसे बडी खराबी यह है
कि विज्ञान की इस छत को
धर्म का कोई आधार नही...
खबर व जानकारी का
यह सुविशाल वृक्ष समझदारी के
मूल से बिल्कुल अलग पड़ गया है ।
बुद्धि की सूक्ष्मता व तीव्रता के पीछे
ह्रदय की संवेदना का कोई पीठबल नही ।
सामग्रियो की इस भरमार को
सदुपयोग की कोई कला नही मिली है ।
तूने पूछा था न कि क्या सतो को
सर पर रखना शासक के लिये अनिवार्य है ?
इसका जवाब यह है...
जैसे छत को नीव का आधार होना चाहिये,
वृक्ष का मूल के साथ सबन्ध होना ही चाहिये,
बुद्धि को सवेदनशीलता के अधीन रहना ही चाहिये, ठीक वैसे ही,
शासको को सतो के मार्गदर्शन के नीचे रहना ही चाहिये ।
आज़ादी के बाद इतने सालो मे
शासकपक्ष द्वारा हुई इस भयकर कक्षा की
भूल का परिमार्जन जरूर होना ही चाहिये ।
बालमन्दिर मे उत्तीर्ण होना चाहनेवालों की अपेक्षा
पी. एच. डी. होना चाहनेवालो को ज्यादा आधार लेने पडते है,
तो सत्ताहीन सज्जनो की अपेक्षा
सत्तावान सज्जनो को ज्यादा से ज्यादा मजबूत
व समर्थ व्यक्तियो का आधार लेना ही पडे,
इसमें भला समझाने की क्या आवश्यकता है ?

६१

महाराज साहेब,

आपके पिछले दो पत्रो ने
समझ को एकदम सम्यक् बनाया है .
पुण्यवान सज्जनो को
राजनीति मे प्रवेश करना ही चाहिये,
यह बात जितनी महत्त्वपूर्ण है,
उससे भी महत्त्वपूर्ण बात तो यह है
कि प्रत्येक शासक को
अपने सर पर किसी संत को रखना ही चाहिये ।
सज्जनो को सत्ता मिले और साथ ही साथ
सतो का सानिध्य भी मिले,
इन दोनो बातो मे सफलता मिले, तो ही
आप जो परिणाम पाना चाहते है,
वह परिणाम इस दुनिया को देखने मिले ।
एक महत्त्वपूर्ण बात कह दूँ ?
पिताजी की जोरदार सिफारिश होने से
एक महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी के पी.ए. के रूप मे
मेरी नियुक्ति तीन दिनो पहले हुई है ।
पत्र आ गया है ।
दो दिन बाद मुझे अपने काम पर लग जाना है ।
आपके साथ चले इस दीर्घकालीन पत्र-व्यवहार से मै इतना जरूर समझा हूँ कि यह Post मेरे लिये चुनौती रूप है ।
मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस विषय पर
आप मुझे कुछ सम्यक् मार्गदर्शन देने की कृपा करे ।

चिन्तन,

एक छोटे-से दृष्टान्त के द्वारा यह बात मै तुझे समझाना चाहता हूँ ।
एक गरीब ब्राह्मण के घर सबसे बडी
बेटी के ब्याह का प्रसग आया । ब्राह्मण परेशानी मे पड गया कि
यह शादी का प्रसग कैसे आयोजित करूँगा ?

एक तरफ तो भयकर गरीबी और दूसरी तरफ जालिम हताशा, इन दोनो परिवलो ने उसे आत्महत्या के विचार मे चढा दिया ।
उसने मर जाना तो निश्चित किया, परन्तु एक विचार यह भी किया कि यो ही मर जाने से बेहतर है –
जगल में जाकर सिह के मुख मे चवाया जाना ।
मेरा काम हो जाय, सिह का पेट भर जाय
और इस बहाने एक निर्दोष जीव के प्राण वच जाये ।
इस विचार के साथ वह जगल की ओर गया ।
जैसे ही जगल मे घुसा, वही गुफा के पास बैठे हुए
सिंह की नजर उस पर पडी और
सिह तो शिकार के लिये तैयार हो गया ।
लेकिन उसी वक्त पेड़ पर वैठे हस ने सिह को आगे वढने से रोका ।
उसने सिह से कहा...
'आप तो जगल के राजा है,
आपको इस गरीव ब्राह्मण को वचाना चाहिये या मार डालना चाहिये ?
और दूसरी बात, दो साल पहले आपने एक धनवान को मारा था,
उसके शरीर के सारे गहने आपकी गुफा मे ही पडे है ।
आप ये गहने ब्राह्मण को दे दीजिये, जिससे
उसके घर आया हुआ शादी का प्रसग ठीक से सपन्न हो जायेगा
और ब्राह्मण के प्राण वच जायेगे ।'
हस की यह सलाह सिंह को जॅच गयी ।
धीमे कदमो से वह ब्राह्मण के पास गया,
अपने दातो से उसकी धोती पकडकर
उसे गुफा तक ले आया और कोने में पडे हुए गहने उसे दे दिये ।
ब्राह्मण अत्यन्त खुश हो गया ।
गहने बेचकर उसने वेटी की शादी वडी धूमधाम के साथ की ।
ब्राह्मण वच गया और उसका सारा कुटुव वच गया...
किसीको पता भी न चला कि यह सव हुआ कैसे ?
सिर्फ तीन व्यक्ति ही यह वात जानते थे..
ब्राह्मण, सिंह और हंस !

६२

महाराज साहेब,

उसी ब्राह्मण के घर दो साल बाद
फिर से दूसरी लडकी की
शादी का प्रसग उपस्थित हुआ ।
ब्राह्मण ने सोचा कि
चलो, फिर से उसी सिह के पास जाऊँ ।
पिछली बार भी उसने मुझे मदद की है,
तो इस बार भी वह मुझे मदद किये बिना नही रहेगा ।
पूरे विश्वास के साथ ब्राह्मण जगल की ओर चला
जैसे ही उसने जगल मे प्रवेश किया,
पहले की तरह ही सिह की नजर उस पर पडी
उस वक्त सिह ने एक सेठ के पुत्र को मारा था,
जिसके गहने सिह की गुफा मे पडे थे ।
सिहने सोचा कि इस बार भी पहले की ही तरह
मै इसे मदद करूँ ।
जैसे ही उसने ब्राह्मण की तरफ जाने के लिये
कदम उठाये उसी वक्त वृक्ष पर बैठे
कौए ने सिह को रोकते हुए कहा, 'राजन !
बहुत दयालु बनने की जरूरत नही ।
आप हर बार मदद ही करते रहेगे, तो
किसी दिन जान से भी हाथ धोने पडेगे ।
यह मानव की जात तो है -
दगाबाज,
क्रूर,
कपटी ।
कब आपको अपने चगुल मे फँसा दे,
आपको पता भी नही चलेगा । मै तो आपको यही सलाह दूँगा कि
स्वय सामने से आपके पास आ रहे
इस ब्राह्मण का काम तमाम कर ही दीजिये. .

मनुष्य मरेगा, तो शहर मे से एक मनुष्य की सख्या कम होगी ।
अपनी जगल की सख्या तो यथावत् रहेगी ।'
कौए के इस होशियारी भरे प्रस्तुतीकरण से
सिह के दिमाग मे बात बराबर बैठ गयी ।
ब्राह्मण के पास जाने के बदले उसने सीधे ही छलाग मारी ।
ब्राह्मण कुछ समझे, इससे पहले तो सिह ने उसे
मारकर परलोक की ओर रवाना कर दिया ।

चिन्तन,

सिह तो वही था,
ब्राह्मण भी वही था,
प्रसग भी दोनो बार समान ही थे, फिर भी
पहले प्रसंग मे सिंह ने ब्राह्मण के प्रति उदारता दर्शायी व
दूसरे प्रसग मे सिह ने ब्राह्मण को खत्म कर दिया ।
इसका एक ही कारण था ।
पहले प्रसग मे सिह का पी.ए. हस था,
जबकि दूसरी बार के प्रसग मे सिह का पी.ए कौआ था ।
एक महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी के पी.ए. के रूप मे तेरी नियुक्ति हुई है,
और सबके लिये तूने मेरे पास सम्यक् मार्गदर्शन मागा है न ?
मै तो तुझे यही सलाह दूँगा कि
पी.ए. बनकर हस जैसा कार्य ही करना,
कौए जैसा नही...
पदाधिकारी तो सिंह जैसे ही होते हैं, परन्तु
उन्हे उदार बनाना या कंजूस बनाना
कोमल बनाना या कठोर बनाना
तो पी.ए. के हाथ मे ही होता है...
तेरी सज्जनता मे मुझे कोई शका नही, इसीलिये
मै पूर्ण श्रद्धा के साथ तुझे कहता हूँ कि मेरा चिन्तन हंसकार्य ही करेगा,
और काककार्य के लिये उसे मजबूर किया जाय
तो भी वह पूरी ताकत लगाकर उसका प्रतीकार करेगा
परन्तु काककार्य तो हर्गिज नही करेगा ।

महाराज साहेब,

६३

आपके पिछले दोनो पत्र तीन बार पढे ।
आखरी पत्र की आखरी पक्ति पढते-पढते मेरी
ऑखो से अश्रू बहने लगे ।
इस विषय मे ज्यादा तो क्या लिखूँ ?
परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि
आपने मेरे प्रति जो श्रद्धा रखी है,
उसे चरितार्थ करने का सत्त्व मुझमे सदा बना रहे ।
न लालच मुझे झुका सके,
न लाचारी मुझे कमज़ोर बना सके ।
हंसकार्य करने से मैं कभी पीछे न हटूँ और
काककार्य करने के लिये मै कभी तत्पर न बनूँ ।
यदि मुझमे इतना सत्त्व टिका रहेगा,
तो मुझे लगता है कि
आपके साथ चल रहा पत्र व्यवहार
उसके सम्यक् परिणाम को लाने मे अवश्य सफल बनेगा ।
अब आये मुख्य बात पर
हस और कौए के माध्यम से वैसे तो
आपने बहुत कुछ कह दिया है, फिर भी
सवाल यह उठता है कि
क्या हमेशा के लिये परिस्थिति ऐसी ही रहती है ?
चिन्तन,
चाहे साम्यवाद हो या साम्राज्यवाद,
चाहे राजाशाही हो या लोकशाही, चाहे जनतत्र हो या गणतत्र,
राजनीति की यह परिस्थिति हमेशा के लिये एक जैसे ही रही है ।
तुझे शायद पता ही होगा कि
राजाशाही के जमाने मे
सबसे ज्यादा ताकतवर मत्री ही माना जाता था ।
राजा की परिभाषा ही यह थी कि राजते इति राजा !

जो सिर्फ शोभित हो, सिहासन को शोभित करे, वही राजा !
वैसे सत्ता की बागडोर तो मत्री के हाथ मे ही रहती थी ।
वह यदि होशियार, समझदार व दीर्घदर्शी होता, तो राजा का जयजयकार व प्रजा को आनद होता, परन्तु वह यदि कपटी, क्षुद्र व नालायक होता, तो राजा की बदनामी होती और प्रजा का सुख-चैन छीन जाता ।
भूतकाल की ओर जरा एक नजर डाल ।
तुझे वास्तविकता समझ मे आ जाएगी ।
वस्तुपाल,
तेजपाल,
शकडाल,
उदयन,
पेथडशा,
विमल,
श्रीयक,
ये सब कौन-से पद पर थे ? मत्री पद पर ही तो थे ।
फिर भी आज हालत यह है कि बहुजन वर्ग की जुबान पर उनके नाम जितने चढ़े है, उतने राजाओ के नही ।
इसका कारण ? यही एक कारण ।
राजाओ के शरीर मे ये सब मत्री 'आख' के स्थान पर थे ।
उन्होने हमेशा अच्छा ही देखा
और खराब दिखा, उसे भी अच्छा करने का ही विचार किया ।
इन सब बातो मे इन सबको ज्वलत सफलताये मिली और इसीके फलस्वरूप राजाओ के राज्य टिक गये और प्रजाजनो के हित की भी रक्षा हुई ।
चिन्तन,
राजा के पास जो स्थान मंत्री का था,
वही स्थान आज मंत्री के पास पी.ए. का है ।
तुझे मिले हुए पी.ए के स्थान की कितनी प्रचड ताकत है,
इसका अदाज तुझे इसीसे आ जाएगा.
मेरे अन्तर की शुभेच्छा है कि
तुझे मिले हुए स्थान का गौरव बनाये रखने मे तू जरूर सफल बनेगा ।

महाराज साहब,

६४

आपने तो गजब की बात की ।
इस वास्तविकता के हिसाब से तो
ऐसा ही लगता है कि पी ए. की ताकत तो
प्रचड है ही परन्तु
उसकी जिम्मेदारी तो मत्री से भी बढकर है ।
क्योकि
कार मे बैठा हुआ सेठ चाहे पीछे बैठा हो,
फिर भी कहलाता तो है मालिक ही न ?
परन्तु ड्रायवर ही खराब हो और कार को गड्ढे मे गिरा दे,
तो सेठ भी खत्म हो जाता है न ?
बस, इसी प्रकार **कुर्सी पर चाहे मंत्री बैठता हो,**
परन्तु उसका पी.ए. यदि बदमाश हो,
तो बेजवाबदार नीतियों पर अमल द्वारा
वह मंत्री की आबरू को धक्का ही पहुँचायेगा न ?
अच्छा हुआ,
आपने मुझे मिले हुए ओहदे की जिम्मेदारी का भान करा दिया ।
इस मामले मे मै जरूर जाग्रत रहूँगा ।
परन्तु, एक सवाल पूछूँ ?
आपके पत्र आने पर घर मे सब पढते है
आपकी तर्कबद्ध दलीलो के बारे मे मेरे पप्पा, बडे भाई
आदि के साथ चर्चाये भी होती है
आपकी विचारधारा के साथ सब सम्मत भी होते है .
परन्तु एक दिन सबके बीच मे मैने
जब मेरा निर्णय घोषित किया कि 'आज नही तो कल,
अवसर मिलते ही मै राजनीति मे जानेवाला ही हूँ ।
जिसे धधा सभालना हो, वह धधा सभाले,
मेरी खुद की भावि योजना तो यह है ।'
बस,

उसी दिन से घर मे एक प्रकार का
विरोध का वातावरण पैदा हुआ है ।
हालाँकि, परिवार मे ऐसा कोई सघर्ष नही,
कोई क्लेश नही, सबके साथ बातचीत भी
पहले की ही तरह चलती है,
परन्तु जैसे ही राजनीति की बात आती है,
वही, वातावरण मे गर्मी आ जाती है ।
सब ऊँचे सुर से बोलने लगते है,
कभी-कभी कहा-सुनी भी होने लगती है ।
मै आपसे यही पूछना चाहता हूँ
कि इस मामले मे कैसा अभिगम अपनाया जाय ?
विरोध पर ध्यान देते हुए इस विकल्प पर पूर्णविराम रख दिया जाय ?
या फिर पूरी तरह से समझाने पर भी इस विकल्प पर गभीरता से विचार करने के लिये
कोई तैयार ही न हो, तो क्या इस विरोध की अवगणना करके भी आगे बढा जाय ?

चिन्तन,
यदि तेरी निष्ठा सम्यक् है,
तेरा पुण्य मज़बूत है,
तेरी समझ बराबर है,
तेरी सज्जनता की वृत्ति पक्की है,
तो मेरा यही कहना है कि
विरोध की ज़्यादा परवाह मत करना ।
हालाँकि, इस विकल्प के लिये तेरे परिवार मे जिनका भी विरोध होगा, उन सबकी
करीब-करीब यह एक ही दलील होगी कि 'राजनीति की गदगी मे जाने का कान आना
नही । जहाँ कोई हमेशा के लिये मित्र नही, हमेशा के लिये शत्रु नही, ऐसे क्षेत्र मे
जाकर हम जो अपना है, वह भी क्यो खो दे ? यदि लोगो की सेवा ही करनी है, तो
क्या वह बिना ओहदे के नही हो सकती ?
राजनीति मे जाने का तो नाम ही नही लेना ।'
ये ही दलीले है . या दूसरी भी कोई दलीले है ?
यह तू मूझे लिखना,
जिससे मै तुझे सही मार्गदर्शन दे सकूँ ।

६५

महाराज साहेब,

आपने जो दलीले लिखी है, वे ही है ।
एक और दलील यह भी है कि
इस क्षेत्र मे जाने से बिना कारण ही
हमे कई मुसीबतो का सामना करना पडेगा
व्यवसाय के क्षेत्र मे भी हमे विरोधी परेशान करेगे
यह तो राजनीति है राजनीति ।
जो हमारे साथ नही, वे सब हमारे सामने है
ऐसा मानकर सबके साथ हमे नये सिरे से
व्यवहार बनाने पडेगे
ऐसी दलीले चालु है . अब मै क्या करूँ ?

चिन्तन,
सिर्फ इसी क्षेत्र मे नही,
किसी भी क्षेत्र मे जब विशिष्ट प्रकार के
अभिगम को स्वीकारने की बात आती है,
तब इन्सान को करीब-करीव तीन प्रकार के
प्रतिभाव से गुजरना ही पड़ता है ।
ये तीन प्रतिभाव है -
विरोध,
उपेक्षा और
पूजा ।

तुझे मै औरो की बात तो क्या करूँ ?
मेरे स्वय के जीवन की ही बात करूँ ?
पूज्यपाद गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनकर
जब ससार का त्याग करके साधु जीवन
अगीकार करने का मेरा निर्णय मैने परिवार
के बीच घोषित किया, तब घर मे खलबली मच उठी
प्रचड विरोध भी उठा. .
ममत्व के कारण इस विकल्प पर परिवार सम्मति की मोहर सीधी नही लगाये, यह वात

तो समझी जा सकती थी। इसीलिये तो इस विरोध के बीच भी तनिक भी चलित हुए
बिना जब इस दिशा मे जाने की तैयारी मैने जारी ही रखी,
तब विरोध शान्त होता गया, परन्तु उपेक्षा बढ़ती गयी।
'इसे जो करना है करे, आखिर हम कब तक समझाते रहे ?'
ऐसा उपेक्षा का ठड़ा रूख शुरू हुआ।
इस उपेक्षा की भी परवाह किये बिना जब मैने साधुजीवन स्वीकार ही लिया, तब
साधुजीवन के इतने वर्षो बाद आज वही परिवार साधुजीवन स्वीकारने के लिये मुझे
धन्यवाद देता है।
सक्षेप मे, विरोध, उपेक्षा व पूजा,
ये तो ऐसे क्रान्तिकारी कदम के तीन अनिवार्य प्रतिभाव है
हॉ, इन्सान को दो सोपानो से छलाग मारनी है।
विरोध के प्रति लापरवाही और
उपेक्षा की अवगणना। यदि इन दो सोपानो की छलाग लगायी जाय
तो समाज 'पूजा' का प्रतिभाव दिए बिना नही रहता।
हालाकि, विरोध व उपेक्षा की भी
परवाह न करने का सत्त्व सिर्फ सम्यक् क्षेत्र मे ही दिखाना है,
यह तू एक पल के लिए भी मत भूलना।
क्योकि आज ऐसे बेशर्म लोग भी हैं,
जिन्होने अपनी बेशर्मी को पुष्ट करने के लिये
शिष्ट पुरुषो के सम्यक् विरोध और
ठडी उपेक्षा की भी बिल्कुल परवाह नही की है।
इसका परिणाम ?
उन्हे समाज की ओर से 'पूजा' तो नही मिली,
परन्तु तिरस्कार ही मिला है।
जिस प्रवृति के अन्तिम परिणामस्वरूप तुझे 'पूजा' प्राप्त हो,
शिष्ट पुरुषो के अभिनन्दन मिले, उस प्रवृत्ति के प्रारभकाल
के विरोध अथवा मध्यकाल की उपेक्षा की ज्यादा परवाह मत करना।
तेरी सूक्ष्म व शुद्ध प्रज्ञा के लिये मुझे गौरव है।
इसीलिये मै मानता हूँ कि मेरी इस 'विरोध-उपेक्षा-पूजा'
की विचारधारा को समझने मे तू बिल्कुल गलतफहमी नहीं करेगा।

६६

महाराज साहेब,

पूरा चित्र स्पष्ट तो हो गया, परन्तु
आपके पत्र ने तो
कमाल का चमत्कार कर दिखाया
मेरे पप्पाने आपका पत्र पढकर भावि कदम के लिये
मुझे सहर्ष सम्मति दे दी
'मेरे द्वारा दिये गये सस्कारो पर मुझे भरोसा है ।
प्रलोभनो को चुनौती देने की तेरी क्षमता मै जानता हूँ ।
गलत वातावरण के बीच भी स्वय को
स्वस्थ व स्वच्छ रखने की तेरी मर्दानगी मैने कई बार देखी है,
और तुझे तो एक सत के आशीर्वाद भी मिले है .
उनका मार्गदर्शन सतत तेरे साथ है
इन सब परिबलो के आधार पर ही मै तुझे कहता हूँ कि
यदि तुझे महत्त्वपूर्ण ओहदे पर आरूढ होना हो, तो मै तुझे
प्रसन्नतापूर्वक सम्मति देता हूँ '
इतना बोलते-बोलते तो पप्पा का कठ रूध गया
आपके आशीर्वाद का बल तो
मेरे पास था ही और उसमे भी
पप्पा की प्रसन्नतापूर्वक की सम्मति का बल मिला ।
मेरी खुशी का कोई पार नही
परन्तु
महाराज साहेब, एक विचार यह आ जाता है कि
जिनको खुद का कोई स्वार्थ नही
जिनके हृदय मे जीवमात्र के कल्याण की कामना है,
जिनके पास दीर्घदृष्टि है,
जिनके पास फायदे व गैरफायदे को समझने की विशिष्ट क्षमता है,
ऐसे संत ही राजनीति मे आ जाये, तो क्या हर्ज है ?
चाहे जैसा भी सज्जन, आखिर तो सयोगो का शिकार है,
परिवार से घिरा है, दोषो से सना है,

बहुत सावधानी रखने पर भी उसके
पतन व स्खलन की संभावना है।
इस संभवित अपाय से बचने के लिये
संत स्वयं ही राजनीति की बागडोर संभाल लें,
तो क्या हर्ज है ?

चिन्तन,

यह अभिगम बहुत खतरनाक है....
जिस प्रकार दुर्जनों को सत्ता से दूर ही रहना चाहिये, उसी प्रकार
संतों को भी सत्तास्थान से दूर ही रहना चाहिये।
दुर्जनों को दुर्जनता फैलाने में सत्ता प्रचंड ताकत देती है,
तो यही सत्ता
संतों को अपनी साधना से भ्रष्ट करने में
प्रबल निमितरूप बन सकती है।
प्रधानमंत्री को सेना का प्रमुख नहीं बनाया जा सकता, तो
संत को
प्रधानमंत्री के पद पर कैसे बिठाया जाय ?
क्या बताऊँ तुझे ?
संत तो परमात्मा बनने निकला अध्यात्म जगत का योगी है।
वह तो अपने शरीर के प्रति भी निःस्पृह है।
न तो है उसे जीवन की ऐसी कोई जोरदार
आसक्ति या न है उसे जीवन की समाप्ति का कोई भय

ऐसे जगत के बीच में रहने पर भी
जगत से सर्वथा अलिप्त संत को
राजनीति में लाने की बात तो आकाश में उड़ते गरूड़ को
झोंपड़ी के छप्पर पर बिठाने की बालिश चेष्टा है।

इस विकल्प पर तू कभी विचार भी मत करना।
आग की गर्मी से रोटी बनायी जा सकती है,
इसीलिये आग के साथ आलिंगन करने नहीं जाया जाता।
संत के मार्गदर्शन से सुव्यवस्था बनायी जा सकती है,
परन्तु इतने मात्र से संत को कुर्सी पर नहीं बिठाया जा सकता।

महाराज साहेब,

आपने तो बहुत सुन्दर समाधान कर दिया है ।
सत कक्षा की विरल विभूति को कुर्सी जैसी
कनिष्ठ चीज पर बैठने के लिये मैने सूचन किया,
इस गुस्ताखी के लिये मै अन्तर से क्षमा मागता हूँ ।
आपश्री उदार दिल से मुझे क्षमा करेगे,
ऐसी मुझे पूर्ण श्रद्धा है ।
फिर भी एक छोटी-सी शका यही रहा करती है कि यदि सत को राजनीति मे नही आना है,
तो सत को राजनीति मे दिलचस्पी क्यो ?

चिन्तन,
तेरी शका सुन्दर है । अब सुन इसका समाधान ।
सत को सपत्ति मे कोई दिलचस्पी न होने पर भी
इस सपत्ति के पीछे पागल बनकर इन्सान राक्षस न बन जाय,
ऐसी करूणाभावना से सत ने इन्सान को
सपत्ति को नीति से नियत्रित करने की सलाह दी ही है न ?
सत अब्रह्म के सेवन से सर्वथा मुक्त होने पर भी अब्रह्म का गुलाम इन्सान
पशु के लिए भी शर्मजनक काम न कर बैठे, इस करुणाभावना से सतने वासना को
सदाचार से नियत्रित करने की सलाह दी ही है न ?
सक्षेप मे,
संत बनने के लिये असमर्थ इन्सान कम से कम
सज्जनता तो टिकाकार ही रखे, ऐसी करूणा से
संत ने
अर्थ और काम मे स्वयं को बिल्कुल दिलचस्पी न होने पर भी
अर्थ और काम को स्वयं सर्वथा छोड़ने योग्य मानते हुए भी,
अर्थ को नीति से व काम को सदाचार से
नियत्रित करने की सलाह इन्सान को दी ही है न ?
बस, राजनीति की बात मे भी यही नियम लगा देना ।
पद- प्रतिष्ठा-ख्याति व महत्ता से सर्वथा अलिप्त होने पर भी

संत ने
राजनीति मे दिलचस्पी इसलिये ली है कि
सत्ता जैसी विराट ताकत को पाकर इन्सान,
इन्सान के चोले मे राक्षस न बन जाय !
करोडो प्रजाजनो के शील व सदाचार के साथ
वह खिलवाड न करने लगे !
करोडो इन्सानो के जीवन को वह दॉव पर न रख दे
सज्जनो की सज्जनता का,
वह गला न घोट दे
दुर्जनो की दुर्जनता को वह प्रोत्साहन देने न लग जाय ।
स्वय अपनी आत्मा के अध पतन को न्यौता न दे दे ।

चिन्तन,
क्या बताऊँ तुझे ?
इस जीवन में परमात्मा के सिवाय और कुछ बनने जैसा नही है.... यदि
परमात्मा न ही बना जा सकता,
तो परमात्मा बनने के लक्ष्य के साथ संत तो ज़रूर बनो ।
परन्तु
सत्त्व की कमी के कारण अथवा सामर्थ्य के अभाव मे
संत कभी न बना जा सकता हो, तो आखिर, संसार में
दुर्जनता का शिकार न बना जाय,
इस विचार से इन्सान को सज्जन तो बनना ही रहा ।
यही मेरा स्पष्ट मन्तव्य ।
परमात्मा बनो,
सत बनो,
और यह भी न बना जा सके, तो आखिर सज्जन तो बनो । यदि सज्जनता के साथ
विशिष्ट कोटि की ताकत भी आपको मिली हो,
तो करोड़ो की सज्जनता को सलामत रखने के
लिये और दुर्जनो की दुर्जनता को परास्त करने के लिये
विशिष्ट कोटि के सब स्थानो पर आप बैठ ही जाओ,
आप ही बैठ जाओ ।

महाराज साहेब,

६८

आपने तो चित्र एकदम स्पष्ट कर दिया है ..
इच्छा न होते हुए भी
जैसे कई वास्तविकताये जीवन मे
अपनानी ही पडती है,
उसी प्रकार
तमाम महत्त्वपूर्ण ओहदो पर पुण्यवान सज्जनो को
स्थान ग्रहण करने की बात भी अपनानी है,
यही आप कहना चाहते है न ?
ऐसा मै समझा हूँ ।
सहज रूप से ही यदि सत्ताधीश
सज्जनो की सज्जनता को गौरव देते हो,
दुर्जनो की दुर्जनता को सजा देते हो,
प्रजाजनो के शील सदाचार की सुरक्षा करते हो,
जीवमात्र की रक्षा के लिए प्रयत्नशील बनते हो,
सबकी प्राथमिक आवश्यकताये पूरी करते हों,
तो राजनीति मे जाने जैसा है ही नही, परन्तु
यदि परिस्थिति इससे बिल्कुल विपरीत हो,
सज्जनता का तिरस्कार होता हो,
दुर्जनता को गौरव मिलता हो, निर्दोषो को सजा मिलती हो,
मूल्यो की खुले आम मजाक होती हो,
तो राजनीति मे सिर्फ घुसने जैसा ही नही,
तमाम महत्त्वपूर्ण ओहदो पर कब्जा भी जमाने जैसा ही है,
यह आपका स्पष्ट सूचन है, ऐसा मै समझा हूँ । मेरी यह समझ ठीक है न ?
चिन्तन,
तेरी समझ बराबर है । मै तो प्रभु महावीर का साधु हूँ ।
अनजान मे भी एक भी जीव की हिसा न हो जाय
अनजान मे भी झूठ न बोला जाय,
अनजान मे भी मालिक की अनुमति के बिना कोई चीज न ली जाय,

अब्रह्म का विचार तक मन को छू न जाय
प्राप्त हुई चीज़ो के प्रति आसक्ति का भाव पैदा न हो जाय,
ऐसे पाच-पांच महाव्रतो का पालन आजीवन करने के लिये
मै प्रतिज्ञाबद्ध हूँ।
राजनीति के साथ मुझे कुछ लेना-देना नही।
विकासशील देशो मे भारत का स्थान पहला आये या अन्तिम
इसके साथ मुझे कोई वास्ता नही।
इस देश मे निरक्षरता का सपूर्ण नाश हो या ह्रास हो,
इसके साथ मुझे कोई सवन्ध नही।
वजट प्रजालक्षी हो या नेतालक्षी, मुझे कुछ लेना-देना नही है
परन्तु आज जब मेरी भिक्षा मे आनेवाले द्रव्यो मे मछली के पावडर की मिलावट होने
की सभावना भी पैदा हुई है, धर्मादा खाता की
करोडो की सपत्ति कानून की एकाध कलम के जोर पर हडप ली जाय, ऐसी सभावना
आज जव नज़र के सामने दिख रही है
पूर्व के महापुरुषो द्वारा खून का पानी करके बनायी हुई
शील-सदाचार-नीतिमत्ता की भव्य संस्कृति के चीवर उतारने की
प्रतियोगिता आज जब शुरू हो गयी है.
कवूतर उड़ाने के दृश्यो के पीछे
अणुवम बनाने के कारखाने खोलने की साजिश
आज जब शुरू हो गयी है,
मूक व निर्दोष पशुओ के क्रूर कत्ल द्वारा खून की नदियाँ बहाने के लिये जव इस देश
के राजनेता कटिबद्ध बने है,
गर्भ मे रहे हुए करोडो शिशु इस धरती पर साँस ही न ले सके, ऐसे गर्भपात के
कत्लखाने खोलने मे सफल बननेवाली राज्य सरकारो को जव केन्द्र सरकार एवॉर्डो से
विभूषित करने के लिए तैयार हुई है,
तब भी अपनी मर्यादा मे रहकर मुझ जैसे सैकडों संत यदि पुण्यवान सज्जनो
को राजनीति मे धकेलने के लिये आंदोलन न चलाये,
तो चिन्तन ! तेरी डायरी में लिख ले कि इस देश के
प्रजाजनों की मानसिक स्थिति हिटलर के गेस चेवर मे
जलकर भस्म हुए यहूदियों से बिल्कुल अच्छी नही होगी।

महाराज साहेब,

६१

आपके पिछले पत्र ने
मुझे विचार मे डाल दिया है ।
अब तो शायद ऐसा अनुमान करने का
मन हो जाता है कि अब इस परिस्थिति मे
बिल्कुल सुधार शक्य नही ।
महाभारत के भयकर युद्ध मे
भीष्म पितामह के ठडे रूख का योगदान
भी जैसे कम नही था
उसी प्रकार
मूल्यह्रासके कनिष्ठ दर्जे पर आ खड़ी आज की राजनीति मे पुण्यवान सज्जनो के ठंडे रूख का योगदान भी कम तो नही ।
आपकी इस बात के साथ हर किसीको सहमत होना ही पडेगा
इसमे दो राय नही ।
यह पत्रव्यवहार जब अब अन्तिम दौर पर आ गया है, तब आपसे मै यही मागता हूँ कि
आप मुझे ऐसे शुभ आशीर्वाद दीजिये कि आपकी शुभकामना को अमल मे
लाने का सत्त्व व सामर्थ्य मुझमे सदा बना रहे ।

चिन्तन,

मेरे आशीर्वाद तो तेरे साथ है ही, परन्तु
एक गभीर भयस्थान की ओर तेरा ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ ।
भले भले बुद्धिमानो व आदर्शवादियो के
आदर्शो की राख कर दे, ऐसा क्षेत्र है-राजनीति का ।
वहाँ कौन-सी गदगी नही, यह सवाल है ।
कितनी लॉबियो की राजनीति पर पकड है,
इसकी कल्पना शायद तुझे नही ।
वहाँ मासलॉबी है,
तो वेश्यालॉबी भी है .
गुडालॉबी है, तो डाकूलॉबी भी है
व्यापार लॉबी है, तो ग्राहकलॉबी भी है

चोरलॉबी है, तो खूनीलॉबी भी है।
इनमें से एक भी लॉबी में न तो तुझे शामिल होना है
और न ही इनमें से एक भी लॉबी के अधीन तुझे बनना है। इन दोनों विकल्पों में से
स्वयं को बचाना कितना कठिन है,
इसका पता तो जब शायद तू इस क्षेत्र में पहुँचेगा, तभी चलेगा
वर्तमान दुनिया में एक सूत्र खूब प्रचलित है
'प्रत्येक इन्सान की कुछ न कुछ कीमत होती है-
क्या तू इसका अर्थ समझता है ?
५०० रु. में कोई न खरीदा जा सके, तो
आखिर उसे ५००० रु में खरीदो
५००० रु में न खरीदा जा सके, तो
आखिर उसे ५,००,००० रु. में खरीदो..
और ५,००,००० में न खरीदा जा सके, तो
आखिर उसे ५०,००,००० में भी खरीदो परन्तु खरीदकर ही दम लो।
संक्षेप में, कीमत बढ़ाते जाओ
इन्सान कभी न कभी तो खरीदा जायेगा ही।'
चिन्तन,
तेरे स्वयं के लिये तुझे यह सूत्र गलत ठहराना है।
मैं तुझे स्पष्ट कह देता हूँ कि जिस पल तुझे लगे कि
स्थान टिकाये रखने के लिये
इन दो विकल्पों में से तुझे एक विकल्प तो स्वीकारना ही पड़ेगा,
तो उसी पल मर्दानगी के साथ वह स्थान छोड़ने को तैयार हो जाना।
गाली तो फिर भी शायद अच्छे शब्दों में दी जा सकती है,
परन्तु प्रेम-भरा संबोधन तो बुरे शब्दों में हो ही नहीं सकता।
बस, यही न्याय यहाँ भी लगा देना।
साधनशुद्धि के मामले में ही ली गयी छूट
शायद थोड़े समय के लिये लाभ भी पहुँचा दे,
परन्तु लंबे समय के लिये, ठोस लाभ
पाने के लिये तो साधनशुद्धि को पकड़े रखने के सिवाय
अन्य कोई विकल्प ही नहीं।

महाराज साहेब,

पत्र मे आप द्वारा किये गये सूचन
को खूब गभीरता से मन पर लूँगा
और तो इस वक्त मै आपसे क्या कहूँ ?
मेरे पास आज ऐसी
कोई विशिष्ट कोटि की सत्ता नही है
राजनीति के छल-प्रपचो की
मुझे कोई खास जानकारी नही,
परन्तु इतने लबे पत्र-व्यवहार के बाद
मै आपको एक बात तो छाती ठोककर कह सकता हूँ
कि परिस्थिति की भयकरता को मै बराबर समझ गया हूँ।
पुण्यवान सज्जनो मे छूपी हुई परिस्थिति को पलटने की
प्रचंड ताकत को मैं बराबर समझ गया हूँ।
दुर्जनो की ताकत सज्जनो की निष्क्रियता पर ही अवलंबित है,
यह वास्तविकता भी मेरे ख्याल मे आ चुकी है।
अब मै प्रत्येक कदम खूब सोच-समझकर उठाऊँगा।
मै दुर्जनता का शिकार नही बनूँगा
और साथ ही साथ मेरी सज्जनता को तनिक भी आँच न आने दूँगा। अब आपसे यही विनति है कि आप मुझ पर ऐसे आशिष बरसाये कि मेरे इस सकल्प मे मुझे सतत सफलता मिलती ही रहे।

चिन्तन,

अब मेरी आखरी सलाह ध्यान देकर सुन
कबूतर जैसा निर्दोष हृदय
चील जैसी तेज नजर
साबर जैसे तेज पॉव
हिरण जैसे तेज कान.
हाथी जैसी ठडी चाल
सियार जैसा सतर्क मन
सिह जैसा पराक्रमी शरीर. यदि इन सब तत्त्वो का सगम तेरे जीवन मे होगा, तो तेरे

द्वारा जिन चमत्कारो का सर्जन होगा, उन्हे इतिहास याद करेगा ही ।
तेरे पास शुद्ध प्रज्ञा है,
इसीलिये इस सपूर्ण पत्रव्यवहार मे बतायी गयी बातो
को समझने मे तू मार नही खायेगा इसकी मुझे पूर्ण श्रद्धा है ।
मेरा इशारा सज्जनता की तरफ है और
सज्जनता को वचा लेने की तरफ है ।
तू सज्जन बना रहे और अनेको की सज्जनता वचाता रहे,
वस, इसी हद तक मुझे इस विषय मे दिलचस्पी है
इस देश मे पूर्व के काल मे ऐसे सैकडो राजा हुए है,
जिन्होंने प्रजा की सज्जनता को टिकाये रखने मे
गजब की सफलता तो हासिल की ही है, परन्तु समय आने
पर अपनी सज्जनता को सतत्व मे भी वदला है ।
अर्थात् स्वय सज्जन रहे,
प्रजाजनो को सज्जन बनाया और
अन्त मे स्वयं सज्जन मे से सत वन गये ।
मै तो तेरे लिए भी यही आशा रखकर बैठा हूँ ।
यदि तेरी शक्ति हो, तो अभी ही सत वनने के मार्ग पर चला आ ।
परन्तु आज यदि यह शक्ति तुझमें न हो, तो
इस मार्ग पर आने का आदर्श तो अभी से मन मे वसा लेना ।
दुर्जनता फटे हुए दूध जैसी बेस्वाद है, तो
सज्जनता चीनीवाले दूध जैसी स्वादिष्ट है ।
संतत्व केशरिया दूध जैसा अति स्वादिष्ट है,
और परमात्मत्व माता जैसा उपमातीत है ।

चिन्तन,

बिदाई की इन घडियो मे परमात्मा से एक ही प्रार्थना करता हूँ कि सिर्फ मै या तू ही
नही, हम सब ऐसा सुन्दर जीवन जीये कि जिस जीवन मे क्रूरता को स्थान न हो,
कठोरता को स्थान न हो, छलप्रपच व सक्लेश को स्थान न हो,
स्थान मिले सिर्फ सरलता, सौजन्यता,
सहृदयता व परम विशुद्धि को । और इन सब सद्गुणो के द्वारा
हम सब जल्दी से जल्दी बन जाये परमात्मा !

आपको रत्नत्रयी ट्रस्ट के आधारस्थंभ बनाते हुए हम गौरव महेसुस कर रहे है।

- ❖ संघवी लहेरीबहन मोडीलाल शाह परिवार –सायरावाला (हाल सुरत)
  ह चन्दुभाई, शोभाबहेन, श्वेता, खुश्बु, विपुल
- ❖ पू. सा श्री अनतकीर्तिश्रीजी म सा की शुभ प्रेरणा से
  अ. सौ सुशीलाबहन शातीलालजी शेठिया
  ह : संजय–सुनीता, भुवनेश, रिशिता – बीकानेर
- ❖ पू मुनिराज श्री वात्सल्यसुदरविजयजी महाराज की प्रेरणा से
  जशुबेन बीपीनचन्द्र शाह – नदुरबार – हाल सुरत
  ह . डॉ सजय ● प्रीति ● सुनीष ● श्रद्धा ○ भाविक ○ नैतिक ब मेघ
- ❖ प पू. नदीश्वरविजयजी म सा के सयमजीवन के
  अनुमोदनार्थ तथा स्व इन्दरचन्दजी राका की पावन स्मृतिमे
  ह · धापुबहन ● सुशीलाबहन ○ अजय ○ अतुल ○ अपना
  ● अपूर्वा एवं समस्त राका परिवार – जलगॉव
- ❖ देवीचन्दजी मोतीलालजी छोरिया – जलगाँव
- ❖ रतनलाल सी बाफना फाउन्डेशन ट्रस्ट – जलगाँव
- ❖ जैन परिवार (वालोद) – जलगाँव
  ह · सौ ताराबाई शिवराज जैन ● प्रवीण शशिकांत जैन
- ❖ स्व रुपचदजी रामलालजी ललवाणी की पावन स्मृति मे
  शातिलाल, सौ काचनदेवी, मुकेश, राजेश, अजय, निलेश
  एवं ललवाणी परीवार, महावीर ज्वेलर्स – जलगाँव
- ❖ पू आ श्री रत्नसुदरसूरीश्वरजी म सा. को मध्य प्रदेश राज्य–अतिथि के सन्मान प्राप्ति की खुशी में पू.सा श्री सवेगनिधिश्रीजी म की प्रेरणा से
  अनिलकुमार बेला दोशी – इन्दौर
- ❖ श्रीमती ललिताबहन हिम्मतभाई गाधी परिवार
  ह . कल्पक–पिंकी, पंकज–सगीता, आशा–छाया – इन्दौर
- ❖ श्रीमती निर्मलादेवी चपतराजजी दोशी परिवार
  ह . अनिल–बेला, खुश्बू, ऋषभ – इन्दौर
- ❖ श्रीमती मोहिनीदेवी अशोककुमारजी भाडावत परिवार
  ह : राजीव, कविता, कृतिका – इन्दौर

सैकडों हाथों व हज़ारों आँखों तक पहुँचनेवाले
इस साहित्य को हमें हज़ारों हाथों व लाखों आँखों तक
पहुंचाना है, आवश्यकता है आपके औदार्य भरे सहयोग की !

पू. आ.भ. श्रीमद् विजय रत्नसुन्दरसूरीश्वरजी महाराज के वरद हस्तों से लिखे गये साहित्य को लोकमानस की ओर से जो प्रचंड प्रतिसाद मिल रहा हैं, उससे हमें गौरव की अनुभूति हो रही है।

इस साहित्य को हमें और भी अधिक फैलाना है और इसके द्वारा हमें अनेकों के जीवनदीपक में उत्साह का तेल भरने का मंगल कार्य करना है। यदि इस कार्य में आप सद्भागी बनना चाहते हों, तो हमने एक योजना बनायी है।

रु. ११,००० का दान देकर आप रत्नत्रयी ट्रस्ट में 'श्रुतप्रेरक' के रुप में शामिल हो सकते हैं और रु. ५,००० का दान देकर आप 'श्रुतप्रेमी' बन सकते हैं। सहयोग आपका व उत्साह में वृद्धि हमारी !

श्रुतप्रेरक

- छगनलाल ओटमलजी – कालन्द्री – अमदावाद
- ललिताबेन हिम्मतभाई गांधी
  ह : छाया, कल्पक, पंकज – इन्दौर
- श्रीमती उम्मेदकुमारी नन्दलालजी लुनिया
  ह : डॉ. वसन्तकुमार, मधु, प्रियंका, चैतन्य – इन्दौर
- स्व. प्रीतेश (सोनू) की पुण्यस्मृति में
  ह : मंगलादेवी पारसकुमार चोरडिया – इन्दौर
- सौ. मंजु सुभाषचंदजी दुगड
  ह : रेणु, सीमा, सोनु – कलकत्ता
- पू. माता–पिता उकारलालजी – यशोदादेवी तोतलाकी पुण्यस्मृति में-
  ह : जगदीश प्रसाद तोतला – दिल्ली

श्रुतप्रेरक

- ❖ पू. साध्वीजी श्री सुकृतनिधिश्री के संयम जीवन की अनुमोदनार्थ
  ह : तिलोकचन्दजी ताराजी राठोड परिवार – चेन्नई – कोल्हापुर
- ❖ पू. साध्वीजी श्री औचित्यनिधिश्री के संयम जीवन की अनुमोदनार्थ
  ह : सुकीबाई खुशालचन्दजी बोनावत परिवार – चेन्नई
- ❖ सुरेन्द्र चंपालालजी लोढा – जलगाँव
- ❖ श्रीमती कंचनबाई धरमचंद बोथरा
  ह विनोद धरमचंद बोथरा – जलगाँव
- ❖ पू पं.श्री पद्मसुंदर वि.म. की प्रेरणा से
  स्वर्गीय श्री विमलचन्द सुराणा की स्मृति में
  ह : सुराणा परिवार – इन्दौर
- ❖ वेदांत सिंधवी ● आशी सिंधवी – इन्दौर
- ❖ श्रीमती सुशीलाबेन पुनमचन्दजी लुनिया – इन्दौर
- ❖ श्रीमती प्रेमलताबहन की मासक्षमण तप की अनुमोदनार्थे
  श्री जिनेन्द्रकुमार मानावत परिवार – इन्दौर
- ❖ श्रीमती कमलाबहन समरथमलजी पोरवाल,
  ह : संतोष, ग्रीन पार्क – इन्दौर
- ❖ श्री मनुभाई शाह परिवार (चाय वाले)
  ह : भरत, राजेश, हरेश, मनीष – इन्दौर
- ❖ हुकमीचन्द नैनसुख लुक्कड
  विश्वास लुक्कड ज्वेलर्स – जलगॉव
- ❖ पू. पं. श्री पद्मसुंदर वि.म. की प्रेरणा से
  रतलाम – नागेश्वर संघ की मिली हुई अनुमति की खुशाली में
  मोहनबेन हीरालालजी चण्डालिया परिवार – रतलाम
- ❖ विशाल कुमार सुराना – उज्जैन
  अमिता विशालकुमार सुराना
  प्रेरणा आचार्य श्री की पुस्तक पढके ह. दिव्य, ऐशु – उज्जैन

श्रुतप्रेमी

- ❖ पू. साध्वीजी श्री संवेगनिधिश्रीजी म. की प्रेरणा से
  श्रेयांस विनोदकुमार कोठारी – अमलनेर
- ❖ सदगुणा वहेन की स्मृति में सतीषकुमार विनोदकुमार शराफ – नासिक
- ❖ श्रीमती इन्दिराबहेन रसिकलाल महेता
  ह. जिज्ञेश, एकता, अभिषेक, धन्य – इन्दौर
- ❖ स्निग्धा आशिष कांकरीया – जलगाँव
- ❖ रसीलावहेन कमलेशकुमार दोशी
  ह. दीपेश, नयन, अर्चना, शेफाली, रीटा – इन्दौर
- ❖ नरेन्द्र इन्दादेवी राका ह. अनिल, राजेश – इन्दौर
- ❖ पीताम्वर अर्जुनदास जादवानी की स्मृति में
  ह. मनोहर ● धनराज ● राम जादवानी – भुसावल
- ❖ स्व. शांतावेन वीरचंद शाह
  ह. चेतनभाई, चन्दुभाई, नाथाभाई – इन्दौर
- ❖ श्रीमती मीना संतोष पोरवाल, ग्रीनपार्क–इन्दौर
  ह. पायल ● शालिनी ● गजल
- ❖ एक सद्गृहस्थ – इन्दौर
- ❖ मातुश्री कुंवरवाई शामजीभाई कामानी
  ह. सिद्धार्थ दिनेश कामानी – इन्दौर
- ❖ श्री भूपेन्द्रकुमार हुकमीचन्दजी मंडलेचा
  सौनी परिवार – महिदपुर (सिटी)
- ❖ सुन्दरवाई चान्दमलजी गांधी
  माता–पिता की स्मृति में गांधी परिवार – रतलाम
- ❖ पू.सा. श्री राजरत्नाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से
  पू.सा. श्री वैराग्यनिधिश्रीजी म.सा. के श्रेणितप की अनुमोदनार्थ
  ह. सुदर्शनावेन ● नयनावेन ● स्मितावेनकी ओर से

(चेक, ड्राफ्ट अथवा रोकड़े निम्नलिखित पते पर भेजियेगा।)

रत्नत्रयी ट्रस्ट
कल्पेश वि. शाह
१४, इलोरापार्क सोसायटी,
नारणपुरा चार रस्ता के पास,
देरासर के सामने, नारणपुरा,
अहमदाबाद – ३८० ०१३
फोन : २७६८०७४६, २७५४०२९७
(दोपहर : १२ से ७)
E-mail rttamd@eth net

रत्नत्रयी ट्रस्ट
प्रवीणकुमार दोशी
२५८, गांधी गली,
स्वदेशी मार्केट,
कालवादेवी रोड,
मुवई – ४०० ००२
फोन : २२०६०८२६
(दोपहर : १२ से ७)